प्रकाशक
राजस्थानी साहित्य परिषद्
४, जगमोहन मल्लिक लेन
कलकत्ता

संस्करण प्रथम
वि० स० २०२० (शक १८८५, सन् १९६३)

मोल रु० ३) ५०

मुद्रक
श्री साधना प्रेस
रतनगढ़ (राजस्थान)

तालिका

ांरी वस्तु भेट, थांनै है वल्लभ प्रभु
है तो आ अळसेट, लाज तिहारै बिड़द री

प्रक सकीय

आज सूं कोई पन्द्रै बरसां पैली राजस्थानी भासा अर साहित रै प्रचार-प्रसार सारू राजस्थानी साहित्य परिषद् री कळकत्तै में थापना हुयी। पछै 'राजस्थानी' ग्रन्थमाळा तथा 'राजस्थानी कहावतां' रा दो भाग परिषद प्रकासित करचा।

बिचाळै-सी'क गतिसीलता कम पड़गी। अबार लारलै दिनां जद भारत रा नामी सोध-विद्वान श्री अगरचन्दजी नाहटा कळकत्तै पधारिया तो सेठ श्री सोहनलालजी दूगड़ री अध्यक्षता मे परिषद री एक सभा हुयी।

राजस्थानी साहित्य रो परिचय देंवते श्री नाहटाजी जोरदार सबदां में अपील करी कै जे आपां राजस्थान री संस्कृति नै कायम राखो चावां हां, तो आपां रो सगळां सू पैलो फरज औ है कै आपां मायड़भासा-राजस्थानी नै पनपावां। जित्तै तांई राजस्थानी भारत री बीजी मानीती भासावां री गिणती में नईं आसी, मायड़ भासा रा प्रेमी ख सू सांस नईं ले सकसी।

श्री अगरचन्दजी बतायो कै आधुनिक राजस्थानी ग्रन्थां रो तेजी सूं प्रकासन हुय रैयो है, अर जरूरत इण बात री है कै श्रेष्ठ ग्रंथां नै बेगै सू बेगा प्रकास में लाया जावै ताकि लेखकां री कलम रै काठ नईं लागै, अर बै मां-राजस्थानी रै भंडार नै बराबर भरता रैवै। जरूरत आ भी है कै पाठक आं ग्रथां नै आपरा द रा समझ'र अप ावै, खरीदै अर पढै।

नाहटाजी रै भासण सूं श्री दूगड़जी घणा प्रभावित हुया अर उणी बगत बां राजस्थानी ग्रंथां रै प्रकास सारू ५०००) रुपिया

प्रदान करचा अर भविष्य में भी पूरो सहयोग देवण रो आश्वासन दियो। वै रकम सूं पैली पोथी श्रीलालजी जोशी री 'सवड़का' नांव री छपाई जा चुकी है।

श्री मुरलीधरजी व्यास रो ग्रन्थ 'इक्कैवाळो' इण रकम सूं प्रकासित हुवण आळी दूजी क्रिती है। 'इक्कैवाळो' खासतौर सूं हास्यरस री पोथी है। हास्यरस रो हाल हिन्दी मे भी अभाव है, इण कारण परिषद नै इण बात रो पूरो भरोसो है कै व्यासजी री आ रचना राजस्थानी समाज तो घणै चाव अर कोड सूं पढ़सी ई, पण राजस्थानी सूं नैड़ी बीजी भासावां, (हिन्दी, गुजराती पंजाबी, आदि), बोलणियां लोकां नै भी दाय आसी।

'इक्कैवाळो' पछै अेक और सोवणी पोथी पाठकां री सेवा में परिषद हाजर करसी 'इतरा दै किरतार' राजस्थानी रा प्रसिद्ध विद्वान श्री भूपतिरामजी साकरिया एम. ए., बी. एड. प्रोफेसर, वी. पी. विज्ञान महाविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर रै सम्पादन नै शब्दार्थ-भावार्थ (राजस्थानी और हिन्दी दोनू) सहित लोक-संस्कृति रा जीता-जागता कटाक्ष और व्यंग्यपूर्ण ५१ चन्द्रायणां रो अनूठो राजस्थानी लोक-काव्य।

परिषद रो उद्देश्य राजस्थानी भासा रो प्रचार मात्र है, इणी कारण प्रकासणां रो मोल कम-सूं-कम राख्यो गयो है। आसा है कै राजस्थानी पाठक आं प्रकासणां रो घणो आदर करसी अर बीजी पोथ्यां प्रकासित करण सारू परिषद नै प्रोत्साहित करसी।

भँवरलाल नाहटा
मंत्री
राजस्थानी साहित्य परिषद्
कलकत्ता

भूमिका

राजस्थानी भाषा रो प्राचीन साहित्य घणो विस्तृत तथा साथै ई महिमामय भी । देश-विदेश रा अनेक विद्वानां इ री मुक्तकंठ सूं सराहना करी है अर ज्यूं ज्यूं राजस्थानी साहित्य सा ी प्रकाशित होवै है या सराहना बढ़ती ई जावै है। पद्य के समान ई प्राचीन राजस्थानी गद्य भी घणो विकसित तथा महत्वपूर्ण है। इण वर्षां मांय राजस्थानी भाषा री पद्यात्मक तो अनेक रचनावां सामनै आई है पण राजस्थानी गद्य री चीजां भोत ई कम बण पाई है। धीरां धीरा विद्वानां रो ध्यान इण दिशा री ओर भी जाय रयो है. या आनन्द री बात ।

श्री मुरलीधर व्यास राजस्थानी गद्य रा लप्योड़ा अर मंज्योड़ा लेखक है। प री 'बरसगांठ' नाम रो संग्रह साहित्य जगत् में घणो नाम पायो है। उणी नाम रै सरूप-सारू आप रो नयो संग्रह 'इ ै वाळो' प्रकाश मांय आयो है। इण संग्रह ंय आप री छोटी-बड़ी ७२ रचनावां दी गई है। सम्पूर्ण रचनावां रो विषय हास्यरस है। संग्रह रो नांव ई हास्यपूर्ण राख्यो गयो है। इणी भांत सूं अनेक रचनावां रा शीर्षक भी कम हास्यपूर्ण कोनी खाऊपीर, कळदूट बाबो, हाजरियो, जीब-जोधां री ज ट, सूम रै घरै घूम, डौढ़ सैणो, गुरु घंट , जींवतो भूत आदि।

हास्यरस रै संचार मांय घटना रै साथै ई शब्द- ोग रो ध्यान

राखणो भी आवश्यक है। शब्दां रै समुचित प्रयोग सूं तो मानों हास्य रस टपक्यो पडण लागै। संग्रह री रचनावां रा पात्र तथा वातावरण राजस्थानी है। अठै रै वातावरण रो हास्यरसात्मक चित्रण भी स्वाभाविक रूप सूं राजस्थानी मांय ही बण सकै है। लेखक आपरी रचनावां मांय बोलचाल री राजस्थानी रो प्रयोग कर कै सुन्दर काम करयो है। इसी भाषा हास्य रस रै संचार मांय घणी उपयोगी है। श्री व्यासजी री भाषा मांय बीकानेरी-रंगत ओपै। स्थान स्थान पर मुहावरां तथा कहावतां सूं इण री सजावट भी आछी करी गई है। या आपरी शैली री एक सराहना-जोग खूबी है। कथोपकथन नै स्वाभाविकता अर चुस्ती देवण मांय भी आप घणा प्रवीण है।

हास्यरस री चीज चित नै हळको करै अर चिंता रो भार उतारै। इण कारण या शरीर नै भी घणो लाभ देवै। समय नै सरस बणावण रो यो एक सुन्दर साधन है। पण अन्य रसां पर कलम चलावणो इतरो कठन कोनी जितरो हास्यरस री रचना तैयार करणो। दूसरै लोगां नै हंसावणो अर वो भी शिष्टता रो पूरो ध्यान राखतां थकां यो काम आसान कोनी। यो ई कारण है कै देश-विदेश रा विद्वानां मांय हास्यरस री महत्ता सदा सूं स्वीकार करी गई है अर इण विषय पर गहरी सैद्धान्तिक छाणबीण होई है। इण छाण-बीण रै फळ-सरूप अनेक नियम बण्या है अर हास्य रा भेद प्रभेद परगट होया है।

संस्कृत साहित्य शास्त्र मांय हास्य रा ६ भेद मान्या गया है—स्मित, हसित, विहसित, उपहसित, अपहसित तथा अतिहसित। इण

मांय सूं प्रथम दो 'स्मित' अर 'हसित' म हास्य री गिणती मांय आवै है तथा बीच रा दो 'विहसित' अर 'उपहसित' मध्यम मान्या गया है। अत रा दो 'अपहसित' अर 'अतिहसित' निम्न कोटि रा है। स्मित रूप सर्वश्रेष्ठ है। गालां पर थोड़ी सळ ं, आंख्यां थोड़ी खिल ज्यावै, निचलो होट जरा सो हालै, दांत परगट नहीं होवै, नजर जरा तिरछी होय ज्यावै अर वदन पर मधुरता आवै, यो स्मित हास्य है। 'मुळकणो' इण रो ई नांव है, जि रो राजस्थानी बोल चाल मांय घणो महत्व है। अंग्रेजी रो 'हास्य' (Humour) संस्कृत रै स्मित सूं घणी समानता र ै है। उण मांय बौद्धिकता रो अंश पर्याप्त रैवै। ए० निकाल रो कथन इण सम्बन्ध में ध्यान में राखण जोग है- 'If insesibility is demanded for pure laughter, sensibility is rendered necessary for true humour. (An Introdyction to Dramatic theory.)

प्रस्तुत पुस्तक मांय स्मित हास्य रो घणो न्दर प्रयोग है। पाठक बांचतां बाचतां अनेक स्थानां पर मुळकसी अर सागै ही विचारशीलता भी परगट होसी। नमूना देखोः—

(१)

एक हो बडो सैर, जिण में एक खानदानी सेठ रैवै। खानदान रै जसरी जबरी जूनी पूजी रै परबार बैरै खनै धन रै नांव ऊपर फगत आवरी अर कुटबियां री देह ही।

(ऊंधी पायली, पृ० ८)

(२)

सेठजी राम सूं मिळियोड़ा हा तौ नोकर-चाकर सूरज रै वार कर सात फेरा खायोडा हा। बै घणी सैणप वघारता तौ नोकर वारां ई कान कतर लेंवता।

(खाऊ पीर, पृ० २६)

(३)

इयां ई म्हारै आयलै मोडूराम नै घडती वेळा क्या जाणै बिधाता जाण-बूझ'र अर । जाणै भूल-भरम सू वैरै दाढ़ी-मूछां चेपणी भूलग्या।

(मिनख माईजी, पृ० ३८)

(४)

मालम हुवै है कै नारायण इणां री दुख री पुकार सुण'र ई चोरां नै इयां री हवेली मे भेजिया। मोटी हवेली देख'र चोरां बिचार कियौ कै इण में सोकळौ धन बूरियोडौ होसी। डोकरयां खोद खोद'र खावै है। नही तौ काम कियां चकै है।

(चोर री चोरी, पृ० ४४)

(५)

घर हौ सहूकार रै पाड़ोस में। सगळां रै जीमण रा नैता आवै। अै भाई लंगोट रैवै। पचास नै जीमावण री सरधा होवै जिकी इयां पांचै नै नैतै। कूण चलाय'र करम में आठौ बावै! कूण ताव नै तेड़ौ जावै! लाइ सरवर री पैड़ी माथै ऊभा, तौ ई तिसा!!

(सूम रै-घरै धूम, पृ० १२८)

लोगां रो चेहरो-मोहरो तथा पहराव भी हास्यजनक कम कोनी होवै। इसै लोगा रो बणाव देखतां ही हांसी आवै अर ये घणां दिनां आंख्या सूं ओभल कोनी होवै। हास्यरस रै लेखक री या चतराई है कै इमा चित्राम आपकी रचना में उतार लेवै अर पाठकां नै एक स्थायी मनोरंजन री चीज देवै। प्रस्तुत पुस्तक माय इसा चित्राम अनेक स्थानां पर परगट होया है। थोड़ा सा नमूना देखोः—

(१)

तौ म्हांरौ कोळी भगत बाबौ सुखराम दिन चढियां, उदर-पूरणा वास्तै, बीजां नै पुन्न-धरम अर जस रौ लाभ करावण सारू, मूंडै माथै कूकू-चनण रा मांडणा मांड'र एक गिळातडी मार बैरै नीचै दोनू खानी दो झोल्यां लटकाय'र एक हाथ में इकतारौ अर बीजै में खड़ताळ लियां, नितरै सेंधै-पगां लागोडै मारगां ऊपर बिचर जावतौ।

(साधू-सेवा, पृ० ४६-४७)

(२)

म्हांरा बिधाता ई .ते-घडते एक दिन थक'र चूर हुयग्या। तौ ई बारै खनै मोकळौ वडौ पिंड बाकी बचग्यौ। उथप'र बां बैरी एक मोटी सी काया घड नाखी। सोचियौ, संसार में एक पसवाड़ै एक सूंड-पूंछ बापरौ नर-हाथी ई पड़ियौ रैसी। म्हांरा सेठ घासीराम उणी पिंड सूं घडीजिया हा हालण चालण रै फोड़ै री बात तौ छोडौ, लाई नै सांस लेवण मे ई ताण पड़तौ हो।

(नर-हाथी, पृ० ६१)

(३)

डीघो सरीर, पक्को रंग, धौळा धप्प केस, तुरुस तुक्की दाडकळी माथै ऊपर हाथ भर लंबो टोपलो, गोडा सूं नीचो मैलो भगवो चोळो, पगा मे कारचा लागयोड़ा देशी जाडा जूत गळै मे लम्बी बडी मिणिया-वाळी माळा, लिलाड माथै रुपियै जित्तो गोळ संदूर रो मींडो, एक हाथ मे खांधै साहनी डांगडी अर बीजै मे बीरखो ।

(बाबो राघोदास, पृ० ६६)

(४)

एक खूणै में एक माडो मुड़दो इक्को, मुड़दै ठिगणै टट्टू री पीठ ऊपर सेलियोडो ऊभो हो, जिको आपरी ऊमर रै दिनां नै ओछा कर रैयो हो । खनैई इक्कैवान ऊभो हो, जिकै नै एक निजर सूं देखणै सूं मालम पड़ती ही कै ओई इक्कैरै अतकाळ ताई इयै संसार सूं कूच कर जासी । गिरियां सूं ऊंचो-ऊंचो पजामो, पगै उभराणो, फाटो मैलो गुंज्यां बायरो बडो, छाती खुल्ली जिण माथै सपेती चमकै माथै ऊपर तुरकी टोपी जिणरी नळी ऊंची उठियोड़ी पण फुंदो नदारद ।

(इक्कैवाळो, पृ० २३३)

वर्णन री शैली भी कम हास्यमयी कोनी होवै । सफल रचनाकार आप री शैली सूं साधारण सी बात नै भी हास्यरस सूं भरी पूरी बणाय देवै । वो आप री वाक्यरचना मांय इसा गजब रा प्रयोग करै कै पाठक बाचतां ई हांसण लागै । शैली री या खूबी प्रस्तुत पुस्तक मांय सर्वत्र व्याप्त मिलसी । थोड़ा सा नमूना देखो:—

(१)

उलूक-वाहनी किरपा कर'र, आपरै हन नै ँ ई छोडगी ही जिकी रात री टेम सेठ री खलर हवेली माथै सांती सूं बैठौ करकस वाणी सू बैनै सबदायमान कर रयौ हो।

(ऊधी पायली, पृ० ८)

(२)

मुंसीजी रै घरै च्यांय म्यांय तो घणी ही, प चुग्गौ थोड़ौ हो। नव रौ लाभ, तेरै रो खरच।

(कमायौ रौ सिद्धमंतर, पृ० २८)

(३)

बावै मूडौ खोलियौ, अठीनै तंबूरी रा अणमेल र तौ उठीनै फाटोड़ै बांस दाई बावै रो कंठ! दोयां रै मेळ सू अपूरब समौ बणग्यौ। सुर सै परभाव सूं पखेरू उडग्या, कुत्ताभूकण लागग्या।

(कळदूट बाबौ, पृ० ३७)

(४)

इयां होंवतै थकां ई, हा लाई सगळै बिस बायरा सरप। कोरी जीबां री लपालपी ही। अर ही थूक बिलोवणी। सगळै भसणिया हा, खावणियो एक ई को हो नी।

(जीब-जोधां री जमघट, पृ० ७६)

(५)

ज्यों बलधां-गाडी नै बांग सूं बा सोरी-सोरी च ँ अर बैरी ऊंबर बधै, इयां ई सीयाळै में काया नै बांगण ँ बैरी खौ बधै अर वा सोरी चालै।

(न्यायौ काळजौ, पृ० १०४)

(६)

हमैं तौ पांचूं भाई इसा हरखिया कै मत पूछो बात ! लागा थाळी भर-भर खीर गटकण । नांखता गया ऊंडां कूंवा मे ! खोल दिया सगळा ओरा-गूंभारिया ।

(सूम रै घरै धूम, पृ० १२६)

(७)

रामलै री भतीजी ही सुकराचारज । काकै वैनै चौपरणी करण सारू घणी ई चेस्टा करी पण बात पार को पडीनी ।

× × ×

अबै सुणो गिगलै री बात । वेमाता वैरै कान मे फूंक दियी ही कै बेटा थारै जिसी अकल कई मे कायनी । इयै रै ही भतीजी, रूप मे तवै री ऊंधी पासी । एक ई टाग सूं ऊभी होय'र पति पावण सारू तप करती !!

(ब्यांव, पृ० १४१)

(८)

ौ हुवै, लाई घरमारथ दवाईखानै वाळै वैदजी री, जिकां री दवाई सूं घणखरी वायु नीचलै बारणै सूं निकळ'र अकास मे जाय मिली । पण सागै ई बध खुलग्या ।

(डौढ़ सैणो, पृ० १५०)

(९)

विरमाजी रौ कारखानौ तौ जोरां सूं ई चलतौ रैवै है ! कदेई मौळ को आवैनी ! खटाखट खोपड़्यां घड़ीज रैयी ही ! एक जणौ फटा । मो'र लगाय रयौ हौ– 'अटपटौ', 'खटपटौ', 'अभागियौ', 'सभागियौ', 'सैणो', 'अैणौ' अर 'डौढ सैणौ' ।

(गुरु घटाळ, पृ० १७५)

(१०)

तौ इणी तरै री एक कोरै काळजै रौ बिरामण एक नगर में रैंवतौ हौ। हौ घणौ जीवट वाळौ पण जमा रै नांव पर खवै मीडी ही।

(भूत री भाई जमदूत, पृ० २०१)

(११)

'हरियो' अर 'दड़ियौ' आपरै नांव सू ओळखीजता हा। भोर मे जद आ जोडी भाग री आराधना मे वगीची खानी छिटकती तौ सैनां सूं आगळी उठाय'र देखणिया हौळै-हौळै कंवता— 'राम मिळायौ जोड़ौ, एक काणौ एक खोड़ौ।'

(मिरतु टैक्स, पृ० २४८)

हास्यरस री अवतारणां माय 'प्रत्युत्पन्नमतित्व' अर्थात् 'हाजरजबावी' रो भी वडो महत्व है। एक आदमी री बात सुण कर दूसरो आदमी तत्काल इसो जबाब देवै कै सुणणियो चुप रह जावै अर पूठो जबाब कोनी उपजै, तो या चीज घणी मनोरंजक बणै। बीरबळ में यो गुण भोत बडो हो। इणी कारण बीरबळ री ख्याती है। प्रस्तुत पुस्तक मांय सूं थोड़ा सा हाजर जबाबी रा नमूना अठै दिया जावै है। इणां मांय 'वचन विदग्धता (wit) रो सुन्दर रूप है:—

(१)

"जणै थांरै विचार सगळै खाऊ पीर है! एक ई टळियोड़ौ कोयनी।"

"नही, खाली एक ई ज टळियोड़ौ है।'

"वो, पछै कुण है ?"

"वो है लाई साळगरामजी ! जित्तो भोग धरसो, उत्तो पड़ियो लाधसो ! एक कण ई को खावैनी !!

(खाऊ पोर, पृ० ७७)

(२)

चोर घर में छळ-छंद जाण'र नाठा जीव लेय'र ! हड़वड़ाय'र भागा पिछोड़ैखानी । वठै हो ढक्कणै बायरो लगो कुंड । डमीड़ देणोसी दोयां डमीड़ो बोलाय दियो ।

डमीड़ सुण'र पाड़ोसण पूछियो– "अै कुण समागिया काती न्हाया ?"

चोरा दूखी होय'र कैयो–"भाग-फूटा जिको इण घर आया!"

(चोर री चोरी, पृ० ४५)

(३)

सेठजी मुळक'र बोलिया– "चीजां तो चोखी चोखी सुणाई । थांरी सेवा सन्मान हूं जरूर करतो; पण थांरा निसीब मनै पोचा लागा । मनै इत्ती ताळ दाड़ी माथै हाथ फेरते हुयगी, थांरै भाग सूं एक केस ई को झड़ियो नी !"

गवैयै सुण'र समझ लियो इया तिलां मे तेल कोयनी ! चिघर कैयो– "सेठां, निसीब री तो जणै ठा पड़ती जद थांरो तो होवती दाड़ी अर वंदै रा होवता हाथ !!

(गवैया, पृ० ५८)

इणी भांत सूं पुस्तक मांय 'वक्र उक्ति (Irony) रा नमूना भी घणै सुन्दर रूप में अनेक मिले है:—

(१)

तौ बाबाजी ग्राड में ऊभा मौकौ जोव लागा। किणी काम ' डोकरी ग्रठीनै वठीनै जोय'र होळैसी'क बारणौ खोलियौ। बावैजी रै मौज लड़गी, मौकौ हाथ लागग्यौ। देणी सी बड़ग्या मांय। ग्रासण बिछांवताई हा कै डोकरी य ऊभी। मीठी मिसरी दाई बोली– 'धन भाग धन घड़ी ग्राज, जिकौ माराज म्हारौ घर पवितर कियौ। सगळा रै जावौ हौ, पण म्हारै ऊपर कदेई मैं'र का करी नी ? ग्रावरै मुखारबंद ' दोय हरि रा नाँव हुं ई लेंवती। ग्राप पैली पोत पधारिया हौ तौ कई सेवा ई सरूप मुजब तौ होवणी जोयीजै ? पाड़ोसण्यां नै हेलौ पाड़ लाऊं थे थोड़ा बारै ऊभौ। जोखम-जत्त बिखरियोड़ी ी है।"

(कमाई री ग्रट , पृ० ८०)

(२)

हां, तौ सिवदत भाई विद्या बिसनी पूरा हा। नैड़ी ग्राघी भलांई किठैई काई सभा क्यौ नही होवौ, ग्रै तौ टैम सूं पैला उठै पूगई ता। र ग्रर बिसै रौ मेळ,सोनै ग्रर सुहागै रौ मेळ हुय जांवतौ हौ! इत्तो जरूर ठीक होंवतौ कै मितरी इयां नै सगळां सू लारै टैम देंवतौ। क्यों कै ज्यौं ई ग्रै ग्रथ करता सभा री इति होवण लागती।

(सिवदत भाई, पृ० १८६)

(३)

जोसीजो फट्ट ई पूछियौ– "ग्रौ ईज बो ग्र ी है क्या ? इयै ई ग्रमोल पदारथ नै सम 'र ले जावणौ ? -हा-हा! । ई

फूटरी मूरती है ! जाणै बिधाता आप री सगळी चतराई इयँ रै घड़ण मे ई पूरी करदी ! म्हारा भाग ई पोचा हा जिको इत्ता दिन इण उदबुदै प्राणी रा दरसण ई को हुयानी ! हणै ई भाग जागिया है ! आ रे भाई काळू ! आ लाडेसर, म्हारै चिपता-चिपत बैठ जा। इणगी-उणगी भटक्यौ तौ म्हे किठै हाथ घालसां !

(काळी माई, पृ० १९५-९६)

हास्यरस री रचना कोरी मनोरजन री वस्तु कोनी होवे, उणाँ रो सामाजिक महत्व भी है। समाज माय जिको हानिकारक रूढ़ियां, अंधविश्वास अथवा कपटाचार चालना आवे, हास्यरस रो सफल लेखक उणां पर चोट करै है ; पण या चोट एक ढग सू होवे है। इण रै मूळ मे सुधार री भावना रैवै है। ये चीजाँ व्यग री दृष्टि सू लिखी जावै है। व्यंग (Satire) रो प्रभाव-घणो गहरो तथा व्यापक होवै। ससार भर रै साहित्य मे अनेक व्यग-प्रधान रचनावा लिखी गई है अर उणाँ सू वडो काम होयो है। प्रस्तुत पुस्तक माँय भी व्यग री महिमा व्याप्त है। कंजूस सेठ, वनावटी धर्मात्मा, ठग बाबाजी, थोथी मेहमानदारी करणियाँ, नकली ज्योतिषि, घूसखोर हाकम चाटुकार-सेवक, घमडी पदाधिकारी, भाँग भवानी रा भगत तथा भोजन बीरां आदि आदि पर घणा तीखा व्यंग है। इण रै पीछै सुधार री भावना है। थोड़ा सा उदाहरण देखोः—

(१)

राजाजी- अर फेर मै कोई पाप तो किया ई कोयनी, जिण नै धोवण सारू जावणो ईज पड़ै।

चौबेजी- सोळै आना खरी बात फरमायी अनदाता ! आप जिसाँ धरमावतारां अर पुण्यात्मावाँ नैं भला क्या गिगाजी पवित्तर कर सकसी ?

(अदब री सूळी, पृ० ७)

( )

पछै हेत अर अपणापौ देखाय'र कैवतौ– "तौ किणी सूं कंई लेवूं कोयनी। थाँनै काम कढावणौ हुवै तो अटकळ बतावण री सायता करदू। (होळै सी) देख भाई, ै सै खाऊ पीर है, पण है छाना-छुळका ! बा सामली खूटी ऊपर जाकट अर बैंरै नीचै ई जूती पड़ी है। बां मे भेट पूजा घाल जा। तुरत-फुरत काम सिध हुय जासी। समझ्‌यौ'क ? बे दोनूं . .. . हाँ ।"

(कमायी री सिद्ध-मिंतर, पृ० २६)

(३)

गुरु परंपरा सूं ओझाजी माराज म्हाँरा गुरु हा। मोलै सगळै मे इणाँ री नागायी री छाप ही। भणियोड़ा तौ घर रै आँगण ताँई ई दोरा होवैला। हाँ खोटौ-खरौ आपरौ नाँव जरूर लिख लेवता हा।

ज र्नाँ रै घरै ब्याव-सादी करावण नैं वै कोई भाड़ै रो पिंडत ले जाया करता हा। आप रसोई मे सायता करता। भेट-पूजापौ सगळो आप लेता अर भाड़ेती पिंडत नैं खाली ठैरायोड़ा पइसा देंवता।

(नैतौ, पृ० ८६)

(४)

सेठ पिछोकड़ै में बडियो। आगै खीर कैवै म्हारै नैडा ई मतौ आवौ ! सेठ री छकड़ी कम रैयगी। अबै उण में दोय बाताँ रौ सोच लागौ। एक तौ रसोइयै नै बुलाय'र खीर रधावण रौ बीजौ पाँचा बामणाँ रै पेट फाट'र मरण रौ।

(सूम रै घरै धूम पृ० १३०)

ये व्यंगपूर्ण रचनावां रा थोड़ा सा अंश है। वस्तुतः तो रचनावाँ पूरी पढणँ जोग है। इणाँ रो समग्र प्रभाव घणो गहरो है। व्यंग रो भीतरी उद्देश्य समझणो जरूरी हे। मेरीडिथ व्यंगकार री परिभाषा घणी आछी दी है- "The Satirist is a moral agent often a social scavanger working on a storage of bile." (Idea of Comedy Page 82) इण परिभाषा रै मुताबिक व्यंगकार रो खुद रो महत्व घणो ऊँचो उठ जावै हे। प्रस्तुत पुस्तक व्यंग री दृष्टि सूं घणी आछी बण पडी हे।

इण पुस्तक मांय कथासूत्रां रा दो विभाग साफ नजर आवै है। एक विभाग उण लोक प्रचलित प्रवादां अथवा चुटकलां रो है, जिणाँ नै लेखक आप री तरफ सूं विस्तार दियो है। इण प्रक्रिया सूं वै लोक प्रचलित चीजां और भी सरस बण कर आगै आई है। अनेक स्थानां पर तो लौकिक पद्यां रो प्रयोग भी साथै ही कर दियो गयो है। उदाहरण देखोः—

(१)

औरां नै तौ सीरो पुरस्यो, म्हानै पुरसी थूली।
के तौ म्हारा करम पातळा, के पुरसारी भूली॥
ना तौ थांरा करम पातळा, ना पुरसारी भूली।
मूडो देख'र टीको काढ्यो, मार गवागव थूली॥

(मूडो देख'र टीको, पृ० ९६)

(२)

एक बार कथा हुणी, ज्ञान आयी हुई।
बार बार कथा हुणी, कान है के दई॥

(कथा, पृ० १२७)

(३)

ग जीतियो रै बेटा कारिणया ।
म्हारी बाई पगै हालै जरां जारिणया ।।
(बगाव, पृ० १४४)

जोसी जुग दातार, मनै जीमाय'र जीमसी ।
उबरसी अगार, बा ई पण उबरै नही ।।
म्हारी निजर अपार, जीमरिणयो जीवै नहीं ।
मरसी माँगणहार, जोसी नै जोखौं नहीं ।।
(जोसीजी, पृ० १६८)

इण रै अलावा 'ऊधो पायलो', 'ओळखारण', 'चोर री चोरी', 'खानदानी राजपूत', चौबेजी नै नैतौ', 'पगरखी', 'ओझाजी','गवैयो', 'गुळ रो न्याय', पागड़ो गई भैंस रै पेट मे', 'परचावरणी', 'नैतौ', चोठी भळै भारू को होसीनी ?', 'जिनावर','जाट','सतलड़ी लधसै', 'दोल ऊपरलो मारग', 'सूम रै घरै धूम', 'चोर अर से ी', 'झूठो झमेलो', 'सिध्धूजी', 'भूत रो भाई जमदूत', 'रायसाब' और 'मिरतु टैक्स' आदि रचनावां मांय लौकिक कथा सू ँ रो प्रयोग घ ँ ग्दर रूप मॉय हुयो है ।

साथै ई लेखक री आपरी स्वतंत्र कल्पना रा हास्यपूर्ण कथासूत्र भी घणा रोचक है । इण मॉय समाज री अनेक विषमतावां रा ि ाम प्रस्तुत करचा गया है। अनेक स्थानां पर घटनाक्रम ही हास्य मय है । इण भांत री रचनावाँ माँय'स -सेवा','कमायी री अटकळ' 'हरताळ', 'दाड़ी ऊपर टैक्स', 'मास्टरजी', 'लोभी डोकरो', 'गुरु घटाळ', 'बरतण', 'इ ँव ो' आदि घणी मनोरजक तथा रोचक । 'मास्टरजी' नॉव री रचना मॉय सू एक अश नमूनै रो देखो.—

मास्टरजी एक कम एक दरजण बौ सेना रै वीरां नै हेलो पाड़ियो । सै उछळता कूदता बाप नै घेर'र । ऊभग्या ।

मास्टरजी कैयो– देखो बेटाँ ! अबै आपाँ रै चौकी साथै 'जै भगवानिया' अर 'भजनानन्दिया' चढै तो थेई वाँरै जियाँ ई 'जै' बोलर बारीसर बाँसूं कैया– 'बाब जी' पइसो दो बाबाजी पइसो दो।'

बांदराँ पूछियो– बै नहीं देसी जणै' ?

'जणै क्या ? बाँ रै हाथ धोय र लारै ई पड जाया, नहीं देवै तो पिंडो मती छोडिया'।

बीजै दिन ज्यौं ई बाँदर– सेना 'जै भगवानिया' अर 'भजनानंदिया' ऊपर 'बाबाजी पइसो दो, बाबाजी पइसो दो' रो रामबाण छोडियो कै बाँरा पग छूटग्या। भळै बाँरी हमलो बोलण री हीमत टूटगी !!

इण भांत सूं बिचार करणै पर प्रस्तुत पुस्तक माय घणी खूबियां परगट होवै है। वर्तमान राजस्थानी गद्य मे हास्यरस रो इसो पुष्ट परिपाक श्री व्यासजी री इण रचना माय ज मिल्यो है। इण कारण सू पुस्तक रो महत्व ओर भी ऊचो मान्यो जासी। राजस्थानी भाषा रै प्रचार प्रसार खातर इसी चीजां री बडी जरूरत है। साधारण जनता प्राचीन चीजां नै कम समझ पावै। लोग तो समय नैं सरस कारण सारू हळकी चीज घणी पसद करै। पण सब चीजाँ रो न्यारो न्यारो महत्व अर क्षेत्र है। वर्तमान समय मांय राजस्थानी गद्य रो इणी चीजाँ सू प्रचार हो पासी अर इणाँ सू ही भाषा नै जनप्रियता मिलसी। इण मांय दो राय कोनी। इसी सुन्दर अर रोचक पुस्तक लिखण सारु श्री व्यासजी अभिनन्दन रा पात्र है तथा प्रकाशक भी वधाई देवण जोग है, जिका सर्वसाधारण नै या रसभरी भेंट दीनी है।

रुइया ग्लि
रामगढ़ (शेखावाटी)
दि० १४-११-६२

मनोहर शर्मा

१– अदब री सूं[illegible]

एक हो राजा, बडो परतापी अर विदवान। उणरी सभा मैं तरै-तरै रा गुणी हा। वो, सगळां रो आदर-सत्कार किया करतो हो। अर सगळां सूं, बांरै, गुणां रै माफक काम लिया करतो हो। वां मैं एक विदूसक चौबेजी माराज ई हा। वे माता-मोटा हा। अर सुखी सोरै रैवण सू बांरी दोल आगै आयगी ही। बांरो काम फुरसत री बेळा मैं, राजा साब रो मन राजी करण रो हो। बाकी टैम, बे, मौज माणता अर माल मसोट'र माल-मलीदा अरोगता हा।

एक बार, किणी पुन्न परब रै मौकै, राजा साब, चौबेजी नै बुलाय'र पूछियो– आज तो बडो परब रो दिन है नी ?

चौबेजी– जी हजूर।

राजाजी– पण कोई कैवै है, कै, आज रो परब कोई खास परब कोयनी।

चौबेजी– हां, इयां तो है ई।

राजाजी– जणै आज क्या करणो जोयीजै ?

चौबेजी– जिकी हजूर रै जचै।

राजाजी– एक मन करै है गिंगाजी रो न्हावण करां।

चौबेजी– जरूर-जरूर करणो जोयीजै।

राजाजी– बीजो मन करै है नहीं जावां।

चौबेजी– इयां ई ठीक है।

राजाजी– सुणियो है [illegible] गिंगा सिनान सूं पाप [illegible]।

चौबेजी— जी माराज ! जी माराज ! सारतर री इग्या इसीज है ।

राजाजी— पण म्हारी जाण मैं तौ म्है कई पाप को कियानी ।

चौबेजी— खमा धरमावतार ! आप भलां क्यों पाप करण लागा हा ?

राजाजी— जणै पछै क्यों जांयर दोरा होवां ?

चौबेजी— हा, हजूर क्यों फोडौ देखैं ?

राजाजी— पण सास्तर रा वचन है, कै, पाप खै रै सागै पुन ई होवै है ?

चौबेजी— हा; पिरथीनाथ ! इया तो है ई ।

राजाजी— जणै क्या निरणै करा ?

चौबेजी— ज्यौ हजूर वाजव समझै ।

राजाजी— दिनूगै चाला कन सिज्या ?

चौबेजी— ज्यौ धणिया नै सबीतौ हुवै ।

राजाजी— म्हानै तौ दोनू वेळा ई सवीतौ है ।

चौबेजी— जणै दोनू वेळा पधारौ ।

राजाजी— नही भाई, हालणौ तौ एक ईज वेळा है ।

चौबेजी— आई तौ, एक वेळा किसी कम है ।

राजाजी— तौ किसी टैम चाला ?

चौबेजी— जिकी टैम अनदाता वाजव समझै ।

राजाजी— म्हारी जाण मैं तौ दिनूगै री वेळा ई ठीक रैसी ।

चौबेजी— इण मै क्या सक है, हजूर । दिनूगै ईज देवतावां री वेळा हुवै है । दिनूगै री वेळा इमरत वेळा हुवै है ।

राजाजी— पण बै बेळा फूल ठड रैसी।

चौबेजी— खमा। रैसी तौ खरी।

राजाजी— जणै?

चौबेजी— जणै क्या कियौ जाय, आई'ज सोचू हूं।

राजाजी— हू तौ गरम कपडा धारण करलेसू। थे बामण देवता हौ, थांनै सी थोडै'ई लागै है? थे डुपटौ ओढ लिया।

चौबेजी— किरपानिधान! हूं तौ आगै ई ठंडरै मारियौ मर रयौ हू। छी-छी अर खसू-खसू करतै-करतै नाक अर गळौ दूखण लाग ग्यौ है। आंतरयां पेर आतरचा चढगी है। क्या अरज करूं, गरीब परवर, प्राण कठा मे आय रैया है। रात री नींद का आवैनी दिनूगै भूख का लागै नी?

राजाजी— जणै ई तौ, पाणी में चिणै री दाई सूक रैया हौ।

चौबेजी— आछी-छी-छी। देखौ हजूर मरियौ जाय रयौ हूं।

राजीजी— जणै थारौ चालणौ तौ को हो सकै नी?

चौबेजी— दयानिधान! ऊनी कपडा तौ हजूर बगस देसी, पछै फेर क्या डर है?

राजाजी— ऊनी बस्तर तौ था खनै आगै ई मोकळा है।

चौबेजी— है तौ खरी अनदाता, पण सगळै बोदा है। परब ऊपर नवा पैरण रौ लेख है। नवा तौ अनदाता ही बगसासी।

राजाजी— थे तौ वास राखौला? पण जोखाम मै तो भूखौ रैणौ आछौ नही?

चौबेजी– हजूर रौ फरमावणौ वाजब है ।

राजाजी– जणैं था खातर तौ दूध री सामगरी अर फळ-फळियारी ई को जोयीजे नी ?

चौबेजी– अनदाता ! इसी बेमरजी तौ चाकर ऊपर नही होवणी जोयीजै । कदेई-कदेई तौ परब जिसा सौनै रा मौका मिळै है जद ई गैरी पेट-पूजा होवै है । पेट रा सळ निकळै है ।

राजाजी– जणैं तौ थानै विरत राखणी पड़ैला । एक वखत परसाद लैणौ पड़ैला ।

चौबेजी– राजेंद्र ? नृप नारायण रौ रूप हुवै है । उणारी खातर वाजब-बेवाजब री कई अटकना का हुवैनी । आप, इण गरीब माथै, दया कर'र मन सूं विरत राखण री अर मुख सू फळियार अर दूध री, सामगरी ग्रहण करण री इग्या बगसाय दरावौ ।

राजाजी– खैर जी, छोडौ इण बात नैं । आ बतावौ कै सवारी किसी होवणी जोयीजै ?

चौबेजी– जिकी हजूर रै दाय आवै ।

राजाजी– म्हारी जाण में तौ घोड़ै री सवारी ठीक रैसी । आपारै तबेलै में एक सूं एक छंटवा घोड़ा है ।

चौबेजी– खमा घणी ! कमेत घोड़ौ हजूर नैं घणौ ओपसी ।

राजाजी– घोड़ौ तेज, मजबूत अर राजावां रै लायक ओपती सवारी है ।

चौबेजी– हजूर ! मजबूत है जणैंई तौ बैरी टाप सू धरती धसक जावै है ।

राजाजी– हें ! आ बात है ? जणै मनै इयैरी सवारी परसंन कोयनी । औ तौ अमंगळीक है ।

चौबेजी– धरती माता नै टापां सू खूदै है, है तौ अमंगळीक ई ।

राजाजी– जद छोडौ इयैनै ।

चौबेजी– हजूर !

राजाजी– जद किसी सवारी ली जावै ?

चौबेजी– जिकी मन भावै ।

राजाजी– पालखी किसी'क रैसी ?

चौबेजी– क्या बात है नदाता ! पालखी तौ सुख देवणवाळी है ई । आराम सू, गीदै माथै, तकियै रै सायेरे बिराजियौ-पौढ़ियौ जाय सकै है ।

राजाजी– पण ?

चौबेजी– पण क्या माराज ?

राजाजी– आईज कै लागै वैकूठी दाई है ।

चौबेजी– वाजबी है अनदाता ।

राजाजी– तो पछै हाथी री सवारी करां ?

चौबेजी– खूब आछी रैसी, हजूर !

राजाजी– पण चढ़ण री दोरप तौ रैसी नी ?

चौबेजी– जिकी भला अनदाता क्यों बरदास्त करसी ।

राजाजी– पण है ओपती । मरजाद माफक ।

चौबेजी— इण मै तो सक ई क्या है अनदाता। गजेंद्र तौ राजेंद्र नै ई सोवै ।

राजाजी— सजियौ-सजायौ अवारी वाळौ हाथी, इयां लागै है, जाणै कोई देवयान ।

चौबेजी— बेसक,बेसक, हजूर ! जदई तौ राजा-रईस मोकळौ धन खर्च कर'र इण ओपतै, मन भावतै जीव नै गजशाळा मै राखै है ।

राजाजी— पण चढ़ण मै तौ तूमत रैवे ?

चौबेजी— आ बात तौ है ईज हजूर ! आप निसरणी सू ऊपर पधार सकौ हौ ?

राजाजी— पण चढणौ तौ घणौ ऊचौ पडसी नी ?

चौबेजी— ऊचौ भळै किसो'क ? भला पिरथीनाथ आई काई सवारी है ! जाणै पाड ऊपर चढणौ हुवै !

राजाजी— बौत दुखदाई सवारी है !

चौबेजी— हजूर ! दुख रौ पूछणौ ईज क्या ? असल मै आ सवारी नही एक तरै री 'अदब री सूळी' है ।

राजाजी— जणै छोडा औ विचार ।

चौबेजी— हा, अनदाता ।

राजाजी— जद सवारी रौ झंझट है तौ पछै चालाई क्यो ?

चौबेजी— क्या ज़रूरत है ? क्यो फोड़ी देखै, हजूर ?

राजाजी– अर, फेर मै कोई पाप तो कियाई कोयनी, जिणा नै धोवण सारू जावणौ ईज पडै ।

चौबेजी– सोळै आना खरी वात फरमायी अनदाता ! आप जिसा धरमावतारा अर पुण्यात्मावां नै भला क्या गिगाजी पवित्तर कर सकसी ?

राजाजी– पण चौबेजी । परब सिनान रौ मा'तम तो मोकळौ लिखियौ है ।

चौबेजी– हां आ बात तो है ई ।

राजाजी– जणै, दिनूगै निसचै ई चालां ?

चौबेजी– क्यों नही । अनदाता रौ निसचै तौ पत्थर री लीख है ।

बीजै दिन, राजाधिराज री सवारी, घणै ठाठ-बाठ सूं हाथी ऊपर निकळी । दिन मे देव-पूजन हुयौ अर बिरत राखियौ । पण म्हारै चौबेजी तौ मनसा बिरत राखियौ अर फळियार री बेळा आपरी मोटी दोल रा छाना-छावा आसरा भर'र गिदर पथरणै, पर सुख सू पसरग्या अर निद्रा देवी वानै हौळै-हळकै थेपड'र कल्पनातीत आणदपुरी मे पूगाय दिया ।

२– ऊंधो पयतो

एक हौ बडौ सैर, जिण मैं एक खानदानी सेठ रैवै। खानदान रै जसरी जवरी जूनी पूंजी रै परवार वैरै ग्वनैं, धन रै नाव ऊपर फगत आपरी अर कुटंविया री देह ही। हां, उलूक बाहनी किरपा कर'र, आपरै वाहन नै उठै ई छोडगी ही जिको, रात री टैम सेठ री खंखर हवेली माथै सांती सू बैठौ, करकस वाणी सू वैनै सबदायमान कर र्यो हौ।

भूवाजी ई, सेठ री आख खुलण सू पैला, नित-नेम सू, घर मैं सगळी ठौड घूम-फिर'र बैरी थेली मैं जाय जमती ही।

सेठाणी घणी दुखी। हीमत हार चुकी। भंडार घर रौ चारज, भूवाजी, पैला सूँ ई ले चुकी ही जिण रै परणाम सरूप, उठै, ऊंदरा थिड्या करता हा। एक दिन कायी होय'र, हीमत कर'र, सेठाणी, सेठ'र मोभी बेटै नै करडाई सू कैयौ– अवै तो मौत रौ घर पिरतख सामनै दीखण लागग्यौ है। विना हाथ-पग हिलायां, जाबक गुजर होवणी मुसकल हुयगी है।

सेठ नै, तौ, इण रौ पैला सू ई अणभौ हौ। आज, बाप-बेटै सला कर'र परदेस जावण रौ पक्कौ निसचै कर लियौ। सेठाणी, आडोस-पाडोस सू आटौ ओधार माग लाई। मोटा-मोटा च्यार टिक्कड़ अर थोड़ा-सा भुजिया एक कपड़ै मैं बांध'र बानै दे दिया।

दुख रा मारिया, ' लाई घर सूं निकळ पड़िया। एक

भलै सै गाव मै पूगा । अर एक छोटौ-सौ घरियौ भाड़ै ले'यर रैवण लागा ।

बाप, बेटै नै कैयौ– बेटा ! देख तौ खरी, अठै कोई धोबी है क्या ? कपडा जाबक मैला हुयग्या है । इयां कपड़ां सू काकर बजार जायौ जाय ?

बेटौ थोडी ई दूर गयौ होवैला, कै, बैनै, भाग सूं एक धोवी मिळग्यौ । बौ, बैनै घरै लायौ । बाप बैनै च्यार कपड़ा धोवणा दिया और तुरत धोय'र लावण रौ कैयौ । धोबी कपडा लेय'र मारग लागौ ।

बेटै पूछि– काकाजी ! था धोवाई तौ ठैराई कायनी ?

बाप कयौ– इया कोई थोडी ई करीजै है । कपड़ा धोय'र लासी पछै धोवाई तै करसा ।

सेठ, सूरज रै वारकर एक ई वार फिरियोडौ हौ तौ धोवी फिरियोड़ौ हौ सात वार । धोबी सेठ रा कान कतरू हौ । ञाई बत्तीसी तौ बीरौ छत्तीसौ ।'

कपडा धुप'र आया, पण, आया आधाईः च्यार रा दोई । सेठ चिघ'र पूछियौ– बीजा दोय कपड़ा किठै ?

धोबी कैयो– सेठजी, इण गांव रौ कायदौ है, कै आधा कपड़ा धोबी राख लेवै । धोवाई पूरी लागै । लावौ च्यार पड़ां री च्यार आना धोवाई ? दो कपड़ा अबै म्हारा हुयग्या ।

सेठ, धोबी नै ठर्ड'र कोटवाळी लेयग्यौ। कोटवाळ साव, धोबी नै, निरदोस बतायौ। उलटौ सेठ नै धमकाय'र वैरै खनै सू धोबी नै च्यारा ना दराय दिया।

सेठ मन ई मन खिन्न हुयौ। चारा-विचारी मै पडग्यौ। औ भलौ न्याव? गिरै रा दो कपडा ई गमाया अर धोवाई पूरी च्यार आना देवणी पडी।

पण कैबत मै कैवै है– 'अग्गम बुध्धी बाणियौ'। सेठ खण मै ई किणी ऊजळै अर हितकारी निरणै माथै पूग ग्यौ।

बेटौ, सारी हकीगत सुण'र चौकळीजग्यौ! बाप कैयौ– घभरा मती, बेटा। इसी अंधेर नगरी मै ई, माल हाथ लागै है। अठै रा लोग जाबक मूरख है। सिरकार दीसिया ई दिन ऊगोडौ है। देख तौ सही, आपा री अटै चादी ई चादी है।

बीजै दिन, बाप बेटौ दोये बजार गया। मझ मै एक हाट भाड़ै लीवी। सगळा सू मिळिया-भेटिया। कैयौ– म्हे अठै खासौ बौपार करण नै आया हा।

बौपारियां पूछियौ– किण जिनस रौ बौपार?

सेठ कयौ– फारवर्ड सवदौ अर्थात् वायदै रौ सवदौ।

वौपारी– जिया?

सेठ– अबार गऊं रा भाव १६) रुपिया मण है। हूं, दो महीना छेडै थानै १०) रुपिया मण सू देवण रौ कौल करूं हूं।

बौपारी सुण'र राजी हुयग्या । वायदा लिखीजिया । सेठ उरा पर दसकत करती वेळा बाणीकै मै लिखतौ गयौ 'पायली ऊथी' । किरणी री निजर इरा ऊपर पडी नही ।

सेठ हजारा रुपिया, बोपारिया सू, श्रागूच ले लिया । बदळै मै, लिख्योडा वायदा, बानै, कपडाय दिया ।

गुढा-लुच्चा, थोडा-घणा सगळी जागा लाधै ई है । श्रौ गाव ई, इरा वात सू खाली को हौनी । सेठ, बानै श्रापरै श्रठै बुलावण-हिळावण लागौ ।

नितरी भाग-बूटी छरगती श्रर माल उडता ।

म्मै तौ, श्रापरी चाल सू चाल तौ ई रैवै है । ज्यौ-ज्यौं माल देवण री मिती नैडी श्रावरग लागी, वौपारिया नै, श्रौ देख'र उचबौ होवरग लागौ कै हाट मै तौ एक बोरी ई गवा री कोयनी ! सगळै विचार मे पडग्या– श्रौ क्या ढंग-ढाळौ है ? म्हानै हजारा बोरचां गवां री काकर देवैला ?

सेठ री हाट मै गुढां रौ जमघट लागण लागौ । सगळा लठवा । डडै मै करामातवाळा ।

छेकड म्याद वाळी मिती श्राई । बौपारियां रौ झुड, वायदा लेय'र जाय पूगौ सेठ री हाट । बठै तो खाली दो बोरी गवां री मेलियोडी ही ।

सेठ श्रर बैरौ बेटौ, पायली लेय'र गऊं देवण नै त्यार हुयग्या । जिकौ वायदौ देखांवतौ, उरानै, ऊधी पायली सू गऊं मिण'र देवरग लागता । चारूं-खानी हल्लौ-गुल्लौ मचग्यौ । सेठ री सैन सूं, लठैतां, लायां बौपारियां नै, गोता देय'र बार काढ़ दिया ।

पूगा सगळै कोटवाळी। कोटवाळ साव, सेठ अर वौपारिया री बात सुणी। सेठ छानै सीक वारी मुट्ठी गरम करदी। वे, भेट-पूजा लेय'र रस्तै लागा। जावती वेळा, उळटा, लाया वोपारिया नै डराय-धमकाय ग्या।

अबै, सगळै पूगा हाकम साव खनै।

हाकम ई हा तौ अवेर नगरी रा ई? भला, वे, कोटवाळ साव सू अकल मै ओछा थोडे ई उतरता हा? वाई, सेठ री बात घणै ध्यान सू सुणी। पछै सुणी वौपारिया री सिकायत। बडा लाल पीळा हुया। पग पीटिया कैयौ– था मै कोई सैणौ होंवतौ, तौ, मनै क्यों फोडा घालतौ? सेठ रै वायदा मै 'ऊधी पायली' लिखियोडी है। थे लेवणौ चावौ हौ सूई पायली सू। हूँ दोनू री बात को मानूनी। न्याव करसू– दूध रौ दूध पाणी रौ पाणी। तौ, हू फैसलौ देऊ हूँ– सूई-ऊंधी रै झमेलै नै छोड'र गऊ आडी पायली सूँ मिण'र वौपारिया नै दे दिया जावै।

बौपारिया, न्याव सुण'र, माथै मै तईडौ लियौ! रोंवता-झीखता घरै आया। अर, आ बाप बेटै री जोडी, जल्दी ई बीजै दिन जमा पूजी समेट'र छू मितर हुयगी।

३— गड्डां रौ साग

सेठ जिवबगस घणौ रूपाळौ, कसरती अर भणियौ-गुणियौ मिनख हौ। कसरत रौ जी सू सौक हौ। नितनेम सूं सइकडा डंड अर बैठका लगाया करतौ। लिखमी अर सरसुती दोना री, उण ऊपर, मोकळी किरपा ही। लाखां पर लेखण चालती ही। आप ओलौदोलौ अर गुण गायक हौ।

सगळै गुण होवतै थका पण उण मै एक मोटी ऐब ही। बा, आ, कै हथाळू-मसकरौ हद सू ज्यादा हौ। मजाक-मसकरी करण मे वौ किणी-सू को चूकता हौनी।

नोकर-चाकर ई, लाई, उफत जावता। रसोइयौ तौ कोई टिकतौ ई को हौनी।

वो, नित, आपरै नोकरा री परिख्या लिया करतौ। बानै इसा अटपटा सवाल पूछतौ, कै लाई चौकळीज जावता। किणी नै एक काम भोळांवतौ अर बौ काम कर'र पाछौ आवतौ जणौ बैनै पूछतौ— कदास ओ काम इयां नही हुयौ तौ। कोई उपाव काढौ? जद उपाव बतायौ जावतौ, तौ, उण मैं मीन मेख काढ़ देवतौ। फेर तीजौ सवाल पूछतौ— कदास औ उपाव नही बणियौ तौ? कच्चै मिनख रा तौ पग ई छूट जावता। बो, लाई बीजै दिन सेठ रै घरै आवण री हीमत ई को करतौ नी।

कैबत मै ई कैवै है— 'भाग फूटै नै करम फूटो सौ कोसरी अंवळाई खाय'र ई मिल जावै है'। इयां ई यो। सेठ रौ

मसकरौपण, बध्घुवा रे समागम सू, दिन-दिन वधतौ जावतौ हौ। बौ नित, नवै बध्घू री खोज मैं रैवतौ हौ।

एक बार, बांरौ, जूनौ रसोइयौ, किणी काम सू छुट्टी लेय'र चल्यौ गयौ। बैरै, फिरती आवण री आसा का हीनी। नवौ रसोइयौ कोई आवतौ, जिकौ सेठ री मसखरी सू उफत'र पग छोड जावतौ।

म्हारौ रामधन माराज, एक लंबर रसोइयौ होवतै थकौ परण भाग रा पोचौ हौ। इसौ दाळद जोग पडियौ हौ, जिकौ, किठै ई काम मिळतौ ई को हौनी ? हौ औ ई छटवौ मसकरौ।

तौ, इणनै, खडक लागी कै सेठ सिवबगस रै रसोइयै री चायना है। पण, सेठ री सोभा सुण'र पग कच्चा पडता हा।

छेकड, दाळद री करडी मार सू लाचार होय'र, बौ, हीमत कर'र सेठ सू मिळण टुर वयीर हुयौ। बात पक्की हुयगी। बीजै ई दिन, बौ, काम ऊपर लागग्यौ।

सेठ; बैनै, दो खास बाता रौ ध्यान राखण रौ कैयौ। एक तौ आ, कै जद दोय जणा बैरै खनै बैठा हुवै तद किसौ ई जरूरी काम भलाई हुवौ, पण, उण रै खनै नही आयौ जावै। वीजी आ, कै, नितनेम सू, दोये बेळा, एक साग उणरी परसन री बणिया करै।

रामधन, दोये बाता खुसी-खुसी मंजूर करली अर जुट-पडियौ आपरै काम मैं।

एक हफतौ ई दोरौ बीतियौ होसी, कै, सेठ रै मन मैं खुळखुळी चाली। बौ सोचण लागौ कै कांकर रामधन नै बैगौ छेड़ियौ जावै ?

जगौ तीजी बात, बैनै, आ कैयी– देख माराज, म्हारै घर मे लठ मिनख रौ निभणौ निपट दोरौ है। तू, म्हारी वात रौ मुतलब तौ समझ ई ग्यौ होईस ? नही तौ, सफा हिंदी मे सुणलै। हूँ तनै, एक काम करण रौ कैवू जणौ, तनै, उखत सू सात बीजा काम कर'र आवणौ जोयीजै। एक काम मे अनेक काम करणा जोयीजै। समझियौ'क नही ?

माराज लाई, हाकारौ भरण छाडै और कई करतौ।

सेठ, टैम रौ ई बडौ पक्कौ हौ। दिनूगै बैनै, ठीक १० बजी अर सिज्या नै ठीक ७॥ बजी रसोई त्यार मिळणी जोयीजती ही। माराज, सदा इया ई करतौ।

एक वार, सेठ, ठीक १० बजी रसोई मे आयौ। रसोइयौ थाळी लगावण लागौ। सेठ चिघ'र कैयौ– थाळी लागी त्यार मिलणी जोयीजती ही। म्हारा दो मिनट तौ अक्यारथ ई गया नी ?

माराज नरमी सू उथळौ दियौ– आगै सू इसी भूल को हुवैनी।

एक दिन, इसी हुई, कै, कोई भलौ मिनख सेठ सू दिनूगै ८ बजी ई मिलण आयग्यौ। बैसू बाता करण मे टैम हुयगी ९॥। रसोइयौ साग री खातर पूछतौ तौ कणै पूछतौ ? अठीनै आवणियै तळा ई टेक दिया। छेकड, रसोइयौ, हीमत कर'र सेठ खनै पूगौ। अर होळै सी कान मे पूछियौ– आपरी परसन रौ किसौ साग बणैला ? सेठ नै छेडखानी रौ मोकौ लाधग्यौ। कूडी रीस देखाय'र कैयौ– साग कर गड्डां रौ। हमै पूछण री फुरसत मिळी है ?

माराज ई ही पूगै हजरत, कैयौ– जो हुकम ।

सेठ, मन-मन मैं सोचियौ, देखा, आज रसोइयौ नैं क्या फुरै है ?

रसोइयै, नोकर नैं भेज'र छोटा-छोटा ऊजळा चीकणा गट्टा घणा सारा मगवाय लिया । वानैं, गरम पाणी सूं धोय पूछ'र पसवाडै मेल दिया । अबै दही री खटाई मैं मिरच-मसाला देय'र भोळ त्यार कियौ । पछै टोपियै में, [illegible] घी छोड दियौ । घी आयग्यौ जणै, हळदी, हींग-जीरौ वैमैं घाल'र छमक दियौ । वडका खावण रै बाद, वैनैं, नीचै उतार'र वैमैं गट्टा छोड दिया ।

सेठ रै ऊतावळ लागी कै देखूं माराज गट्टा रौ साग काकर बणायौ है ! टैमसर आसण ऊपर जाय जमियौ । माराज तरै-तरै री बधिया सामगरी पुरसी । सेठ झट ई पूछियौ– म्हारौ साग किठै ? माराज चटपट एक चांदी रै प्यालै मैं कसूबल तिरयावळै वाळौ भोळ पुरसियौ अर सागै ई कुडछी सूं, वैमैं, थोडा गट्टा घात दिया । सेठ आख्या फाड'र रसोइयै सामौ जोवतौ ई रैयग्यौ ! पण, इत्तै सूं ईज, वैरी, जी जमाई थोडै ई होवती ही ? चिघ'र कैयौ– औ किसौ साग ? माराज बोलियौ– औ, आपरी परसन रौ है ।

सेठ हस'र कैयौ– माराज ! तू साचेलौ चतर मिनख है, इसी दीखै है, थारौ, संसकार इण घर मैं ऊंडौ है ।

भळै केई दिन बीता । पण सेठ नै चैन किठै ?

एक दिन जीम-जूठ'र सेठ, रसोइयै नैं बुलाय'र कैयौ– माराज । आज म्हारौ पेट कुसकै है । जी उबकै है । दौड़'र,

बैदराजजी खनै सू, बैगौ, काम करै जिसी दवाई ले आव ।

माराज, 'हुकम सा' कैय'र टुरग्यौ ।

बैदजी, सेठ री आदत सू चोखीतरै वाकब हा । बां समझ लियौ, कै, पेट रौ मिस कर'र, लाई माराज नै, छेडण री आ एक खाली चाल है । हंस'र बोलियो– माराज । आज ई, थे, रेवड़ी री फेट मै आया हौ ! देखिया ! सेठ, था में, किसी'क बीतावै है !

मारज कैयौ– भगवान री दया सू, आप जिसा सजनां रौ माथै हाथ रैयौ, तौ, हू, सेठ नै क्या धारूं हू !

जणै बैदजी हंस'र कैयौ– अै सात पुड्या लेजावौ ।

माराज इचरज सू पूछियौ– सागै ई सात पुड्या ?

बैदजी बोलिया– औईज भेद तौ थानै समझावणौ है । नही जणै उथप'र, नोकरी सू हाथ धोवणौ पडसी । पैला, थे, एक पुडी दिया । बे पूछै, कै, इण सू ठीक नही हुयौ तौ ? जणै दूजी दिया । कैवै, इण सू ई आराम नही हुयौ तौ ? जद, थे, तीजी दिया । फेर ई कैवै, कै, इण सू ठीक नही हुयौ तौ ? तौ चोथी दिया । इण तरै, एक-एक कर'र साते पुड़्या देवता रया ।

कदास, भळै पूछै, कै, सातों ई निरफळ जावै तौ ? जद··· जद ··हां·· बतावौ तौ थे क्या उथळौ देसौ, माराज ?

माराज हंस'र कैयौ– जद इत्ती बातां आप मनै समझायदी, तौ लारली हू सगळै, आपरी किरपा सू ठीक कर लेसूं ।

रसोइयौ, दवाई री पुड़या लेय'र, पाधरौ, चौवटै पूगौ। उठै काठ-खफणवाळै सू बात की। पछै भठियारै री दुकान सू ज्वार री फूल्या लीवी। फेर २०) री टका-रेजगी वटाई। च्यार जणा नै लगाय'र, सीडी त्यार करायी। बानै कैयौ— थे लोग सेठ साब री हवेली रै पिछोकडै पासी ऊभा रैया। पगो पग आऊ हू। हू, जद, गाखै माय सू मूडौ काढू तद, थे, 'हाजर' कैय'र झट ई सीडी नै ऊची कर दिया।

औ सगळौ बदोबस्त कर'र, माराज पूगौ, सेठ रै भाई-बिरादरीवाळा रै घरै। नाक मै सळ घाल'र कैयौ— सेठ साब री तवियत एकाएक घणी खराब हुयगी। सरीर रौ क्या भरोसौ ? औ तौ ठेरियौ नासवान। जिलम रै सागै मिरतु लागोडी ई है। कदास, काई किसी हुय जावै, तौ, आप, खडक पूगतै ई, वैगा हवेली ढूक जाया। देखिया, जेज मत किया।

हमै, माराज पूगौ हवेली। सेठ तौ माराज री बाट जोय ई रैयौ हौ, बोलियौ— देर घणी लगायी नी माराज ?

'बैंदजी मौडी दवाई दीवी।

'देखू, क्या लाया हौ ?'

'लौ सा' कैय'र, माराज एक पुडी सेठ रै हाथ में मेलदी।

सेठ तौ आदत सू लाचार हौ ई। बोलियौ— एक पुडी सू क्या होसी ? इण सू आराम नही हुयौ तौ ?

'आ बीजी लौ सा'।

कदास, इण सू ई नही आराम हुवै तौ ?

'आ तीजी लौ सा।'

'इण रौ ई असर नही हुयौ, जणै ?

'जरणै, आ चौथी लौ, सा'

इण तरै एक-एक कर'र साते पुड़चां, माराज, सेठ नैं देय दी।

हमैं, सेठ रै बोलण री जागा का रयीनी! थोड़ौ मून रै'र सेठ कैयो– साई री सौ कुदरत है, जे कदास साते पुड़चां अक्यारथ गई तौ ?'

माराज फट्टई उथळौ दियौ– इण रौई बंदोवस्त कर'र आयौ हूं। पछै मूंडै माथै बणावटी गभीरता लाय'र कैयौ– आप, थोड़ा गाखै सू बारै मूंडौ काढौ तौ खरी।

सेठ, उचबै भरीज गाखै सू बार नस काढ़ी। माराज, नीचै ऊभोडा आदमिया नै हेलौ मारियौ। सुण'र रथीवाळा, रथी नै ऊची कीवी।

सेट खी-खी-कर'र खिल उठियौ! पण तौई मुजळाई सू पूछियौ– आ कांकर जाणी ?

माराज कैयौ– जद दवा ऊतर दे देवै, तौ आगला घर देखणा ई बाकी रैवै!

सेठ जोर सू हस'र कैयौ– साबास रे माराज! भळै बोलिया– इण सू आगै रौ ई बदोबस्त कर'र आयौ हूं!

सेठ आख्या फाड'र माराज रै सामौ जोयौ!! पूछियौ– वौ फेर क्या ?

माराज बोलियौ– भाई-बिरादरीवाळां नै भी सावचेत रैवण रौ कै आयौ हूं।

सेठ हंसतौ-हंसतौ लोटपोट हुयग्यौ! झट ई, रोकड़ियै नै बुलाय'र माराज नै १०१) रुपिया इनाम देवण रौ

हुकम दियौ ।

कैवत मैं कैवै है 'परड़ रै परडोटिया ई हुवै ।' मंद भाग सूं माराज माचै पडग्यौ !

सेठ, बैनै, जी सू चावरा लागग्यौ । बैरै विना, वौ, ग्रमूजै, कईसू रीझै नही । केई बार, खुद, सुख पूछण गयौ । दवा-दारू ग्रर रुपिया-पइसा रौ परबंध कर दियौ ।

नवौ रसोइयौ ना तौ कोई टिकै ग्रर ना ई सेठ वैनै टिकरा देवै ।

जरौ, सेठ उफत'र, माराज नैं पूछियौ– थारौ वेटौ ई, थांरै जिसौ, चतर रसोइयौ होवैला ही ?

माराज, ग्रदब सू उथळौ दियौ– हा, रसोई तौ करलेवै है, पण ग्रापरै बैरी रसोई दाय ग्रावै'क नही ?

सेठ कैयौ– तू ग्राज ई, बैनै, म्हारै खनै भेज दे । वौ किसौ दूसरौ है ? घर रौ टाबर है । हूं बैनै निभाय लीस । थां, दोनू बाप बेटा रौ रुजगार चालू रैसी ।

गोरधन माराज छोटौ-मोटौ पैलवान हौ । खूब डंड भारतौ ग्रर बैठकां लगावतौ । चवड़ी छाती, पतळी कबर ग्रर भुजडंड खासा बणियोडा । सरीर मै इत्तौ बळ कै दस जणा नै दाव नही देवै !

गोरधन नै, पैलवान जाण'र, सेठ, घणी मैरबानगी राखतौ ।

बौ, बाप दाई ई टैमसर ग्रर ग्राछी रसोई बणाय लेंवतौ । ग्रोळभै रौ काम कौ राखतौ नी ।

पण, सेठ, आदत सूं लाचार हौ। छेकड, कद ताई, सबूरी राखतौ।

गोरधन हौ जोधजवान अर तातै मिजाज रौ।

एक दिन रसोई मैं थोडौ धूवौ देख'र सेठ मूडौ मरोड'र कैयौ— अरे गोरधन, औ क्या कर राखियौ है रे! आंख्यां फूटै अर दम घुटै है! लक्कड! तै मै इत्ती ई अकल कायनी कै औ रइसा रौ चौकौ है?

गोरधन गरम होय'र बोलियौ— सेठसाब! जबान संभाळ'र बोलौ।

सेठ कैयौ— नही तौ क्या कर लेवैला? पैलवानी री घसक देखावै है क्या? हूं तौ थारै जिसै माछर नै क्या मसळू?

गोरधन उथळौ दियौ— माछर हू कन सिग, म्हारै घर मै हूं। कोई अकडाई राखतौ हुवै, तौ, आवै म्हारै सामनै?

सेठ कैयौ— हा! इत्ती आगै बधै है!! तौ ठैर! अरे कोई है?

दो ठाकर आय ऊभा। सेठ कैयौ— इयै बदमास, बेसऊर छोरै नै घी घालौ।

ठाकर बधिया गोरधन खानी। बै, दोना नै, पटक पछाड़ दिया। फेर, एक जगतौ ठूंठ लेय'र, बधियौ सेठ खानी। जोर री एक ई हाथ पडियौ सेठ री कवर माथै, कै, सेठ, 'मारियौ रै बदमास' कैवतौ थूक मुठ्या मै'र दौडियौ!

अठीनै, माराज रीस मै आय'र, भगाना, तपेल्या उंधी मारदी! अर चूलै मैं पाणी ढ़ोळ'र बौजाय-बौजाय!!

रामधन नै, आ, ठा पडी। बौ, घणो दुखी हुयौ अर घभरायौ।

दो-च्यार दिना छेडै, सेठ, आदमी भेज'र गोरधन नै घर सू बुलवायौ। पण, गोरधन भला क्यो आवतौ हो ?

जणै, सेठ मुनीम नै भेज'र, वैरै सागै रामधन माराज नै, भळै रुपिया भेजाया। गोरधन नै भेजण रौ कैवायौ। सौगन खाय'र कैवाय दियौ, कै, मै, गोरधन रौ कसूर माफ कर दियौ।

गोरधन मुनीम रै सागै आयग्यौ।

सेठ, बैनै देख'र हस'र कैयौ– अरे! मनै तौ म्हारै बळ रौ ई गुमर हौ। पण, थारै हाथ री एक ई चोट, कबर माथै इसी पडी, जिकौ, हाल सीधी का होवैनी! साबास बेटा, मरद हुवै तौ इसौई हुवै!!

बै, सगळा ठाकरा नै भेळा कर'र कैयौ– थे तौ कोरा खीचडै रा ठाव हौ! जद, एक पट्ठौ, था दोया नै पटक-पछाड'र सगळा रै मायकर भाग निकळियौ, तद, थे, चोर-डाकुवा सू काकर घर री रुखवाळी कर सकौला!

इत्तौ कैय'र, सगळा रै सामनै, गोरधन माराज नै ५१) रुपिया रौ इनाम दियौ। बैरी तिणखा बधाय'र, रात नै, हवेली मै ई सूवण रौ कैय दियौ।

रामधन माराज ई, आछा होय'र, काम ऊपर आयग्या। अर, इण तरै, बाप-बेटौ दोये, सेठ रै चित चढग्या अर सोरौ-सोरौ गिस्ती री गाडौ गुड़कण लागौ।
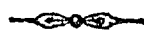
४ भाड़ै रि लोरि

अडबीला मिनख जिकी बात री अड़ी झाल लै पछै टूट भलांई जावौ मुड़ै तौ कंई भाव ई कोयनी !

अड़ी, कंई अर्थ सू कपडै तौ फेर ई कुई बात है ? पण मूरखाई री अडी तौ 'गधै री पूछ झालणी ई है ।'

म्हां सगळां नै गिरिया गाडी ऊपर चक्कर काटतां लंबी टैम हुयगी । म्हारा तौ पग पिणयारी गावण लागग्या । मैं; म्हारी मंडळीवाळां नै कैयौ– भायलां ! पग भाड़ै सू लाया हौ काई ?

'क्यों ?

'अरे, म्हारी तौ टांग्यां जाबक ऊतर दे दियौ है थारी हांस ई पूरी को हुयी नी ? कैवौ हौ– भळै आगै चालसां ।

'भाई ! नामरदी तौ खुदा दीवी है, मार-मार तौ कर' ।

'मार चूका । अर था जिसा मुडदां नै कांई मारां ?

'हां ! थोड़ौ मूडौ तौ काच मै देखलै !!'

'अरे भायला ! मूडौ तौ मजै मै है, टाग्या रोवै है !'

सगळै हंसण लागा । तै की कै, तांगौ या टैकसी कर लेसा ।

पण सवारी काई दीखै तौ'क ?

उडीकता-उडीकतां तत्ता हुयग्या, भाग सू एक लोरी आंवती देखी । बैनै हाथ रै इसारै सू रोक'र पूछियौ– लोरी भाड़ै करौ हौ ?'

'हां ।'

'तौ के भाड़ौ लेसौ ?'

'लेसा पछै किसा हाथी-घोडा ? वाजबी भाडौ सगळां सूं लेवां हां जिकौई थांसू ले लेसा ।'

'मोख तौ खोलौ ?'

'पण थे हौ कित्ता'क जणा ?'

'थारै भावै कित्ताई होवौ ? थानै भाड़ै सू मुतलब'क ?

'वा सा वा ! भली कैयी ! मिनख वताया विना भाड़ै को करांनी ।'

'मिनख तौ सात है ।'

'जद भाड़ै को करानी ?'

'क्यो भाई ?'

'क्यों कायरी, भोडक्यां जोयीजै पूरी तीस ।

'तौ भाड़ौ पूरी लोरी रौ ले लिया ?'

'भाड़ै री अठै किणनै गरज पड़ी है ! केई भाड़ा कमावां हा !

'अरे सुण भाई ! भाड़ै रै पाखती ई दे दे सा, चाय-पाणी रा पइसा ई दे दे सा ।'

लोरीवाळौ म्हारै सामौ करडी निजर सू जोय'र वड-बडायौ– भोडक्या तौ पूरी तीस है ई कोयनी'र भाड़ै करण चालिया है म्हारी लोरी ! मूडौ फूटरौ घणौ दीसै है, कैय'र लोरी नै फर सी दौड़ाय लेयग्यौ ।

हीमत कर'र भळै आगै टुरिया ।

एक दुकानवाळै सू, च्यारानां री, सूघण री तमाखू मागी। औ ई हौ लोरीवाळै रै डावै-जीवणै देवां जिसौ। तडकतौ बोलियौ– थांरौ हीयौ फूटोड़ौ है ! च्यारांनां री तमाकू भेळी ई मागौ हौ !!

'क्यों, क्या गुनौ हुयौ ?'

'भळै किसो'क ? च्यारानां री तौ हूं आप ई लाऊं हूं।'

'तौ वैगीई विक जासी ?'

'विकै क्यो नी थाईज कैय दियौ ! म्हारा सदामद रा गायक क्या लेवै ? खाली को जावैनी ?

म्हां एक बीजै रै सामौ जोयौ। मैं कैयौ– आछौ, मोथां सू पानौ पडियौ। बीजै दिन काकर ई कर'र म्है तौ उठै सूं चल धरिया।

५- खाऊपीर

सेठजी राम सू मिळियोडा हा, तौ, नोकर-चाकर सूरज रैं बारकर सात फेरा खायोडा हा। बे घणी सैणप बधारता तौ नोकर बारा ई कान कतर लेवता।

सेठ च्याराना री जिनस मगावता, तौ, वे, दो आना री ईज लावता। लारला दो आना धर गूजै मै। वे, नित री भखभख करता, पण नोकरा रैं ढूगै-ढ़सकै ई का हीनी। सेठ नवी अटकळ काढ़ता तौ बे काढ लेवता नवी तोड़। टूकै मै- 'नकटा देव अर सुरडा पूजारा हा।'

एक दिन सेठ घणा खफा होय'र कैवण लागा- देखौ, पिडतजी! औ काम काकर चालसी! सगळै साळा मूडौ फाडियां बैठा है! रुपियै री जिनस मंगावौ तौ आठाना री ई पल्लै पड़ै। सेस आठाना वाप-दादा रा कर लेवै।

पिडतजी उथळौ दियौ- सेठा! पेट सगळा रौ थोथौ है। थे रुजगार पूरौ तौ दौ कोयनी। जणौ पेट भरण सारू खोटा-खरा करणा ई पडै।

'थांरी औ मुतलब है क्या, कै सूझती आंख्यां आंधां बण जावा?'

'नहीं आ बात कायनी । खावरा नै कूण को खायनी ?' सगळा रै हाथ चढ़णी जोयीजै पछै कूण टळै है ?'

'खाय लिया ? मगर थापण सू ईज, तौ, ग्रै माथै चढै है । काम तौ थेई करौ हौ । (आपरै बेटां सामी ग्रांगळी कर'र) ग्रैई करै है । पण ·····।

म्हारै खनै क्यो पोत उघडावौ हौ ? वा चांदी रै सट्टै वाळी वियांरी करतूत हरौ ई भूलग्या ?

'नही पिडतजी, वातौ·· बा तौ······

'हा, वाईज तौ । मुतलब ग्रौ कै गधी रै हाथ इयां गरीवा ई लगायौ है ?'

'ग्रा बात तौ ठीक, पण ग्रा वात······बात ग्रा······।'

'बात ग्राईज है कै सगळै धोती मैं नागा है । मौकौ पड़ियां कोई चूकै कोयनी ।'

'(हंस'र) जरौ थांरै विचार सू सगळै खाऊ-पीर है ! एक ई टळियोड़ौ कोयनी !'

'नही, है । खाली एक ईज टळियोड़ौ है ।'

'वौ, पछै कूरा है !'

'वौ है लाई साळगरामजी । जित्तौ भोग धर-सी उत्तौ पडियौ लाधसी । एक कण ई को खावैनी ।

६– कमायी रौ सिद्ध-मिंतर

मुंसीजी रै घरै च्याय-म्याय तौ घणी ही, पण, चुग्गौ थोड़ौ हौ । नव रौ लाभ तेरे रौ खरच । जणै देखौ जणै एक न-एक तगादगीर ऊभौ ई रैवै ।

केई बरसां ताई तौ, लाई, दोरौ-सोरौ गाडौ गुडकायौ । इणरी पाग उणरै तौ उणरी पाग इणरै माथै मेलतौ रयौ ।

छेकड़ गाडौ अडग्यौ । जद धक्का दिया ई नही टुरियौ तौ मुंसीजी घबरायौ । नव-दो-इग्यारै होवण री सोची ।

एक दिन, भावीजोग सू, बारौ एक बाळगोठियौ बासू मिलण आयौ । इणरै हरचन द्वारा लाग रया हा ! खावण-पीवण सू अर गैणां-कपडा सू औ घणौ सोरौ हौ । बक मै ई रुपिया खासा जमा हा ।

मुसीजी, आपरौ रोजणौ, इणा-आगै रोयौ । इणनै दया आयी । कैयौ– आछी डुबोई रे ! म्हारै खनै, इत्ता दिन क्यौ नही आयौ ? फालतू फोड़ा भुगतिया ?

खैर बीती नै भूलौ । हूं थांनै एक सिद्ध-मितर बतादूला जिको दुख-दरद कपूर हुय जावैला ।

तौ बतावीनी, घर मै घाणी अर तेली लुक्खौ खावै ! घर मै ई वैद, अर घरवाळां ई मांदगी भोगै !!

आयोडै मुसीजी, म्हांरैवाळे रै कान मै मितर दियौ– 'श्री खडकाय नगद नारायणाय नमः ।' विधी वताई कै सुलमै सितारै रै कामवाली जाकट बणवावौ अर इसी ई एक पगरखी । एक नै खूटी माथै टांग दौ, वीजी नै उणरै नीचै मेल दौ ।

इयां नै त्यार करावण सारू, उणा आपरै खनै सू रुपिया दे दिया । पछै कान मै इणा रै पिरयोग री अटकळ समझायी ।

'मरतौ क्या नही करतौ' मुन्शीजी रै हाडो-हाड जचगी । जद कोई कई काम कढावण नै, तैसील मै आवतौ तौ मुसीजी थूकण रै मिस, उठ'र सैन सू आवणियै नै बार बुलाय लेवतौ । पछै हेत अर अपणापौ देखाय'र कैवतौ– हू तौ किणी सू कई लेवू कोयनी । थानै काम कढावणौ हुवै तौ, अटकळ वतावण री सायता हूं करदू ।

(हौळै-सी) देख भाई, अठै सै खाऊपीर है, पण है छाना-छुळका । वा सामली खूटी ऊपर जाकट अर बैरै नीचै ई पडी जूती पडी है । बां मै भेट-पूजा घाल जा । तुरंत-फुरंत काम सिध हुय जासी । समझ्यौ'क ? बे दोनू हां…

इण उपाव सू पैलड़ै ई दिन पूरी इक्कीस मुदरावां रा, दरसण मुंसीजी नै हुयग्या ।

इण तरै मुसीजी रौ दाळद धुपियौ । घर मै ठाठ लाग ग्या ।

मितर रौ चिमतकार नित-नित वधतौ ई गयौ ।

७– कळदूट बावौ

गोलू माराज पक्कै रगरा अर सरीर में भारी हा। डीगौ खामणौ, माथौ मूडायोडौ, वडी-वडी आख्या अर वड़ी-बडी मूछा ही। पैलै लबर रा मसकरा, पराये दुख दूबळा अर भला माणस हा। लो-लकडी अर हीमती ई पूरा हा।

सोढौ-नीबू, बर्फ, सरबत अर पान री बडी दूकान खोल राखी ही। दो तागा भाडै चालता हा। कोई खाय जावौ, कोई खुवाय जावौ। कदैई चिता को करता नी। आदमी पूरा अडबंगी हा।

एकरसी घूमतै-फिरतै, किठेई, बानै, एक साधू मिळग्यौ। साधू रै खनै टूटैडै तारा री एक छोटी-सी तंबूरी छाडै ही नौ नारायण री देह। डीघौ, पतळौ, चवडौ लिलाड, गऊं वरणौ रग, लबी करड-काबरी दाडी अर माथै ऊपर लटूरिया लटकै। सभाव हौ सिनकी। धुन मैं बैठग्यौ तौ बैठग्यौ, जीमलियौ तौ जीमलियौ अर न्हाय लियौ तौ न्हाय लियौ। पैरणनै, गोडा साईनौ भगवौ चोळौ हौ अर हौ एक कच्छौ। लोगा सू ठा पडरणौ सू, कै, औ, दिन-भर सू भूखौ बैठौ है, गोलू माराज, बैनै, आपरै लारै चालण री कैयौ। इयै सिनकी बाबै कैयौ– को चालूनी मनै थांरी कंई परवा है ?

गोलू माराज कैयौ– थाँनै तौ कायनी बाबा, पण, मनै तौ थांरी है। चालौ, हुयलौ आगै।

'नही चलता बोल क्या करलेसी ?'

'करसू क्या, थांनै ले जासूं ।'

'जोरामरदी, बिना म्हारी मरजी !

'तौ, अठै ई, खावण नै पूगाय देवां, अठै ई अरोग लिया ।'

'क्यों, थारै बाप रौ कंई दैणौ है ? ना अठै खाऊं अर ना सागै हालू ।'

'आ तौ काकर हो सकै है ? कंई तौ खावणौ ई पड़सी । नही तौ सिपाई नै बुलाय लाऊंला ।'

'अरे ! सिपाई नै मती लाये, हाथ जोड़ूं हूं !!'

'तो सीधा-सीधा म्हारै लारै टुर बयीर होवौ ।'

'नही-नही-नही ! जा बुलाला सिपाई नै !' हूं दोनां नै ठोकूला !!'

गोलू माराज पक्का मसकरा हा ई । झाल लिया बाबै रा दोये हाथ अर ताण लियौ आपरै खानी ।

बाबा राम हाथ छोडाय'र भागा । लारै-लारै छोरा ताळचां पीटता दौड़िया !

गोलू माराज हाकौ कियौ— कपडौ-कपडौ । सांमै आंवतै, एक जणै, बावै नै, जोर सू कपड लियौ । इत्तै मै गोलूजी जाय पूग्या । बाबै आव देखीयौ न ताव, सिनक मै एक-एक लप्पड़ दोनां रै जमाय दियौ । गोलूजी हा गमवाळा, हंस'र बोलिया— छेड़-सी जिको मार ई खासी । आ कैय'र कांकर ई, बे, बावै नै, आपरी दुकान लेयग्या ।

गोलूजी री दुकान में खासी मंडळी जुडती ही । सगळै जीवतै-जी रा हा । एक हा मोवन माराज जिकै लवर एक रा मसकरा हा । बा पूछियौ– बाबा ! थारौ नाव क्या है ?

'चलबे, को बताऊनी ।'

'बतावणौ तौ पडैई ला, नही जणै तवूरी खोस लूला ।'

'थारै बाप रौ माथौ !'

'जद तौ घर री ई बात ठैरी । आ कैय'र मोवनजी दाड़ी रै हाथ लगाय'र पूछियौ– औ घास क्यो वधाय राखियौ है ?'

'तनै क्या पडी, लै, कैय'र बावै आप रौ हाथ मोवनजी रै माथै ऊपर दे मारियौ ।

सगळै हंसण लाग ग्या । मोवनजी हस'र कैयौ– गोलूजी ! अबकाळै तौ उदबुदौ जिनावर कपड लाया !

गोलूजी बोलिया– औ तौ, म्हारै, पूरबलै पुन्ना रौ फळ है, जिकौ, इसी विचितर मूरती हाथ लागी है ।

मोवनजी पूछियौ– इय लगूर रौ नाव क्या है ?

गोलूजी कैयौ– नाव तौ आपा सगळा भेळा होय'र कढांसा । बै दिन मितर-मडळी नै माल ठोकाऊला ।

घरणी आछी, कैय'र मोवनजी टुरग्या दफतर ।

बावै नै, दूकान में रैवतै, तीन महीना हुयग्या । गोलूजी मसखरा तौ हा ही, पण, हिरदै रा दयाळू हा । दोये बेळा घर सू रोटी लाय'र बावै नै जीमावता अर चाय पावता ।

बावौ, सगळा रौ, खेलूणौ हौ । जचती जिकौ ई थोड़ौ छेड़ लेंवतौ अर इनाम मैं गाळ या थाप खाय लेवतौ ।

पाठक ! आप साधू बावौ कैंवतै सुण'र आ सोचता होवौला, कै, आ जीवती मूर्ती जप-तप ई करती होसी ? भला इयां रै जप तप सू लेखौ ई क्या ! ऐ तौ कोरा लक्कड़-फक्कड़ राम हा। छेड़िया मूडौ खोलता, नहीं जणे, चूच सीया बैठा रैंवता। हां, गोलू माराज ऊपर दया कर'र वजार सूं सवदौ-सूत लाय देवता। पण दे आवता च्याराना री जागा आठाना। गोलूजी पूछता– बाकी च्यारानां री क्या हुयौ। तौ लक्कड़राम, लक्कड़ उथळौ देवता– मनै क्या ठा। क्यौ भेजियौ हौ मनै, भख मारग नै ! गोलूजी सुण'र हंस देंवता। कदैई कैंवता, इसा परलेरै जीवा री सेवा ई साची सेवा है।

आज अदीतवार हौ। सगळा नै छुट्टी ही। दुपारै गोलूजी एक-दो भजन सुणाया। पछै मडी तास। इत्तै मैं मोवनजी रै खुळखुळी चाली। पूछियौ– बाबौ किठै है ?

लोग बाबै नै डागळै ऊपर सू घीस लाया लात, लप्पड सेवता।

अबै, आ तै हुई, कै, इण उदबुदै जीव रौ आज ई नाव काढ दियौ जावै।

एक जणौ भागौ दरजी री दूकान, नवौ चोळौ अर नवौ कच्छौ सीवावण नै। वीजौ, घसण लागौ चंनण। अर तीजौ ऊनी पाणी करण लागौ। चौथौ दौडियौ फूल-माळा लावण। पाचवौ अगूछौ अर साबण ले आयौ।

अबै, बाबै नै, धीगाणै पटक'र बैरै सरीर ऊपर मालस करणी सरू की, गोलूजी अर मोवनजी।

मालस हुयां पछै, दोय जरणा लागा नहावरण। हाथ पग पछाड़ता, बाबै, इयै अचानक आयोडी विपत रौ सामनौ कियौ। मोकळी मैल उतरी। इया तीन महीना मै, बाबै एक-दिन सरीर रै पारणी को लगायौ हौ नी।

न्हाय-धोय'र त्यार होवरणै पर, लिलाड माथै चनण चीरच्चियौ गयौ। गळै मै फूल माळा पैरायी। घरणी-सारी मिठाई मंगाई। मौ'लै रै टाबरां री भीड तमासा देखरण नै भेळी हुयगी। सगळा नै मिठाई बाटी।

अब आई नाव काढण री बारी।

एक बोलियौ– 'फक्कड़राम' नाव राखौ।

बीजौ– नही 'लक्कडराम'।

तीजौ– नही भाई, 'पत्थरराम'।

चौथा– नही भायला, 'मस्तराम'।

पाचवौ– अरे नही भाई, 'गैलूराम'।

छठौ– नहीजी, 'सिडबगीराम'।

सातवौ– जच्चियौ कोयनी, 'मनमौजीराम'।

इत्तै मै मोवनजी कैयौ– था सगळा नै नांव काढणौ आवै कोयनी। मनै पूछता हुवौ, तौ, हूं, एक ईज बात कैऊं। सरत आ है, सगळा नै म्हारी बात मानणी पड़ैला।

सगळै बोलिया– ठीक-ठीक। थे जात रा ई, पुरोयत हौ, कौ जल्दी कौ।

मोवनजी हंस'र कैयौ– कैय दू, एक ई बात ? बीजी बार नही कैऊंला, हा।

गोलूजी कैयौं– कैवैनी, क्या मूरत कढ़ावरणौ पड़सी।

मोवनजी बोलिया– नाव राखौ 'कळटूट बाबौ' क्यों है नी सगळा रै परसन ? मंजूर ?

सगळै हसिया– हा–हा–हा–ही–ही–ही ! पछै कैयौ– परसन– सोळाना परसन !

पिडतजी बोलिया– नाव अललमटललम कोयनी, सार्थक है ।

मोवनजी पूछियौ– कांकर ?

पिडतजी कैयौ– इण रा केई अर्थ निकळै है ।

(१) 'कळटूट'– मैनै, इया नै रचण रै बाद विधाता री कळ टूटगी ही ।

(२) 'कळटूट'– मैनै, कळ टूटिया पछै बिना राछां रै, बिधाता, मनघडत तौर पर, बिना ध्यान दिया इयानै घड़िया ।

(३) 'कळटूट'– मैनै, कळ अर्थात् चतराई इया नै घडण मै ई, विधाता, पूरी, खरच करदी । फेर, इण विचार सू, कै, भूल सू, इसौ फेर नही घड़ीज जावै, विधाता कळ तोड नाखी ।

(४) 'कळटूट'– मैनै, 'फक्कड'–'मस्त' ।

ठीक है-ठीक है कैय'र, पिडतजी री व्याख्या सुण'र सगळां इण नाव नै मजूर कर लियौ ।

पण मोवनजी ठैरिया मसकरा रा सिरदार । वे भला अठै ई इण परब नै पूरौ करणौ थोडै ई चावता हा। बोलिया– इण मौकै ऊपर मगळीक गावणौ होवणौ जोयीजै । 'कळटूट-बाबौ' इत्ता दिनां सू तबूरी रौ भार ढोंवतौ आय रयौ है । आज इण नै, गवाओ,

भगवान री घणी दया सू आज, बाबौ गावण नै राजी हुयग्यौ ।

एक– 'तबूरी रा तार, तौ टूटा पडिया है ?'

बीजौ– 'अरे। मन रै तारा साथै हाफेई अै सध'र मिळ जासी ।'

तीजौ– कौ'तौ भाज'र तार ले आऊँ ?

चौथौ– जित्तै ताई कळटूट बावै रै मन रा तार बिगड जावै जणै !

पाचवौ– ठीक कैवौ हौ-ठीक कैवौ हौ ।

कळटूट बावौ बोलियौ– अकल मारी गयी है ! वजार रा तार इयै मै भला लाग सकै है ! उल्लू कठैई रौ ! अै तौ नारदजी री तबूरी है !!

गोलूजी हस'र कैयौ– ठीक तौ है। देवतावा रा तार मिनखां रै वजार मै काकर लाध सकै है !

मोवनजी जूजळाय'र कैयौ– अरे भायला ! कई तरै गावण तौ दौ ?

एक– कूभार नही पकड ले जावै !

बीजौ– क्या आप रौ गधौ जाण'र !

कळटूट– तू गध्धौ– थारौ बाप गधौ !

सगळै नाभी सू हँसिया !!

अवै मोवनजी, कळटूट बावै नै हाथ जोड'र गावण री वेनती कीवी ।

कळटूट बावौ टूटोड़ तारा ने छेड़ण लागौ । गजब री सुरावट ! गजब रौ रस !!

बाबै मूडौ खोलियौ। अठीनै तंबूरी रा अणमेल सुर तौ उठीनै फाटोडै बांस दाई बाबै रौ कंठ ! दोयां रै मेळ सू अपूरब समौ बधग्यौ !!

सुर रै परभाव सू पंखेरू उडग्या। कुत्ता भूंकण लागग्या। सुणनिया रै काना माथै लोवार रै घण री 'ठें-ठें' चोटां जिसा सबद पडण लागा।

अरस मै ई रस बरस रयौ हौ ! रंग जम रयौ हौ !! सगळै हस रया हा– खिल रया हा ! सगळा रै मना मैं खुळ-खुळी चाल रयी ही।

गधा– मलार गावण रै १५ मिनटां पछै बाबै तंबूरी नै अर आपनै विसराम दियौ।

एक– गावणौ किसौ उदबुदौ हौ !

बीजौ– सुर मै कंई कमती मीठास हौ क्या ?

तीजौ– तो तंबूरी रा सुर गावणै मैं मिळ'र कई कमती इमरत बरसाय रया हा क्या ?

चौथौ– इसौ मौकौ बडै भागां सू मिळै है।

पाँचवौ– इसौ काठ रौ उल्लू ई कदैई-कदैई चीखै है !

बाबौ बिगडग्यौ। बोलियौ– कदैई बाप जमारै मैं गावणौ सुणियौ है ? गावणा जाणौ ई हौ ? समझौ ई हौ ? बताओ ? कित्ती लै जमी मैं बडै है अर कित्ती अकास मैं उडती फिरै है ?

बडै जोर सू ही-ही कर'र सगळै हँस दिया अर इण पवित्तर परब री अठै ई समापती हुयी।

८– मिनख-माईजी

कणै-कणै; क्या जाणै विधाता रौ ध्यान चूक जावै है जिकौ ऊधी-सूवी रचना कर बैठै है। बाईगट्टा मिनख अर मिनखगट्टी लुगाई इसी ई अेक चूक है। केई काळा-काळा भून अर केई कस री दाई थूड-रा-थूड पिराणिया नै काई कैसा ? इयाई, म्हारै भायलै मोडूराम नै घडती वेळा क्या जाणै बिधाता जाण-बूझ'र अर क्या जाणै भूल-भरम सू वैरै दाडी-मूछां चेपणी भूलग्या।

चाली-ढाली, बोली-चाली, सिकल-सूरत मैं वौ इसतरीलिग ई लागता हौ, पण हा असल मै पुलिग।

गळी-गवाड रा छोरा-छापरा, वैनै आवतौ देख'र ताळ्या बजाय'र जोर-जोर सू हाकौ करता– माईजी परसाद दौ-माईजी परसाद दौ। जणै वौ बारी सात पीढ्यॉ नै गाळ्यां काढ़तौ, लकडी लेय'र बारै लारै नाठतौ।

'काणौ बीन खावै नी, काणै बिना नीद आवै नी।' छोरा-छापरा, छेडणिया नही दीखता जणै कैवतौ– आज सगळै किठै मरग्या ? कोई दीखै ई कोयनी ?

रातनै, वौ अपजोडिया गीत या हरजस गाया करतौ, घट्टी फेरती वेळा।

कणैई, कुत्ता नै 'छू-छू' कर'र लड़ाया करतौ। कोई सैधौ-मैधौ खनकर बिना बतळाया निकळ जावतौ तौ कैवतौ– हा भाई ! बडा आदमी वणग्या। अबै म्हासू क्यों बोलसौ ?

एक दिन उतावळ मै हूं ई खनकर बैयग्यौ। फट्ट ई,

आप कैयौ ई— हा भाई ! थे कमाऊं, म्हे अण-कमाऊं। अबै म्हासू क्यों बोलसौ ?

सजोग सू, मोडूराम तौ, रोसनी रै खंभै खनै ऊभौ हौ अर म्हे लोग दडं रौ खेल देख'र आया हा। बैरै हाथ मै ही एक लाल गोथळी। कदास गोमुखी होवै ? म्हानै तौ अळगै सूं गोथळी ई लागी।

मै पूछियौ— ऊभा मोडू भाई ?

'नही तौ क्या नाचां ?'

'ऊभा कर क्या रैया हौ ?'

'देवा हां जणीता नै धोबा।'

'थेळी मै क्या घालियौ है ?'

'म्हारा अस्त, भळै कई पूछलै ?'

'नही माईजी।'

मोडूराम चिघ'र बौलियौ— देखौ पढियै-लिखियै री अकल मारी गयी ! ईयै नै हू 'माईजी' दीखू हू !!

इत्तै मै ई बादर-सेना क्या जाणै किठै सू आयगी ! हमैं क्या हौ ! लागा ताळचा पीट'र चिघावण— माईजी परसाद दौ—माईजी परसाद दौ।' मोडूराम भाठा उठाय'र बारै लारै नाठौ। सेना रौ एक बादर, बैरै, खाधै ऊपर सू अंगूछौ उतार'र बौ-जाय। 'ऊभौ'रै साळा', कैय'र मोडूराम उणगी दौड़ियौ। मारग माय एक रोड़ै सू ठोकर खाय'र पडियौ दिडणदाक। चारूखानीचित्त।

बौ उठियौ, जित्तै, हूं तौ हुयग्यौ सटक-सीताराम।

---

६ – ओळखाण

जूनै जमानै मै लोगां मै ऊँ ओछी ही। छोटौ पैरेग; छोटौ रैवास, छोटा ई नाव। हुणै दाई खण्डधज अर डिगबर वणिया फिरण मै वानै लाज अर सकौ आवनी।

जमानौ बदळियौ। फिरगी आया। वरगुखरा नै आपरै रंग मै रग लिया। फैसन री लै'र मैं छोटा-मोटा, लुगाई-टाबर सगळै वैयग्या। थोथौ आडवर, मोटा नाव, मोटी उपाध्यां, मोटी पण ज्ञान मै ओछी डिगरया अर भळै न जगां क्या-क्या ?

देखौनी म्हारै देखतै फळाणै सामी रौ वेटौ थोडी अंगरेजी, हिदी सीख'र जमी माथै पग ई को टेकै नी ? आपरौ नांव लिखै है– स्वामीजी श्री लस्टम पस्टम गटा टोप टंकार कोकळानद पुरी।

जूनै राजावा रा नाव-राव फलाणौ, राजा फलाणौ फलाणै सैर रौ, री जागा नवै राजावा रा नाव रवड दाई बधर उपाध्या सूधा गज-दो गज लवा हुया गया।

जणै ठाकर-सिरदार ई लारै क्यों रैवता हा ?

तौ ऊंठ चढ़िया एक सिरदार एक सैर मायकर निकळिया। बठै ऊभोड़ां सिरदारा खैगारौ कर'र वानै जै माताजी री कीवी।

पूछियौ– कीनै सू पधार रैया हौ ? आगै कूनै जावौला ?

उथळौ मिळियौ– विजैनगर सू आय रया हा । आगै…
सवाई जैपर जावांला । आप ?

म्हे डोढ़ी चूरू का । आप रौ नांव ?

'म्हारौ नांव– नारसिंह, मालकां । आपरौ ?

'(घरणै जोर सूँ खैगारौ कर'र) म्हारौ– नव नार, बारै चीता बीस हाथी, ऊपर दोय छावड़ा फू-फू करतै काळै नागां रा ।

'(जोर सू हंस'र)– वाह-वाह ! थे, जबरा हौ मालकां !! भलां, थांरी होड हुवै है !

'जै माताजी री सा ।'

'जै माताजी री सिरदारा ।'

१०— रोगी

ज्यौ ई बैदराजजी रौ इक्कौ हवेली नीचकर निकळियौ कै किणी हेलौ पाडियौ— थोडा माय पधारौ, भाइयै री नाड देखावणी है।

बैदराज हवेली मै बडिया। सेठाणी, पधारौ-सा कैय'र आसण बिछाय दियौ। पछै भाइयै री नाड देखण रौ कैयौ।

वैदराज नाड़ देखतां पूछियौ— क्या लखाइजै है ?

सेठाणी बोली— इया तौ कई को लखाइजै नी, भूख ओछी लागै है। रुच'र को जीमैनी। आप देख ई रया हौ मूडौ निकळ आयौ है' सूक'र काटौ हुयग्यौ है। !!

वैद जीब देखी, पेट देखियौ, मूडौ जोयौ। किणी तरै री खराबी लागी नही। बा माय ई मांय कयौ— लाई भाइयौ पाणी मै चिरणै दाई सूक रयौ है। हाजमौ ई इसौ खराब है, ज्यौ मोर रौ।

पछै सेठाणी नै कयौ— आ चटणी देऊ हूं। जीमणै रै पछै दोये वेळा दिया। खावण नै हळकौ दौ— आ'ई खीचड़-दाळ भात। मैदै-मावै री भारी चीज मत दिया।

सेठाणी पूछियौ— परेज ?

वैद कयौ— तेल, गुड़ अर खटाई रौ।

सेठाणी बोली— इयां रै तौ कदैई नैड-करई को जावैनी। तौ ई, काकर लाई री भूख मारी गई, समझ का पड़ैनी! दिनूगै सीराण करैं। जीमण री टैम थोड़ौ जीम लेवै। दुपारै; घणां नोरा काढां जणै दूध अर फळ ले लेवै। सिज्या नै बक-झक करां जणै ना-ना करतौ कासै बैठै अर गिणती रा गिरास लेय'र चणू कर देवै। रात नै, सूवती बेळा नोरा काढ़ता-काढता उथप जावा जणै जाय'र माडै-साडै अधसेरेक दूध जी रै ऊपर कर लेवै। क्या करूं हूं तौ इयै री बेमारी सूं हैरान हुयगी! इयै रै सरीर सामौ जोऊं जणै रोज आयां बिना को रैवैनी!!

वैद मन मैं कयौ— पछै क्या वैदराजजी नै खासी?

सेठाणी नै ढ़ाढस बंधावतौ बोलियौ— थे फिकर मत करौ। बिराजी मत होवौ। मईनौक म्हारी दवा पूगण तौ दौ पछै देखिया घोडै दाई हुय जावै'क नही!

सेठाणी गणका करती बोली— घणी आछी, वैदराजजी थांरा पग पूजसूं। भाइयौ सावळ हुय जासी तौ थानै आछी बधाई देसूं।

आपरी तौ सदा सूं म्हारै ऊपर किरपा है। आ कैय'र फीस लेय'र वैदराज चलतौ बणियौ।

११– चोर री चोरी

मोटै मिनखा री मोटी हवेली ही। पण समै रै फेर सू सौ'कंई नस्ट हुय चुकौ हौ ! जन अर धन री इती श्री होय'र, अबै, मोटै ढूढै मै, बिखै रा दिन तोडण सारू, लायण दो डोकरचा, बची ही। जिकी ना तौ पड़दै रै कारण वारै निकळ'र कई नै आपरौ दुख-दरद कैय सकती ही अर ना ई मोटै घर री होवरण सू भीख ई माग सकती ही।

सीयाळौ कोढ़ियौ मास। वारै खनै ओढण नै ही दोयां बीच एक झरझर कथा। पैरण नै ही दोयां वीच एक ई धोती।

एक दिन, बीतोड़ै सुख रै दिनां नै याद कर'र एक बीजी नै बिराजी होय'र कयौ– भाभीजी ! धोती विना कांकर काम चलसी ? बीजी ढाढस देंवती वोली– रोवो मत वाईजी, भगवान भली करसी।

मालम हुवै है कै, नारायण इणां री दुख री पुकार सुण'र ई चोरा नै इया री हवेली मे भेजिया।

मोटी हवेली देख'र चोरा बिचार कियौ कै इण मै मोकळौ धन बूरियोडौ होसी। डोकरचां खोद-खोद'र खावै है। नही तौ काम किया थकै है !

तो चोर मतौ कर'र रात नै बडग्या हवेली मै। अंधार-घोर। कानी-कानी धूड रा ढिगला।

एक बोलियौ– डोकरचा कंजूस'र, औदसावां है !

बीजौ हौ डौढ़ सैणौ। बोलियौ– तनै ठा कायनी।

कोई वैम नही करै इणसू घूडड़ै मैं धन बूर राखियौ है। पण, भायला, दाई सू पेट छानौ रै सकै है ? आपां सू तो पेट रौ पाणी ई छानौ को रै सकैनी ?

दोना हौळैसी मैणबत्ती जगाई। अंगूछा लपेट'र धोत्यां मोटी पेटी माथै मेल'दी। कुचरण लागा घूडोड़ौ। ढिगला कुचर लिया, कानी-कानी खाडा खोद'र जोय लियौ। पण फूटी कौडी ई हाथ का लागी नी।

अठीनै अै आपरै धधै मै लौलीन हा। उठीनै पेटी में सूतोडी डोकरचा ढकणौ ऊचौ कर'र लप-दैणी-सी दोये धोत्या माय सिरकायली।

चोर, थकियोडा, उथपियोडा, खिजियोडा पेटी खनै पूग'र धोत्या नै हाथ घालियौ तौ धोत्या कँवै म्हारै नैड़ा'ई मती आवौ ! दोया हैरानी सू एक बीजै रै सामौ जोयौ !!

इत्तै ई मै तो पेटी मै बैठोडी डोकरी वोली– भलांई आया बेटा। नाग्यां नै धोत्या तौ मिळी। अबै सिधावौ, भळै नवी घडायां बाजसी।

चोर घर मै छळ-छद जाण'र नाठी जीव लेय'र ! हड़बडाय'र भागा पिछोडै खानी ! बठै हौ ढकणौ बायरौ जंगी कुड। डभीड दैणी सौ दोयां डभीडौ बोलाय दियौ।

डभीड़ सुण'र पाडोसण पूछियौ– अै- कूण सभागिया काती न्हाया ?

चोरा दुखी होय'र कैयौ– भाग-फूटा जिकौ इण घर आया !

१२– साधू-सेवा

'धरम' सबद नै लेय'र संसार में बडी गडबडी मचियोडी है। धरम रै नाव ऊपर ई व्यक्ति व्यक्ति नैं, समाज समाज नैं अर देस देस नै निवावणौ चावै है। इण री व्याख्या सगळै मन हूकनी करै है। इण वास्तै एक री व्याख्या बीजै नैं दोरी ई मजूर हुवै है। आ खाचातणी जुगा सू चलती रयी है।

किठैई तौ 'धरम' रै नाव ऊपर 'अधरम' नै आसरौ दे दियौ जावै है। फळ औ हुवै है कै अनाचार, अत्याचार अर दुखा री बिरधी होवै है।

कैबत मै कैवै है– 'काया राख'र धरम राखणौ।' पण बरत-उपवास राखण वाळा इण सू ऊंधा चालै है। केई तौ हठ सू भूखा मरता मर जावै है।

केई तौ भरम'र उण वाता नै ई धरम मान लेवै है जिका सू बीजा नै कस्ट अर असभीतो हुवै। फळ ऊपर विचार किया बिना ई बे तौ मन मै सतोख मान लेवै है अर मान लेवै है करतब पाळण रौ सुख।

जणै धरम रौ असली सरूप क्या है औ जाणणौ घणी दोरौ है। इण धरम रौ तत्व तौ जाणै ऊडी गुफा रै माय लुकियोडौ है। सास्तरा रौ वचन है– 'महाजनो येन गतः सपन्था।'

तौ म्हारौ केळीभगत बाबौ सुखराम, दिन चढियां, उदर-पूरणा वास्तै बीजा नै पुन्न-धरम अर जस रौ लाभ

करावण सारू, मूंडै माथै कूकू-चनरण रा मांडरणा मांड'र एक गिळातडी मार बैरै नीचै दोनू खानी दो झोळ्या लटकाय'र एक हाथ मै इकतारौ अर बीजै मै खडताळ लियां, नितरै सैधै-पगा लागोड़ै मारगा ऊपर बिचर जावतौ।

दिन-भर मोकळी गळिया मै चक्कर लगाय'र, बियै दोयां झोळ्या नै ऊपर ताई भर लियां। परण आज कई सदा सू बैगौ हौ, हाल सिज्या का पड़ी हीनी।

जरणै सोचियौ अबै क्या करा ? लोभ कयौ– आटौ तौ काल ई काम आय जासी। आज किरणी भगत ने भळै धरम-पुन्न रौ मौकौ देय'र बैरै घरैई भोजन क्यो नही करलै ?

जरणै बाबौ, तुनतुनी बजावतौ अर भजन गांवतौ, इरणगी उणगी धरमातमा री खोज मै घूमरण लागौ।

म्हारौ देस तौ धरम प्राण हैई। पुरखां करतां इसतिरिया मै धरम री भावना बत्ती होवै है।

तौ एक डोकरी नै देख'र बाबै कयौ- आजतौ, माई भोजन करायदे। भूखौ आतमा नै पोखदे। भूखै नै भोजन करावरण सू थानै घरणौ पुन्न होसी। म्हे साधू लोग थारी जै बोलसा अर घरणी-धणी आसीस देसा।

माई ई धरम मै रंगीजियोडी ही। कयौ– माराज ! साधू किठै मिलरण नै पडिया है ! बडै भागां सू बांरा दरसण हुवै है। आप बार बैठ'र तौ परसाद क्यों पासौ ? मांय बरसाळी मै पधार-जावौ।

सीयाळौ मास, सिज्यां पडण वाळी। तीखी-टंटी हवा गूं हियौ हिले। बाबौ लाई ठंड सू कांप रयौ। पण तोई लोभ तौ छूटै नही।

बाबौ बरसाळी मैं वडियौ। माई बोली— आप असुध गळिया मैं दिन-भर भटकता रया हौ— कठैई कादौ-कीचड, किठैई असुध चीथडा अर किठैई विस्टा। परसाद तौ पवित्तर होय'र लेवणौ जोयीजै। अन्न-देवता नै असुध सरीर सू सपरस करण सू पाप लागै है। क्यो बाबा, था सू तौ आ बात छानी कोयनी ?

'बाबै कयौ— हा-हा, सुधता री थोडी ई होड हुवै है।

जणै हू पाणी लाऊं हूं, थे आगण मैं मोखी खनै विराज जावौ।

बाबौ उघाडै सरीर बैठौ कांपै। डोकरी, ऊपर सू बाल्टी भरियौ ठडौ पाणी ऊंधाय दियौ। लाइनै हवकौ चढग्यौ। ऊपर सू पवन रौ ठडौ झोलौ बयौ, जिकौ प्राण ई निकळणा बाकी रया।

खड़खडी छूटगी, दात बाजण लागग्या। बाबै सूकौ वस्तर मागियौ। डोकरी कयौ— हूं तौ गरीबणी हूं माराज। म्हारै खनै तौ अछूतौ सूकौ कपडौ कोयनी। थे थारै गीलै बस्तर नै निचोय'र पैर लौ, हवासू हणै फरकौ पड जासी।

पछै, डोकरी एक टाट रौ टुकडौ लाय'र बिछाय दियौ। बाबौ उण माथै धूजतौ-धूजतौ जाय बैठौ।

डोकरी ठंडी दाळ अर बाजरी रा दोय बासी सोगरा लाय'र पातळ रै टुकड़ै माथै मेल दिया। बाबौ लाई, ठैरियौ

वेदाती । कड़ा सोगरा कांकर चबै ? लंबी टैम तांई मूडै नै लवौ परिसरम देय'र, दाळ मै भिजोय'र दोरौ-सोरौ डौढ़ सोगरौ तौ, वै, पेट मै घाल लियौ । इणगी ठंडी हवा चलै उणगी सरीर माथै लीलौ वस्तर ग्रर ऊपर सूं तरमाल !

लाई चणू कर'र ज्यौ ई मौत रै मूडै माय सू भागण वाळौ ई हौ कै धरमात्मा माई भगती भाव सू बैनै हाथ जोड़िया । बोली– माराज ! हूं गरीबणी हूं । म्हारै सू भला क्या साधू सेवा बण सकती ही ? पण सगती सारू जिसी कंई वणी उणमै काण-कसर रयी हुवै तौ थे माफ करीजो ।

बाबौ चिघ'र बोलियौ– डोकरी ! थारी सेवा मैं तौ कंई काण कसर रयी कोय नी ! पण क्या जाणै क्यौ पापी प्राण ई इण देह रूपी जूनै पीजरै नै तोड़'र हालताई उडिया कोयनी !!

१३– खानदानी रजपूत

काळ री कूटियौ गरीबी री मारियौ, एक खानदानी रजपूत आपरौ देस छोड'र परदेस में जीवका ढूंढण नाखू नीसरियौ।

एक भलै सै सैर मैं पूगौ।

मोटी हवेली रै आगै एक मिनख नै बैठौ देख'र 'जै-माताजी री' की। पूछियौ– आ हवेली किण सिरदार री है? उथळौ मिळियौ– ठाकर रणवीरसिंगजी री।

सुण'र रजपूत माय ई मांय हुळसियौ अर सोचियौ– 'भैंस भैंस री सगी हुवै है।' अठै आपणौ काम जरूर बणती दीखै है। इण मिनख रै सागै माय ठाकरा नै इतला कराई अर रूबरू हाजर होवण रौ हुकम मंगवायौ।

मिनख पाछै आय'र कयौ– पधारौ, आपनै माय बुलावै है।

रजपूत मांय बड़ियौ। आगै देखै तौ ठाकर रणवीरसिंह जी, गोळ तकियै रै सायरै होकौ गुड़गुडावता बिराजिया है। अेडै-छेड़ै केई लोग बैठा है।

म्हारै रजपूत भाई हाथ जोड'र 'जै माताजी री' की। ठाकरां ई बदळै मै 'जै माताजी री' की अर बैठण रौ इसारौ कियौ। पछै पूछियौ—

'कुण सी साख मै ?'

'रजपूत' ?'

'किसा ?'

'सेखावत ।'

'कठै रा ?'

'सेखावाटी रा ।'

'के चावौ हौ ?'

'नोकरी ।'

'के जाणौ हौ ?'

'सौ कंई ।'

'(ऊचबै सू) कई बताग्रौ तौ खरी !

'घुड़सवारी ।'

'हूं ई जाणू हूं ।'

'सस्तर चलावणा ।'

'था सू बत्ता जाणू हूं ।'

'तिरणौ ग्रावै है ।'

'डूबू हूं ई कोयनी ।'

'भणियौ-गुणियौ हूं'

'ठोठ हूं ई कोयनी ।'

लाई रजपूत कायौ हुयग्यौ, खटाव को हुयौनी ! खिज'र बोलियौ– ठाकरां ! मनै ऐसी-री-तैसी करावणी ग्रावै है !!

ठाकर साव हा-हा कर'र हंस पड़िया !! कैयौ-जणै ग्राप म्हारै ˆ मजै सू रै सको हौ ।

१४- चौबेजी नै नौतौ

कंजूस जिसै पक्के जी रौ कोई को होवैनी । कित्ती ई वैनै पाटी पढावी, कित्ती ई समझावौ, कित्ती ई धरम-अधरम अर पाप-पुन्न री मेमा बताय वौ, पण पटनी मरत्तग री तौ वैरै जचे ई कोयनी । चोपड़िये घड़ै छांट को लागै नी ।

सेठ हीरालाल पक्कौ-दकदर कंजूस हौ । भगवान री दया सू धन मै वीजा करता फिरै हौ । पण मन रौ हौ माटौ ।

लोक घणा ई समझावता कै थारै ऊपर राम राजी है । धरम-पुन्न करौ । तीरथ-विरत करौ । वेवती वार मै ई हाथ नही रग सौ तौ फेर कद रंग सौ ? सरीर रौ क्या भरोसौ ? औ तौ नासवान है । दियौ-लियौ ई सागै चालसी । धन अठै ई धरियौ रै जासी । सगळा री सुणता, सुजळाई सू हंसतौ पण टस सू मस को होवतौ नी ।

कोई समझावतौ- सेठा आगोतर रौ विचार करौ । नही जणै जम-जातना सैवणी पड़ैला । उठै कोई आडौ को आवैला नी ?

जणै हस'र उथळौ देवतौ- मनै क्यो जातना सैवणी पड़सी ! मै जमराज रै बाप रौ क्या बिगाड़ियौ है ! पइसौ दोरौ घणौ कमायौ है ! बोड्यां सू झड़काय'र को लायौ नी !

खूंद रौ पाणी कियौ है ! दान-पुन्न मै फालतू गुमाय'र क्यों ब्याज रौ घाटौ सैवू ! पइसौ है जणै पूछ है। पइसौ है जणै सुख है। परलोक जासा जणै देखी जासी। मरियेडा मायलां हालताई तौ किणी समचार भेजियौ कोयनी ? पछै हू क्यों डरूं ? क्यो फालतू बात रौ विचार करूं ?

जमराज रौ, तौ, सेठ नै, जाबक डर को हौनी। पण सेठाणी सू वैरी ई काया कापती ही ! बा चडी रूप धारण करती जणै सेठ मिन्नी हुय जावतौ। बाजीगर रै बादरै दायी बैरै इसारै ऊपर नाचण लागतौ।

चौबे हरकिसोर रै मन मै, घणा दिना सू, आ जच रयी ही कै सेठ रै नैतियार बण'र बानै सागीड़ा हाथ देखावा ! घणी वार सेठ नै घेर'र कयौ— सेठ ! तेरी जय हो। एक रोज तौ घुटवा दे माल-ताल। छणवादै गहरी भग। तेरे कौन घाटा आता है ? हमारा आशीर्वाद लेगा तो जमना मइया की कृपा से निहाल हो जायगा।

सेठ सदा टाळ देवतौ। कैवतौ— माराज। म्हारी क्या बिसात जिकौ हू इत्तौ भार उठाय सकू ? थारै जिसा हाथी तौ राव-उमरावा रै मोटै घरां ढूकै तौई पौसावै।

इणगी सेठ चौबेजी नै हाथ ई नही धरण दै, तौ, उणगी चौबेजी सेठ री गैल छोडणी चावै नही। दोनू आपरी बात माथै अड़ियोडा। 'बाई बत्तीसी तौ बीरौ छत्तीसौ' !

छेकड चौबेजी नै रस्तौ लाधौ। बां पतौ लगाय लियौ कै सेठ रौ कोई गुरु है तौ सेठाणी है। अब, बे, सेठ नै छोड'र सेठाणी रै लारै पड़ग्या। लागा बिड़दावन— तू तो साक्षात

पुण्य की मूर्ति है। लक्ष्मी का अवतार है। तेरे ही पुण्य से तो सेठ फलता-फूलता है। जमना मैया सदा तेरी जय रखे। हमने तो तेरे जैसी सती, और उदार स्त्री कही नही देखी !

छेकड़ चौबेजी री जीत हुई— मनोरथ सिध्ध हुयौ।

चौबेजी लगाय तिलक-छापा अर जाय पूगा टेमसर हवेली। सेठाणी, खुद, हेत सू पुरसण लागी। थाळी मैं लाडू पुरसै'र नही ! भळै पुरसै भळै नही ! आंधै कूवै मैं जाणै भाठा नाखै !! सेठाणी रा छक्का छोडाय दिया ! पूरा दो घंटा आसण ऊपर डटिया रैया। हमै तौ उठण मैं ई कस्ट होवण लागी।

सेठ मांय ई माय घणौ दोरौ ! घणौ ई बाठीजै पण लाई रौ जोर चलै नही !!

एक, बीजौ डर, सेठ नै इयै बात री लाग रयौ हौ कै चौबेजी गाडौ भर खायौ है किठैई इसी नही हुय जावै जिकौ अठै'ई चोळौ छोड़ देवै !

बौ दौड'र पाचक-चूरण लायौ। खाटै री गोळचां लायौ। कैयौ— माराज ! जी-दोरौ होवतौ होवेला ? चूरण खायलौ। खाटै री गोळचा ले लौ ?

चौबेजी मस्ताई सू बोलिया— गोळी दे किसी मूजी के-बैरी-दुस्मी कै। हमारे क्यों ?

'नही माराज। हाजमा है। दो-च्यार गोळचां खाय लेसौ तौ खायौ-पियौ पच जासी।'

'अरे लाला ! भला गोली रखने ही को जगह होती तो चार लडुवा ही न और धर लेते !!

१५- पगरखी

गांव मैं एक वोदौ झूंपड़ौ। बार'कर कांटा री ऊंची-ऊंची वाड़। झूपड़ै मायलौ बैठौ मिनख दीखै नही।

मंगतू मोची जूत्या बणावै।

एक लव-तडंग मूरती, वाड़ रै ऊपर कर झाखौ घाल'र पूछियौ- मंगतूड़ा! म्हारै पग री जोड़ी मिळसी रे?

मंगतू नरमी सू उथळौ दियौ- माराज, ऊंठ सूं उतर'र माय तौ पधारौ। देखू काई वणियोडी जोड़ी ढूक जावै तौ?

माराज कयौ- ऊंठ ऊपर कुण थारौ बाप है? हूं तौ पगां माथै ऊभौ हूं।

मंगतू वारै आयौ। आख्यां फाड़'र जोवण लागौ! आंख्यां फाटोडी ई रैयगी! पूरी सात फीट री देह!! मंगतू हाथ जोड़'र कैयौ- फोड़ा ना देखौ माराज! आप रै पगां री जोड़ी म्हारै खनै को मिळै नी! सिधावौ!!

१७-- गवैय

माईता रै समै री जूनी हवेली जिकै मैं एक कंजूस सेठ रैवै। मोटी दोल,मोटी दाड़ी, अर मोटै गोळ तकियै रै सायरै सुख सू वैठौ।

निसीब रौ मारियौ एक आछौ गवैयौ मोटी हवेली देख'र मांय वडियौ। अदव सूं हाथ जोड़िया, जै रामजी री कीवी।

सेठ कंजूस तौ हौ,अर मसकरौ फेर बताई मै। मुळक'र वदळै मैं जै रामजी री कीवी !

गवैयौ बोलियौ अठै कंई परसंग सूं आवणौ बणग्यौ। देखियौ आये भाड़ै अठै रै वडै आदमियां रा दरसण करता चालां। आपरौ नांव सुणियौ। दरसण नै आयग्यौ। गुणियां री कदर पारखी ई जाणै। मै संगीत विद्या रौ अभ्यास कियौ है। इग्या हुवै तौ कोई भली-सी चीजा सुणाऊं ?

सेठ कयौ, मरजी थांरी। हूं हां ना कांकर कैऊं ?

गवैयै नै गांवता दो-तीन घंटा हुयग्या। सेठ टस सूं मस को होयौनी। पाणी, पान-बीड़ी रौ ई नोरौ को काढियौ नी !

गवैयै गम राखी। सेठां रै सामौ आसा सूं जोयौ। धण लागौ।

सेठजी मुळक'र बोलिया—चीजा तो चोखी-चोखी सुणाई । थांरी सेवा-सन्मान हूं जरूर करतो, पण थांरा निसीब थांनै पोचा लागा । मनै इत्ती ताळ दाढी मांयै हाथ फेरतै हुयगी, थांरै भाग सूं एक केस ई को झड़ियोनी !

गवैयै सुण'र समझ लियौ इण तिलां मैं तेल कोयनी ! चिघ'र कैयौ— सेठा ! निसीब री तो जगै ठा पड़ती जद थांरी तो होंवती दाड़ी अर बंदै रा होंवता हाथ ।।

~~~
~~~

१८-- हकीमजी

ठंडै मुलक रै रैवणियै एक हकीमजी रा भाग भूवाळी दिया, जिको, वे कमावण नै मरु-भोम मै पधारिया ! सेरवानी; सूथण, चसमौ, घड़ी अर छड़ी रै ठाठ छाड़ै खनै इत्ती गुजायस को ही नी कै किणी सैर मै दवा-खानौ खोलता । जणै एक गांव मै जाय'र अडगौ रोपियौ ।

उठै पक्का घर किठै पडिया हा ! एक झूपडौ मिळियौ जिकै मै दवाखानौ खोलियौ । चौफेर रोही ई रोही अर लू रा लपट्टा चलै ! खीरा उछळै ! लाय बरसै !!

लाई अधमरियौ हुयग्यौ ! मन ई मन पछतायौ कै किठै आय पडिया ! मरिया जिकै मै फेर न सार !

इत्तै मै ई हकीमजी रै माथै ऊपर धूड़ पडी । हकीमजी खिज'र बोलिया-- तोबा-तोबा खुदा की मार ! क्या माजरा है ? वे उठ'र इणगी-उणगी जोवण लागा । लू रै लपट्टां सूं गाल लाल हुयग्या !

झूपड़ौ ही बोदौ । घणी सारी चिड्यां रै एक सागै बैठण सूं धूड़ पड़ी ही ।

कपड़ा झड़कायर बड़बड़ांवता हकीमजी पाछा जागा माथै जाय बैठा । अबकळै मोकळी-सारी रेत भळै माथै

ऊपर वरसी ।

धूड़ भड़कांवता— भड़कावता हकीमजी सोचतां— आखिर है क्या आफत ! हड़बड़ाय'र उठिया अर मूंडो काढ'र जोवण लागा ! आगै देखै तो एक बाज पखेरू भूंडै माथै बैठो है ! वैंरं झपफ-दैणी री बैठण सूं धूड़ पड़ी ही !

हकीमजी ळुळ'र वैनै सिलाम कीवी । कह्यो— आदाब अर्ज हजूर ! आपनै कदम-रंजा फरमाने की भला क्यों तकलीफ गवारा की ! इस नाचीज की जान लेने के लिए तो ये चिड़ियां ही काफी थी !!

१९— नर-हथी

काम करतां-करतां कुण को थकै नी ? राजा-रईस, अमीर-उमराव, गरीब-फकीर सगळै थक जावै है । कडी खसत करणियौ करसौ'ई लाई तपती लाय मै काम कियां पछै विसराम लैणौ चावै है । काळै ऊनाळै मै, भट्ठ खनै बैठ'र काम करणिया मजूरा नै ई छेकड थक'र सास खावणौ पड़ै है ।

म्हारा विधाता ई घडते-घडते एक दिन थक'र चूर हुयग्या । तौई बारै खनै मोकळौ बडौ पिड बाकी बंचग्यौ । उथप'र बा बैरी एक मोटी-सी काया घड़ नाखी । सोचियौ, सैसार मे, एक पसवाड़ै, एक सूड-पूछ बायरौ नर-हाथी ई पडियौ रैसी ।

म्हारा सेठ घासीराम उणी पिड सू घड़ीजिया हा हालण-चालण रै फोड़ै री बात तौ छोडौ, लाई नै सास लेवण मै ई ताण पड़तौ हौ ।

बुराई मै एक भलाई आ हुई कै खनै गैरी पूजी ही । घणा सा चाकर, तौ, खाली इयारी काया री चाकरी सारू ई राखियोड़ा हा ।

भाग सू एक चाकर इसौ मिळियौ जिकौ चलतौ-पुरजौ अर चोखौ मसकरी हौ । बैरौ नांव हौ मोती ।

एक दिन सगळां चाकरा मंडळी जोडी । मोती नै घेर'र कयौ– हालै नी भायला, आज सगळै घूमण चालां ।

'किठै ?'

'गणेस चौथ है कायनी ? गणेसजी रा दरसण करणनै ।'

'थे ई सिधावौ, मनै तौ नित ई गणेसजी रा दरसण हुवै है ।'

'अरे, उच्छौ देखसा ।'

'कै तो दियौ म्हारै घरै गणेस अर उच्छौ दोये है ।'

'अरे चालै कनी ? क्यो ओळावा लेवै है ?

'जणौ थोडा ठभौ । हू जित्तै ताई गणेस भगवान रै आगै, भोग री थाळी पुरस'र मेल दू ।'

सगळै हंसण लागा ।

मोती बाजोट माथै थाळी मेली । सेठजी रै जीमण बैठताई लारै सू धोती री लाग खुलगी । मोती हंसण लागौ ।

सेठ जीमणौ सरू कियौ । मोती मूडै मै कवा देवण लागौ । सेठ री दम उपड रयौ हौ । परसीणौ झर रयौ हौ !! मोती हस'र कयौ– सेठा कवा तौ तोड-तोड'र थानै हूं देऊं हूं पछै थे काकर सास भरीजौ हौ ।

सेठजी खिज'र उथळौ दियौ–मूरख, खावण-औगाळण रौ फोडौ मनै उठावणौ पडै नी ! वै मैमैनत का पडती होवैला नी !!

२०- गुळ रौ न्याव

दुनिया मैं गरीबी सगळां सूं भूंडी है। गरीब खानी कोई सीधी आख्या को जोवैनी। हरेक, बैनै, संतावणौ-खावणौ चावै है। सगळां री निजर, उण ऊपर, करड़ी रैवै है।

तौ, गुळ नै ई, लोगा संताय'र खाखौ-विलखौ कर दियौ! लाई, मूँडौ लुकाय'र बोरचा मैं जाय लुकियौ। तौई, जद कोई दूकान ऊपर सवदौ लेवण आंवतौ, गुळ खानी, ललचाई निजर सू जोयै विना को रैवतौ नी। केई तौ बोरी माय सूँ, बैनै, वाडौ-खाडौ कर'र पाधरौ मूंडै मैं मेल लेवता!

दुनियां मैं घणौ मीठौ होवणौ ई गुनौ है।

लाई, आछी-आछी जागावा न्याव करावण नै गयौ। रोयौ, विळविळ कियौ, अर आपरै सगळां सू अधकै संतावण-खाये जावण री सिकायत करी। पण औ कांई! बैनै देख'र, पचा री चट्ट ई नीवत बदळ जावती ही!

न्याव करणौ तौ अळगौ रयौ। खुद, बैनै खाय जावण सारू एक बीजै नै सैन करण लागता। लाई रौ जीव-बंचावणौ दोरौ हुय जावतौ!

सैसारी जीवां रै स्वारथ अर लोभ नै जोय'र, बैनै, सगळां सूं निरासा हुयगी। जद क्या करै? किठै जाय?

घरणौ दुख मैं, छेकड उपाव लाध'ई जावै है। बै सोचियौ– साचा न्यावकारी तौ फगत भगवान ई है। जणौ, उणांरै दरबार मैं पूग'र ई न्याव करावणौ जोयीजै।

तौ, लाई, सावस कर'र बडै-सू-बडै न्याई रै न्यायाळै मैं पूग्गौ।

भगवान भगत-मंडळी रै बीच मैं एक रतना-जडियै सिंगासण माथै बिराजमान हा। नारद, तुबरू प्रेम-मगन होय'र वीणा माथै इमरत सुरा मैं कीरतन कर रया हा! अपूरब सांती ही! धूप री मंद-मंद, मधरी सुगंद, मन नै मोय रयी ही! भगवान रै रूप रौ तौ कैवणौ ई कांई! जिण अग माथै दिस्टी जावती उठैई अटक जावती! आघी होवणी चांवती ई को ही नी!!

तौ, लाई गुळ उठै पूग'र सास्टाग डंडोत करी अर कीवी भगवान री अस्तूती।

भगवान, मंद-मंद मुळकिया अर गुळ खानी जोयौ।

गुळ हाथ जोड़'र वेनती कीवी– कुरणासागर! पैलीपोत तौ विधाता रै जुलम री हू फरियाद करूं हूं। बा, म्हांरै भाग मैं इयां क्यो लिखियौ कै हूं जिठै-किठै जाऊं, उठैई, बुरा-भला सगळै मनै खावण नै ई दौड़ै!

बांरै लेख रै परभाव सूं, मिनख-पिराणी तौ म्हारै खातर राखस ई नही– भड़भाखस बणग्या है ! बैवता ई मनै खाडौ-खोरौ कर'र, मूंडै मै मेल लेवणौ, तौ बारी वास्ता एक रम्मत हुयगी है। घणौ जुलम ऊपर उतरै जणौ बडै-बडै कडावा रै माय उकळतै घी मैं, मनै नाख'र म्हांरी दुरगती करै ! कैवै– मगळ-कामा मै गुड ई गळणौ जोयीजै ! भगवान ! जोवौ तौ खरी, म्हारै मरण'र बांरौ मंगळ !!

हूं दुनियां-भर मे, न्याव री खातर भटक आयौं, मनै किठैई न्याव को मिळियौनी।

आप दीनबंधू हौ, आप ई म्हारौ न्याव करौ। अर खावोकडै-चटोकड़ै मिनखा रै समाज नै डंड देवौ। विधाता रै ऊंधै लेखा माथै ई गौर फरमावौ, दयानिधान !

भगवान सुण'र बोलिया– गुळ ! थारी फरियाद तौ साव साची है। पण थारौ रूप अर मीठास अणचायै ई सगळा नै लोभी बणाय देवै है। आहाहा ! किसोक थारौ मीठास है !! तूं अठैसूं ई, भली-भली मे, भाग जावै तौं इण मे ईज थारी भलाई है। म्हारै मन मै ई आय रयी है कै न्याव करण सूं पैला, हूंई, तनै एकरसी चाख तौ लूं। आ कैय'र, भगवान, उठण लागा। गुळ तौ दिया ठोका बौ-जाय– बौ-जाय !

२१-- पगड़ी गयी भैंस रै पेट मैं

घूस अर खुसामद राम-बाण है जिकां री निसाणां कदेई चूकै कोयनी ।

जद खुद अल्ला मीया अर उणरै फरिस्ता नै इणां आगै निवणौ पडै है, तौ संसारी जीवां री तौ गिणती ई क्या ! नैवेद अर इस्तोतर पाठ सू, बां सू क्या नही करवायौ जाय सकै है ?

तौ म्हांरा घणा जाणीता-माणीता रियासती हाकम मो'ताजी, घणै ठाठ-बाट सू, मोटी हवेली मै रैवता हा ।

घर मैं राम राजी ही अर ही राज-दरबार मे पूछ ही ।

एक बार एक लैण-दैण रौ मुकदमौ वारी कचेड़ी मै आयौ । हाकम एक हफतै री तारीख घातदी । मुद्दई-मुद्दायला सुण'र घरै गया ।

मुद्दई हौ बौवार कुसळ अर जमानै साज । बौ, बीजै दिन, हाकम साब री हवेली पूगौ, बगल मै एक छोटी-सी गाठडी दाबियां ।

हाकम साब, गोळ तकियै रै सायरै आराम सू बैठा होकौ गुड़गुडाय रया हा । मुद्दई नीचै ळुळ'र सिलाम कीवी ।

हाकम पूछियौ– कौ भाई ! कांकर आवणौ हुयौ ?

मुद्दई नरमाई सू बेनती करी– म्हारौ नाव मिसरीमल है । मैं, हजूर री अदालत मैं, फतैचन्द माथै ५००) रौ दावौ कर राखियौ है । म्हारा रुपिया खरा है,हजूर । बौ नटै है,अर

अळूंजाळ घालै है। हूं सीधौ-साधौ मिनख हूं, हजूर री दया चावू हूं।

इत्तौ कैय'र वै कोटै रा बणियोडा डोरियै रा पांच बधका पेचा हाकम साब रै पगा खनै मेल दिया।

हाकम राजी होय'र कयौ– आछौ, जावौ। हूं थारौ ख्याल राखूला।

फतैचद नै, मिसरीमल रै हाकम साब री हवेली जावण री खड़क किणी विध लागगी।

मिसरीमल माय ई मांय फूलीजतौ घरै पूगौ! करण ढूकौ आपरी वहू रै आगै आपरी अकल री तारीफ– भाइयै री मां! देख, खाली पाच पेचा मै ई हाकम साब नै राजी कर'र आपांरै पख मै कर आयौ हू!!

फतैचद ई हाकम री हवेली रौ मारग लियौ। सागै एक भूरी भैंस लेंवतौ गयौ।

फतैचंद, मिसरीलाल करता अधकौ चलाक हौ। बौ हाकम साब रै खनै पूगौ। हाथ जोडिया, झुक'र सिलाम कीवी। बेनती कीवी– हजूर, भैंस मंगवायी ही जिको हाजर है। मोल पछै करलेसा। पैला आप कई दिन राख'र पताणलौ।

हाकम बैनै उणियारै सू ओळख लियौ। समझग्यौ भैंस लावण रौ भेद।

हाकम साब रै खनै बैठोडा मिनख हमै एक-एक कर'र खिसकण लागा। जद फतैचंद आपरौ नांव बताय'र अरज कीवी– हजूर! म्हारौ मामलौ आपरी अदलात मै है।

मिसरीमल, म्हारै ऊपर जूठौ दावौ कियौ है। किटैई हू गरीव फजूल मै मारियौ नही जाऊ!

हाकम घणौ राजी होय'र वोलियौ– इया कदेई को होवैनी। हूं पूरौ-पूरौ ख्याल राखसू।

फतैचद, सिलाम कर'र सिरकग्यौ।

तारीख पेसी आयी। पेसकार मुद्दई, मुद्दायलै नै हेलौ मरवायौ। दोनू हाजर हुया।

मुद्दई मिसरीमल, घडी-घडी आपरी पागडी माथे हाथ राख'र बेनती कीवी– हजूर, मा-वाप है। म्हारा रुपिया खरा लेवणा है। अबै म्हारी पागडी री लाज हजूर नै है!

हाकम बैरै खानी जोयौ अर भेद समझग्यौ।

थोडी ताळ पछै फतैचद अरज कीवी– हजूर, न्याई है। मिसरीमल म्हारै ऊपर साव जूठौ दावौ कियौ है। औ जाळियौ -पक्कौ जाळियौ है। गरीबनिवाज!

मिसरीमल चिघ'र कयौ– दावौ जूठौ वतावै है। रुपिया को परखियानी!! हजूर, 'दूध रौ दूध पाणी रौ पाणी करसी!' (पागडी माथै हाथ फेर'र) गरीब री पागडी री लाज राखसी!

हजूर सुण-गुण'र रौब सू वोलिया– दोनू बोला रैवौ। हू न्याव करू'ला। पागडी-वागडी हू को समझू नी! पागड़ी गयो भैस रै पेट मै!!

बीजै दिन मिसरीमल नै ठा पड़ी कै बैरौ दावौ खारज हुयग्यौ है।

२२- परचावणी

संसार मै तरै-तरै रै सरीर अर अकळवाळी खोपड्यां मिळै है। कई काळा-गोरा, केई माड़ा-मोटा, केई कुबध्धी-सुबुध्धी केई अैणा-सैणा, केई डौढ़-सैणा, केई टका बटीजियोडा, केई अकल रै अजीर्णवाळा, केई अगहीण, तौ केई बत्तै अंगवाळा। सगळा नै देखण स् इसी लखावै है जाणै जगतपति जीवता जंतुवा रौ एक मोटौ अजबघर खोल राखियौ होवै!

म्हांरा स्यामू अंर रामू दो सागी भाई। पैलौ घर रै आंगण ताई, तौ बीजौ बारणै ताई भणियोड़ौ। पैलौ जरूरत सू ज्यादा सैणौ तौ बीजै दीसिया बारै बजियोडी। ना हीयै सू उपजै ना किणी रौ कयो करै।

बाप री ओस्था ढळगी। खेती-बाडी रौ धधौ स्यामू करै। घर रौ धंधौ अर माईता री टैल मै रामू रैवै।

गांव रै बारली दुनिया, दोना भाया सारू, जाबक अणजाणी! बे किठैई बीजी जागा जांवणौ चावै ई तौ नही!!

कुजोग सू एकरसी, नातै-गिन्नैवाळै रै घर मै एक कडी मौत हुयी! गांव मै त्राय फूटगी! सुणै जिकौई माथौ धूणै!! सानूभूती पिरगट करै!

राजस्थान मैं इसी रवाज है कै मरणियै रै घर आगै दस दिना ताई बैठक रैवै । समाज रा लोग सानूभूती अर दुख पिरगट करण नै उठै जावै । धीरज बधावै ।

इण नै 'परचावणी' कैवै ।

म्हारौ स्यामू भाई तौ खेत मै हौ । घर मैं हौ रामू । इयै रौ बठै जावणौ जरूरी हौ ।

तौ बाप रामू नै कयौ– रामू ! तनै ठा ई है कै सिवजी भाई रौ जवान मोटियार छोरौ खूट ग्यौ ! घणी खोटी हुई ! सिवजी भाई री एक आख फूटगी । तनै परचावणी करण नै जावणौ पडैला ! स्यामू तौ खेत मै है !

रामू पूछियौ– परचावणी काकर की जावै है, काकाजी ?

बाप कयौ– जा रै डफोळसख ! तनै इत्ती ई ठा कोयनी ? परचावणी करण रौ मुतलब दुख पिरगट करणौ है । आपारै मौ'लै रा बीजा लोग ई तौ जासी, बारै सागै तूई जाये परौ । जिया वे करै बिया ई तू कर लिये ।

तौ रामू सगळा रै सागै हुय लियौ । मूडा जित्ती ई बाता । मारग मै लोग तरै-तरै री बाता करण लागा ।

एक– शिवजी रै छोरैवाळी घणीई खोटी हुई ! लाई डोकरै रौ सायरौ जावतौ रयौ ! छोरी ई कांकर रंडापौ काढ़सी ! भगवान रै आगै किणी रौ जोर चालै कोयनी ! सुणी जद सू मन कळपै है !

बीजौ– देखौ, इया तौ मोटियार री मौत घणी ई खोटी हुवै है ! पण, जिकौ, निकमौ अर परवार रौ भार हुवै, उण रौ तौ, मरणौ जीवणौ समान ई है !

औ छोरौ ई डोकरै री छाती माथै ऊंधै घटोलियै सूं मूग दळतौ हौ। डोकरै नै, इण रौ, कंई सायरौ को हौनी। रुळियार हौ। खांवतौ अर रुळतौ। लाई डोकरै नै पइसां सारू तंग करतौ। पइसा नही मिळता जणै घर मैं कळै करतौ। भूखौ सूय जावतौ।

तीजौ– बार ई, लोका सू कजिया करतो। घर अर मौं'लै -वाळा इण सू उफतग्या हा।

चौथा– अरे भाई! इत्ती ई नही, गुणा रौ ई गंभीर हौ। पक्कौ हाथ उठाऊ हौ। निजर बची अर जिनस उडी। पापौ कटियौ मरग्यौ तौ! कदैई चोरी रै मामलै मै लाई डोकरै नै फसाय मारतौ!!

पांचवौ– जावण-दौनी। मरियोड़ै री निंदा करणी आछी कोयनी।

छठौ– आ निंदा तौ कायनी। आ तौ सोळै-आना साच है। साच नै आच क्या?

सातवौं– पण इण बाता सू लाभ? बौ तौ मरईग्यौ। खरौ-खोटौ किसौई हौ पण हो तौ बेटौ'क? मा-बाप रै हिरदै नै तौ कस्ट ई हुयौ! कैयौ है– 'कपूत बेटौ खाध नै तौ आडौ आवै।'

आठवौ– अरै म्हानै इण बाता सू क्या मुतळब? म्हांनै तौ रीतसर परचावणी करण जावणौ है।

बातां करता-करता औ, सिवजी रै घर-खानी टुरिया। केई वीच मैं नाड़ाछोड़ करण नै बैठग्या। उदास मूडै सूं सगळां

परचावणी की । थोड़ा ठैर'र एक जणौ खनै बैठोडै रै चूटियौ बोड़ियौ, अरथात उठणरी सैन कीवी । सगळै उठग्या ।

अबै बीजी मंडळी पूगी । रामू इणमैं हौ । रामू चूटियौ बोडतै तौ देखियौ बीजी पण बात सुणीजी कायनी ।

रामू रै परचावणी री खाथावळ लाग रयी ! मूरख तौ हो ई ! बडां सू पैला'ई बोल उठियौ– भाभा ! आपरौ छोरौ मरियौ तौ पापौ कटियौ ! चोर हौ– पक्कौ चोर । हणै सगळै इयांई कैवता हा । पिंडौ छूटियौ ! बलाय टळी ! आफत मिटी ! कुत्तौ जीवतौ रैंवतो तौ थानै परौ बंधावतौ !

लाई डोकरौ क्या उथळौ देवै ! मांय ई माय इणरी मूरखाई ऊपर पछताय'र रैयग्यौ !

रामू इया कैय'र खनलै मिनख रै चूंटियौ बोडियौ– बै चिघ'र कडी निजर सू इणरै सामौ जोयौ ! सगळै उठग्या । रस्तै मैं बै कयौ– रामू तूं बडौ मूरख है रे ! भला म्हारै चूटियौ क्यों बोडियौ ?

रामू बोलियौ– पैलावाळां कियौ जियाई मै कियौ । काकैजी, इयां कैयौ हौ'कै बीजा करै जियांई तू करै । म्हारौ इण मैं क्या दोस ?

घर पूग'र, जद, रामू आपरी अकल रौ डोकरै आगै बखाण कियौ, तौ, वे लाल-पीळा हुयग्या । बोलिया– तै तौ इत्ता वरस लेय'र धूड मैं नाख दिया ! अरे मरण वाळै रै बाप नै इया कैयौ जावै है ! भाभै कित्तौ बुरौ मानियौ होवैला ! कित्तौ दुख हुयौ होवैला !!

रात नै स्यामू घरै आयौ, जणां, डोकरै कयौ– आज तौ घणी बुरी हुयी ! रामू नै सिवजी भाई रै घरै परचावणी करण नै भेजियौ हौ । औ बांनै कैय आयौ– थारौ छोरौ चोर हौ, मरग्यौ तौ पिंडौ छूटियौ ! भला, इयां परचावणी करीजै है ? रामू कोरौ गधौ है, टकै-भर सऊर कोयनी !

स्यामू थोड़ौ गभीर होय'र बोलियौ– काकाजी ! थे इणनै, इसा कामां मै मत भेजिया करौ । औ मोथौ है । काल हू जाऊंला ।

डोकरै कैयौ– तो काल तू जरूर जाये । म्हारी तरफ सू, सिवजी भाई सू माफी मागे । कैये– रामू बेअकल है । थे उणरी बाता माथै ध्यान मत दिया । म्हानै माफ करीजो । आगै सू, इयै मूरख नै किठै ई को भेजा नी ।

तौ म्हारौ अकलवाळौ स्यामू भाई, बीजै दिन सिवजी काकै रै घरै परचावणी करण नै गयौ । मूडौ उतार'र, रामू ने, मूरख, गधौ कैय'र बोलियौ– हू तौ हौ खेत । काकौजी मादा पडिया है । लाचार होय'र रामूडै नै ईज भेजणौ पड़ियौ ।

हमै औ भाइयौ (मरियोडै है रै छोटोडै भाई खानी आंगळी कर'र) मरसी जणै हू ईज परचावणी करणनै आसूं । कदैई मूरख रामूडै नै को भेजू नी ।

बैठोडा सगळा आख्या फाड़'र इयैरै सामौ जोवण लागा ! अर अकलवान स्यामू सरै दैणी सू सिरकग्यौ ।

२३– हाजरियौ

एक हौ हाजरियौ । जात रौ डूम । दिन-भर अर आधी रात ताई रागोलिया करतौ फिरतौ । बड़ै आदमियां री हवेल्यां-हवेल्या भटकतौ । नित-नित आवण-जावण सू, वारै मूँढै लागग्यौ । अठीनै-वठीनै री, संर रै खूणै-खोचरा री, आछी-भूडी रपोटा लाय'र बानै सुणावतौ । टूकै मैं-एक चलतौ-अखबार हौ ।

काम-धंधौ कई करण जोगौ हौ ई कोयनी । काम-धधै बैंनै सूगाय दियौ हौ तौ बै काम-धधै नै तिलाजली देराखी ही ।

काळौ दिराय, झाडा भवारा, मूछा मूडायोडी, आख-नाक बेओपता, सरीर ऊपर गाभा वौरूपियै दायी । एक गुण हौ, गळै मैं घणी तौ नही पण कई सुरावट जरूर ही । मुसलमानी गजला, राजस्थानी माड अर देसी गीत वैवतौ ई गावतौ रैवतौ । सेठा रा खोटा-खरा सदेसा भुगताया करतौ ।

आज फलाणै रै घुडदौड है, आज फलाणै रै गोठ है, आज फलाणै रै बेटौ हुयौ है, आज फलाणै रै नन मोटर आई है, आज फलाणै चौक मै गोधा लडिया, आज फलाणी रांड नै फलाणौ ले भाग्गौ, आज फलाणै रौ घोड़ौ मरग्यौ, आज फलाणै रै नवौ घोडौ आयौ । ऐ ई रांड-निपूत्या करतौ अर टाकड़ै-तिवार माथै मिळियोडै इनाम-इकराम रै पइसां माथै मौज उडावतौ । रोटी तौ माइता रै परताप मिळ ई जावती ही । गाभा उतारू मिळ जावता । मीठौ-चूठौ, बड़ै आदमिया रै घर मैं रैवै ई है, इयैनै ई खेरौ-खंटौ मिळ जावतौ ।

इयै हाजरियै रौ नाव हौ बनियौ ।

एक दिन सेठ बखतावरमलजी, नींद सूं जाग'र उबासी लीवी तौ वनियै री काळी जीवती मूरती सामी ऊभी देखीजी।

माय तौ खिजिया कै पैलीपोत मंगळ दरसण कियां बिना ई इयै अळसेट भूत रौ मूडौ दीखग्यौ। पण हा औलादौला'र जीवतै-जी रा। हंस'र पूछियौ– बनिया ! आज क्या नवी रपोट लायौ रे ?

बनियै कैयौ– साय! आज तौ सेठ गजानंदजी रौ घोड़ौ मरग्यौ !

सेठ बोलिया– फोट राड रा काचा ! आ क्या बाप रै माथै री रपोट लायौ हैरे !

हाजरियौ मूडौ उतार'र बोलियौ– साय, घोड़ौ बधकै मोल रौ हौ।

'तौ रांड रा फूटा मालक रा ! मनै दिनूंगै ई दिनूंगै सुभ रपोट क्यों सुणाई !

'साय, रपोट तौ बड़ै आदमी रै घर री है।'

'काचा जापा, वडौ आदमी कूण है रे ? बे बडा है तौ आपरै घर मैं है। अठै कूण तनै बांसू छोटौ लागौ ?

'साय आप री·········

'(बात बोट'र) हूं ई म्हारै घर मै बडौ आदमी ई हूं। मनै बांरी क्या धार धारणी है ? डौढ़ रुपयै सेर रा गिल्यां जिसा सुरमवाळा बनासपती चा हूं ई ख हूं। पछै वे क्या चावळ-दा मैं सोनै मोरा रांधै है ?

जा, ाळौ मूंडौ कर। मनै इसी असुभ रपोट आगै सूं दियै।

२४– जीव-जोधां रौ जमघट

रामूजी हा अखाड़बाज । वारी बैठक मै मंडळी जमी ई रैंवती । लोगबाग आंवता जावता ई रैवता । पान-पत्तौ, जरदौ-चूनौ, होकौ-चिलम अर भांग-बूटी घोटण री सिला-लोढी, सगळी जिनसा ठावी लाधती । ठारियोडी मटक्या रौ वरफ जिसौ पाणी पीवण नै मिळतौ । गपसप करण नै संगळीवाळा मिळता । भळै मिनख नै क्या जोयीजै ?

भेळा होवणिया ई हा पुडी-पुडी रा । तरै-तरै रै पंथावाळा । कदैई आछी सतसग बण जावती तौ कदैई ई आपस मै चकमक झड़ जांवती । हारियौ दाव देवणियौ कोई को हौनी । हारणियौ ई आपरी टाग तौ ऊपर ई राखतौ !

इयां होवतै थका ई, हा लाई सगळै बिस बायरा सरप । कोरी जीबा री लपा-लपी ही । अर हौ थूक बिलोवणौ । सगळै भसणिया हा, खावणियौ एक ई को हौ नी ।

एक दिन मंडळी रा दोय जणा भिड़ पड़िया । एक हौ सनातनी तो बीजौ आरिया-समाजी ।

रामूजी, गोलूजी सू छेड़छाड करता बोलिया– गोलू भाई ! क्यौ कपड़ा सू बार आवौ हौ ? इसा पछै थारा भगतजी कोई सिघ तौ हा ई कोयनी जिकौ कई नै खाय जावता !

गोलूजी चिघ'र बोलिया– बोलौ-बोलौ रै रे खीचड़ै रा ठाव ! कोरी दोल ई छिटकाई है ! तूं तौ भगतजी री तसवीर रा ई दरसण कर लेवै तौ धोती भरदै !!

रामूजी हाथ जोड'र कैयौ– इसी बात हुवै जणै तौ न्याल ई को हुय जावा नी। (टाट मांय सू पांच रुपिया काढ़'र) श्रे पांच रुपिया झालौ । न्यार-बिन्यार मनै बारी तसबीर लायदौ ।

गोलूजी बोलिया– देखौ करम तत्ता हुया जिकै ! अरे कैऊं हूं धोती भर देवैला धोती !!

रामूजी वळतै में भळै पूळौ नाखियौ । कयौ-घर में घाणी अर तेली लुक्खौ खावै ! थांरै हाथ मे उपाव अर हूं दुख भुगतू ! मनै घणी कब्जी रैवै है । थांरै भगतजी री तस्वीर तारत में टाग देसू जिकौ खळकाय'र दस्त तौ लाग जासी । इत्ती आंगळियौ पुन्न तौ थे ई लेवौ ?

गोलूजी चिघ'र बोलिया– आघौ बळ । मसाण थारी मरणी तू ईज मर ! कब्जी है तौ जमालघोटौ लै । म्हारी खोपड़ी फालतू क्यो पचावै है !

मंडळी ही-ही-ही कर'र हंस पड़ी । अर धीरै-सुस्तै एक-एक कर'र प श्री फरं सी उडग्या ।

२५– कमायी री अटकळ

गरमी री रुत ग्वाड रा लोक, जीम-जूठ'र, पाटै माथै बैठा मजै सूं गुलछर्रा उडावै। बाता ई बाता मै चालू जमानै री चरचा चालगी।

एक बोलियौ– बाबाजी, बखत घणी भूडी है ! अठी नै
कमायी-कजाई पोची है ! उठी नै खरचा
दिन-दिन बधता जावै है !!

बाबाजी– तौ हाथ-पग चलावौ ? बत्ती कमायी करण
री डौळ करौ ? पण कमायी री अटकळ
हुवै है जिकी थे जाणौं ई कोयनी।

सुणिनियौं चुप हुयग्यौ, क्या बोलतौ ? बात साची ही। बाबाजी, चौक मैं बैठा ई दीखता अर खावण पैरण सूं ई सोरौ-सुखी हा ! तौ पछै इया खनै इसी क्या अटकळ है ! आ जाणन सारू केई जणा, बीजै दिन, लुक'र बारै लारै हुय लिया।

बाबाजी एक ग्वाड मै बडिया। मिट एक, एक घर रै सामा पग ठाभिया। इत्तै ई घर रौ बारणौ खुलियौ। बाबाजी, दब दैणी सी माय बड़ग्या। फट्टई आंगण मै आसण बिछा'र जमग्या। अर करण लागा जोर सूं ओंकार री धुनी।

घरवाळा देखता ई रैयग्या ! आसण बैठै बामण नै जावण रौ ई काकर कँवै ! संकोच सूं एक आनी तौ भेट करणी ई पड़ी।

बाबैजी किसौ घी बेचियौ है ? मिळियौ जित्तौ ई आछौ। न्हायी जितौई पुन्न।

भळै, चिपतै घर मै जाय वड़िया उठै, भाग सूं चांदी री चारानी मिळी । पछै, लैण सर सगळै घरा नै संभाळ लिया। घंटा दो-तीन मै नगद नारायण री एक ऊजळी मूरती जतन सूं ग्राट मै चाढ'र बावाजी टैमसर घरै ग्रायग्या ।

बीजे दिन, वावैजी रै तौ सागी ई डाडा सागी कुंवाड़ा ।

परा दुनिया मै एक-एक सूं सवाय पड़िया है । एक सेर तौ वीजौ सवा सेर ।

ग्राज. वावैजी मै घणी कोजी बीती । बागडी महेसरयां रै मौलै मैं, एक नामजादीक माखीचूस डोकरी रैवती ही । बावैजी सारै सैर नै चूर लियौ हौ पण डोकरी सूं बेई पासौ ई दैंवता रया । पण, ग्राज, मगज मै ऊंधी बैठी ! इसी पछै डोकरी क्या है जिकौ मनै ई नाच नचाय देसी ! मनै तिरी देखाय देसी ! हूं बैसूं क्या ग्रोछौ उतरणियौ हूं ! कंइ न कइ तौ भाड़ई लासूं– 'फोटौ पड़सी जिकौ घूड़ लेय'र ई उठासी' ।

टुरिया डोकरी रै घर खानी । पण पग कच्चा पड़ता हा । जी छाछ-पाणी करतौ हौ । धासती ही कै श्रीगरणेस मै ई डोकरी सूकाई नई टरकाय देवै ! सुगन बिगड़ जासी ! बरकत मेई हरकत हुय जासी !!

घड़तौ-भागतौ, छेकड़ उठैई पूगौ ।

डोकरी बाबैजी री साख–सोभा सुण राखी ही । बाई, मांय-मांय संकौ खावती ही कै, बाबाजी बाजीमार नही लेवै ?

तौ, बाबाजी श्राड मैं ऊभा मोकौ जोवण लागा । किणी काम सूं डोकरी, अठीनै-वठीनै जोय'र, हौळैसी'क बारणौ खोलियौ । बाबेजी रै मौज लङगी-मौकौ हाथ लागग्यौ !

दब दैग़ी सी बङग्या माय । आसण बिछावताई हाकै डोकरी आय ऊभी । मीठी मिसरी दाई बोली-धन भाग धन घडी आज जिकौ माराज म्हारौ घर पवितर कियौ । सगळा रै जावौ हौ, पण, म्हारै ऊपर कदैई मैर का करीनी ? आपरै मुखारबद सूं दोय हरि रा नाव हुई सुण लेवती ।

आप पैलीपोत पधारिया हौ तौ कई सेवाई सरूप मुजब ती होवणी जोयीजै ? हूं पाडोसण्यां नै हेलौ पाड लाऊं, थे थोड़ा बार ऊभौ । जोखमजत त्रिखरियोडी पडी है ।

माराज आयग्या फाकौ मैं । अठीनै बा पग बार धरियौ, उठीनै डोकरी फट्टदणीमी धोरी मवडै रै सगीन ताळौ जड़ दियौ । कयौ-हमै माराज घरै सिधावौ । औ नाक री डॉडी मारग पडियौ । भळै आवण री नॉव मती लिया नही जणै काई तीजी ई करूं'ली !

लारै सूं पाणी रा छॉटा नाखिया पाखती मैं ।

बावौजी मूडौ लटकाय'र, टुरियाई हा कै लारै लागोडा छोरा छीक करी— आक ..छी । ।

बाबैजी लारै जोयौ अर माय-ई-मांय बडबड़ाया— बदमास साळा लारै-लारै वळताहा दीखै ! पछै असगुन जाण'र पाधरौ घर रौ मारग ई लियौ ।

———

२६– मैम नद र

आज-काल रै जमानै मैं मैमानदारी ई, लोगां री वास्ता एक घणै कस्ट रौ कारण बणगी है। मैमान बणनियां नै भला इणरी क्या चिंता ? वांनै तौ, आराम सू, टैमसर चाय; भोजन अर पान-सिगरेट मिळ ई जावै है। नित तौ, गिस्ती रै घर मै साधारण भोजन बणै है अर जद मैमान पधारै है तौं उणा री खातर कंई अधकायी हुवै ई है। इयां नही करण सूं बदनामी हुवै। खनै हुवौ ना हुवौ, तिणखा आयोडी हुवौ ना हुवौ, मैमाना रै स्वागत मै तौ कंई कसर रैवणी नही जोयीजै।

पण संसार मैं भोळा-भला अर चतर-चलाक दोनू ई तरैं रा जीव वसै है।

लाई पैलड़ा आपरी सजनाई रै कारण कस्ट उठावै अर बीजा चतराई सू उण सू उबर जावै है।

तौ, म्हांरा, पिडत हरदानमल बीजी तरै रा जीव हा। हाथ ई को धरण देवता हा नी ! आप, केई-वार नथमल नै जोधपुर पधारण रौ नैतौ देय चुका हा। घडी-घडी लिखता–यार, कदैई तौ फुरसत काढ़'र आवौ इसौ ई भला क्या काम धंधौ ?

बांरै घणै आग्रह सू, नथमल, अबकाळी-वार, जोधपुर बयीर हुयग्या।

ठेसण ऊपर पूगा, पण हरदानमलजी उठै हाजर नहीं। जणै कई जरूरी काम सू किणी सू मिळण गया परा। अै सीधा-साधा अर भला हा। वा नथमलजी रै नकारी करणै पर ई, आपरै अठै बारी सामान उतार लियो। अर उठै ई न्हावण अर भोजन रौ बंदोबस्त कर दियौ। चाय उणी वेळा हाजर कर दी।

पं० नथमल बोलिया– हूं तौ असलमै पं० हरदानमल रै अठै आयौ हौ। बे ठेसण को पूगा नी। जणै सोचियौ पैला आपरा दरसण करलू पछै उठै जाईस परौ। पण थे तौ मनै छोडण रौ नाव ई को लेवौ नी? आज रौ दिन थांरै अठैई बीततौ दीखै है? काल सिज्या नै तौ मनै पाछौ जावणौ है। काल रौ दिन-दिन बाकी है।

फेर कयौ– मै हरदानमलजी नै तार दे दियौ हौ। क्या जाणै क्यौ ठेसण को पूगानी? हुय सकै है कै तार मौड़ौ पूगौ हुवै। वे बडी चिंता करता होसी।

आतिथेय बोलिया– आज हूं कही भाव ई जावण को देऊं नी। भला माणस! समय पायक तौ मिळणौ हुवै है। फेर था जिसा देवता-पुरस रौ मिळणौ तौ घर बैठै गिगा रौ पधारणौ है। आज रात आपा शरत् बाबू रौ 'खेल' देखण नै चालसा। हां काल भोजन कर लेवण रै बाद आप नै हरदान-मलजी रै घरै पूगाय दूला।

हरदानमलजी, भला, भोदा-भोळा थोड़े ई हा जिकौ ता करता?

बीजै दिन अै जावण लागा जणै अतिथेय इयां रौ सामान उठै ई रखवाय लियौ । कयौ– जावती बेळा दरसण ई को दे जावौनी क्या ?

तौ, म्हारा नथमल भाई, तागै मैं बैठ'र हरदानमलजी रै घरै पूगा ।

हरदानमलजी झट बार आया, छाती सू छाती लगाय'र मिळिया । अफसोस पिरगट कियौ कै तार देरी सू मिळियौ । गाडी री टैम टळ ही चुकी ही जणै हूं आपनै किठै जोंवतौ ? अंदाज सू दो-च्यार जागा गयौ ई पण कई खबर को लागीनी । हूं तौ हैरानी मै हौ कै क्या करू ? थांरै पधार जावण सूं म्हारी चिता मिटी ।

'थारी हुकम री तामील तौ करणी जोयीजती ही नी ?

'अरे नही सा । औ तौ आप रौ मोटापणौ है जिकौ पधार'र मनै किरतार्थ कियौ ।

'आप घणा मौड़ा पधारिया नी ? क्या भोजन तौ कर चुका ?

'हा सा । भोजन तौ कर चुकौ । आंवती आपरै अठै ई हो पण मारग मै फलाणै साब रोक लियौ ।

'आछौ कियौ । मितरा रौ मान राखणौ ई जोयीजै । जणै आवौ बाता करा ।'

खूब बातां करता रया, सिज्या पडगी । जणै हरदानमलजी कयौ– आज तौ कंई भाव ई को जावणदू नी ।'

'नही सा इयां मत करौ । नही जणै........

'क्या नही जणै ? मनै सेवा-सत्कार रौ मौकौ को देवौनी ?

'आप मानौ ई नहीं जणै काल-काल भळै ठेरणौ पडैला।

'सामान उठै ई क्यों छोड आया ?'

'हणै ले आसू ।'

'जणै बे आपनै भोजन कराया बिना थोडै ई आवण देवैला ?'

'संभव है ।'

'सभव नही, निसचै है । सायत रातनै ई वे नही आवण देवै ? खैर, काल तौ जरूर पधार ही जासो ?'

'क्यो नही, आपरी खातर तौ आयौ ई हूं ।'

'आ तौ आपरी दया है । पण डर लागै है कै आपरा बीजा मितर लोग, काल ई आपनै अठै भोजन नही करण देवै ? आप सू आग्रह टाळियौ जावै नही ? अर वे मानै नही ?

'सभव तौ कोयनी ?'

'अरे सा, सौ संभव है । दो-च्यारां नै तौ मैं ई आपरै पधारणै री इतला दे दीवी है । अर भळै कालवाळा सजन सैज मै ई मानणिया थोडै ई है ?

'देखी जासी ।'

'देखी क्या जासी, आ तौ सूझती बात है ।' कोई नही तौ, उणा सू मिलण पधार जावौला ? जणै, वे, थानै म्हांरै अठै आवण देवैला ?

'इयां हुयौ ई, तौ, सिज्यानै अठै ई भोजन करूंला ।'

'मनै तो गोळ लागै है। आप बडा आदमी हौ, म्हांरो काई वस चल सकै है सा ?

'नही-नही– अच्छा · देखां......

'सौ देखियोडौ है हणै तो ही।

'हा। एक गिलास ठंडै पाणी री तो मंगावौ ?

'ह-ह-ह-ह ! अरे साब ! अठै क्या आप बीकानेर 'देखियौ ! अठै गागर मै नही सागर मै जळ भरियौ रैवै है !! गुलाब सागर ....मारग मे ई'ताई। गुलाबसागर सू ताजौ ई पाणी छाण'र पीवांहां ! औं खनै ई रयौ सा, मारगौ मै ई।

तौ इण जुगती सूं, हरदानमलजी री 'हीग लागी ना फिटकडी, अर रंग चोखौ' लेय लियौ। सिज्या नै आप ई 'मिलणवाळै' रै घरै पूगग्या अर उठै सू परबारा नथमलजी नै गाड़ी चढ़ाय आया।

२७- नैतौ

गुरु परंपरा सू, ओझाजी माराज, म्हारा गुरु हा। मो'लै सगळै मै, इणारी नागायी री छाप ही। भणियोडा तौ घर रै आगण ताई ई दोरा होवैला। हा खोटी-खरी आपरौ नांव जरूर लिख लेंवता हा।

जजमानां रै घरै, ब्याव-सादी करावण नै, वे, कोई भाड़ै री पिडत ले जाया करता हा। आप रसोई मैं सायता करता। भेट-पूजापौ सगळौ आप लेता अर भाडेती पिडत नै खाली ठैरायोडा पइसा देवता।

खूब लंबौ-लाठौ काळौ सरीर बडी-बडी आख्या, जाडा भंवारा, बट घालियोड़ी मूंछा, गोडा साईनी धोती पगा मैं जाड़ा देसी जूत चर्र-मर्र-चर्र-मर्र करता। एक वार तौ भूत ई देखै तौ भैसाण खाय जावै !

भै किसी 'चिडी री नाव हैं' वे, जाणताई को हा नी। भै तौ कोई बासू ई भलाई खावौ ?

बारै मो'लै मै, सेठा रा ई घर हा। सगळै डरता 'डाकण नै मासी कैय'र 'अतळांवता' हा।

जजमानां री सेवा भावना अर सेठा रै नैता सू, वे, महीनै मै १० दिन ई घरै जीमता।

लैण-दैण री धंधौ धपटवौ करता। लोगा नै अकरै ब्याज सूं रुपिया ओधार तोलता। अडाणगत माथै ई रकम देंवता। इण तरै माया मै माया संदोरीजती ई ही, खरच करण री तौ कदैई कोई मौकौ भलाई आवौ।

माया मोकळी होवतै थकां ई, वे, आप नै गरीब ई कैया करता। पण लिखमी रौ परकास पडिया बिना थोडौ ई रेवतौ हौ ?

जजमाना सू वांनै, चोखी आय हो जावती। जिकै सू वारै खावण-पैरण रौ खरचौ निकळ जावतौ हौ।

वारौ, औ पक्कौ सिध्धात हौ कै 'विदया कठ नाणौ गंठ'। इण कारण, वे, खनली माया-मत्ता नै पराधीण करणी को चांवता हा नी।

रुपया राखण नै, वारै घरै कोई मजबूत तिजोरी बा संदूक का ही नी बैंक मै राखणा, वे, ठीक को समझता हा नी। 'साई री सौ कुदरत है' क्या जाणै कदैई काई अणहोणी हुय जायै तौ ? बैंक देवाळौ खळकाय देवै तौ ? तौ, वे, आपरी माया नै मटक्या मै राखता। मन मै आवती जणै ई संभाळ लेवता। चोर-उचक्का रौ, बानै रत्ती-भर ई डर को हौ नी। खनै एक लाठी कड्या री डाग राखता जिणरी अेक ई चोट मान्या रै दुसमणां नै खेत राखण मै सिमरथ ही। इया, रातनै, वानै, नीद ई कमती आवती ही।

भलाई कोई कित्तोई लाठौ क्यो हुवैनी, हुचकौ तौ रैवै ई ?

जजमानां नै ई ओधार देय'र बारौ काम चोखी तरै काढ़ देवता हा। बा ऊपर ई, आपरौ, घणौ किरयावर अर परभाव हौ। भेट-पूजा ई, बानै, बीजा सू सवाई मिळिया करती ही।

एक वार, एक सेठ, भूल सू, बानै नैतौ देणौ भूलग्यौ। ओझाजी माराज इसा काळा-पीळा हुया कै मत पूछौ बात! दुनिया तौ जीमण नै उळटगी अर लाई ओझाजी मन मारिया घरै बैठा रैवै?

बां, पैला आपरी बिरामणी नै एक वार भळै सावळ पूछियौ— साचं ई नैतौ को आयोनी? तू घर मैं नही हुवै अर सेठ रौ आदमी आडौ बद देख'र गयो परो होवै?

बिरामणी बोली— हू तो घर नै सूनौ का छोडूनी। आज तो, खासतोर सू, नैतं री उडीक मै घर मै ई ही।

'तै, कई रौ हेलौ सुणियौ हौ? पण तू काकर सुणती? थारै तौ कानसर बस्ती ई कायनी?'

'इया तौ हो सकै है।'

जद, ओझाजी, खीज'र आपरै छोरै-छोरी नै हेलौ पाड़ियौ।

छोरै नै पूछियौ— आज सेठ रौ नैतौ आयौ हौ क्यारै?

छोरै कैयौ— नही तौ।

ओझाजी रीस खाय'र बोलिया— तू घर मै टिकै ई तौ कोयनी। सारौ दिन रुळतौ फिरै है। तैमैं अकल होवती तौ घाटौई काय रौ? घर रै खनै-खनै को रमतौ नी?

अबै आई छोरी री वारी। बैनै धमकाय'र पूछियौ— तू दिन भर किठै मरी ही? बारै क्यो झख मारचा करै है? आज सेठ रौ नैतौ आयौ हौ क्या?

छोरी भेळी-भेळी होवती बोली— हूं तौ घर मै ई ही। मैं तौ नैतंवाळै नै को देखियौ नी।

कूडी किठै ई री, ओभाजी आंख्या काढ'र बोलिया। जरूर सेठ रौ नैतौ आयौ हौ। कदैई नही आवै भलां? बैनै, मौं'लै मैं वसणौ है'क नही? हूं म्हारै नांव सू ओळखीजूं हूं। थे सगळै वदमास अर बेपरवा हौ। इसै मौकै रौ ई ध्यान को राखौनी? म्हारौ विरम कैवै है नैतौ तियै काळ मै ई को टळै नी? दुनिया जीमै अर हूं बैठौ रैवूं! आ कदैई हु सकै है!!

पण ओभाजी री बक-भकरौं कंई सार निकाळियौनी। किणी तरै ठाई को पड़ीनी कै नैतौ आयौ हौ'क नही।

अवै क्या करै? बिना नैतै जावै ई कांकर? बिना जाया रयीजै ई कांकर?

बांरै माथै मै इण रै संबंध रै विचारां री घुड़दौड़ सी लागगी। माय ई मांय कणैई सेठ ऊपर रीस खावै तौ कणैई घरवाळां री मूरखाई अर बेपरवाई माथै बांठीजै!

छेकड़, विचारां री तागौ टूटौ। एक अटकळ सूभी। ओभाजी आपरै रामबाण अटकळ नै थोड़ी ठैर'र बापरण री सोची। जठै तांई एक साधारण चाल चली।

सेठ रौ पिछोकड़ौं ओभाजी रै घर रै चिपता-चिपत हौ। वे डागळै चढ़िया। आगै नस .'र जोवै तौ जीमण रा ठाठ लागोड़ा!

बां रसोइयां अर पुरसारां नै पूछियौ– आज क्या–क्या माल बणिया है ?

एक-आप क्यों मौडौ करौ हौ ? बैगा-बैगा, ऊनी-ऊनी रसोई रौ मजौ ई क्यों ले वौनी ?

ओझाजी कयौ- जीमण मै कित्ती'क देर है, आईज देखण नै ऊपर चढियौ हौ ।

बीजौ– तौ पधारौ कनी ? लोक तौ कदोकला जीमण लागग्या

'इसी म्हांनै क्यां परवा पड़ी है जिकौ आवा । सौ वार नोरा काढै जणै एक बार जावा ।

'नैतौ तौ पूगौई होसी ? इण मै तो क्या काव है ?

इसै फालतू नैतै सूं म्हे आवणिया कोयनी ? म्हे तौ घरवाळै रै नैतै सूं आवा !

'तौ म्हे सेठ नै आ बात कैवा ?'

'थारी खुसो, हू क्यो पालू हूं ?'

'सेठ है तौ वडौ लायक ! लाई काम-धधै मै भूलग्यौ होसी ?'

हां भाई! भूलण नै हूं ईज लाधौ । पाडोसी है नी जिकै सूं क्यों ? अरे औ लायक नही नालायक है । मुजळौ अर अंकारी है ।

अबै ओझाजी झुक'र देखियौ तौ बांनै खीर रौ कडावौ आपरी भीत रै ठीक नीचै पड़ियौ दीसियौ। वे फट्ट ई नीचै उतरिया अर छोरै री मा नै पावडौ-कुदाळौ लावण रौ कयौ। लागा खदाखद आपरी भीत खोदण।

रसोइया रौळौ कियौ? क्या टावराई करौ हो माराज? कड़ावा मै धूड़ पड़ै है नी?

तौ खिसकायलौ थारा कडावां नै? अठै कैनै थारै सेठ री धार धारणी है? घर री मरामत तौ करियां ई सरै?

लोग भागा सेठ खनै। सेठ मरामत रौ अरथ समझग्यौ। झट मुनीमजी नै भेज'र ओझाजी नै घरसगरी जीमण नै पधारण रौ कैवाय दियौ।

पछै तौ ओझाजी नै मरामत रौ काम बंद करणौई पडियौ।

लाई सेठ घणी लुळताई-लाचारी देखाई। घणा आवला-चावला किया। हाथां सूं, ओझाजी नै पुरस'र जीमाया। ऊपर सूं एक नगदनारायण दखणा मै दियौ।

भला बिरम तेज रै आगै सेठ री क्या जाड जिकौ टिक सकतौ!

२८— सावरण

इयै जमानै मै ई भोळा मिनख जावक नही मिळै इसी बात कायनी। ऊरणै-खूरणै मिळ ई जावै है।

म्हारै सेठां रै ई एक इसौ ई गाव रौ बध्घू नोकर हौ। सेठ हा जीवतै जीवांळा। मसखरी तौ तिरसिगजी सूं किया बिना चूकता को हानी। कोई नही मिळतो, तौ हाथ खरच नै नोकर-चाकर ई सही।

एक दिन सेठ साबरण रगड़-रगड'र देह चमकाय रया हा। गाववाळौ नोकर आख्या फाडिया टुग-टुग ऊभौ जोय रयौ हौ! सेठां नै चुळबुळी छूटी। पूछियौ—लिखमिया! क्या आख्या फाडिया जोवै रै?

'कइ नही सा।'

'अरे! कई तौ होवैला ईक?

'साबण री बट्टी··

'(बीच मे ई बात वोट'र) क्या इणनै खावरण री आमना है?

'खाऊं तौ के जाणै के हुवै! इतरौ बतादौ कै इरण सूं मैल तौ ऊतर जावै है'क?

'नही'रे भोळा! किरण कयौ इण सूं मैल ऊतरै है? अे तौ भागवानी रा चोचला है। बांनै तौ पइसा विगाड़ना'क? साची पूछै तौ, इण सूं उलटी दूणी मैल चढै है।

हां ना! सैणी बात है! थे कूड थोड़ै ई बोलौ हौ, कैयर लिखमियौ तौ आपरै काम लागौ। अर सेठ सेवा पूजा सारू मिंदर मै बड़ग्या।

२६- पोलस रौ धार

जमानै-जमानै री बातां हुवै है। एक समै देसी रयासतां मै इसौ हौ जद पोलस धींगामस्ती बरतती ही। कानून-कायदा खाली नाव करण नै हा। सगळा कायदा हा डंडै मै। चोरां गुढा री हीमत को पडती ही नी कै जनता नै छेडै-संतावै। 'राठोड़ी जूत' सूं डरता काया कांपती ही !!

हां, हाकम-मुसद्दी तौ आपरी मारी हलाल करता ई हा।

पछै जमानौ बदळियौ। जनता मै थोड़ी चेतना आई अर आई अंगरेजी राज रै परताप सूं लोगां मै चलाकी अर धूरतता। सगळा खानी सूं नेम-नेम, 'कायदौ-कानून' री दूवाई दरीजण लागी।

जणै, पोलस मैं ई सुधार री बारी आई। नवा कायदा कानून बणन लागा। एक पोलस रै अफसर नै भारत सूं बुलवायौ। कवाज करायीजण लागी। कानूनरी बातां सिपाया नै समजायीजण लागी।

म्हरां लंबा-तकड़ा जवान, एक बार तौ, इण नवै ढंग सूं चकराया ! लाई ठोठीड़ हा। अफसरां रै हुकम नै ई अै तौ कानून मानता हा। लाठी अर लांठाई सूं, पिरजा मैं अणजोयीजता अर अणहितकारी तत्वां नै किचर नांखता।

आपणी मातरी भासा राजस्थानी मै ई वानै सगळौ समजणौ अर समजावणौ पडतौ हौ। इण तरै सारौ काम सोरौ-सोरौ चल जांवतौ हौ। 'हम', 'तम', सूं वांरौ कंई वास्तौ को हौनी। न ही बे उणनै समभता हा।

नवा अफसर साब 'कठै' 'काई' को समभता हानी। सगळी बातां उणनै, बां लोगा नै समजावणी ही जिकानै 'काई', 'कठै', रै परबार बीजी भासा सुणन-समभण री अभ्यास को हौनी। इण कारण पग-पग मै अडचन होवती ही।

एक दिन, नवै, अफसर साव, पोलस रै जवाना नै एक लैण मै ऊभण रौ हुकम दियौ। सगळा तामील करी।

जद उणा एक सिपायी नै पूछियौ- अगर तुम्हारे हलके में से कोई आला अफ्सर गुजरे तो तुम क्या करोगे ?

सिपायी सिलाम कर'र कयौ- गुजरै तौ हाथो-हाथ बाळदां या बूरदा।

अफसर समजियौ कोयनी, बोलियौ- क्या बकते हो ? बीजे सिपायी नै पूछियौ—तुम बताओ, अगर हल्के मे से आला अफ्सर गुजरे तो ?

बैई सागी उथळौ दियौ-गुजरै तौ और क्या करा ? बाळदा या बूरदां।

साब चिघ'र तीजै नै पूछियौ- तुम बताओ?

"साब ! हिंदू हुवै तौ हाथो-हाथ बाळदा अर मुसळमान हुवै तौ बूरदा।"

साब पग पटकर कयौ-जाओ, भाग जाओ एक भी ठीक-ठीक नही समभता है, कैसे काम चलेगा !

३ – मूंडौ देख'र टीकौ

जीमाकिया रौ ई जबरौ काम हुवै है ! बारै पेट मै चोर गूजै दाई, चोर गोथळी हुवै है। नही जणै, गाडौ भरियौ खाय लेवण सू मिनखवाळै पेट रा तौ टुकड़ा उड़ जावै, थे-म्हे खाय'र देखौ देखा ! पेट फाट जावै क नी !!

अै जीमाकिया घरै कांकर धापै है !! उठै भखार खोल देवै तौ काकर काम चलै ! अै तौ परायै घरै ई हाण करै है। घरै तौ पथ ई लेवै है।

तौ, एक जागा, एक जान मै जीमाकिया रौ जोरदार जमावड़ौ जुडियौ। सगळै खूब हरखै ! खूब गुटकै ! सोचै– आज पेट पाधरा होसी। सळ निकळ सी। सगा नै दो हाथ देखा सा !

गुड्डी बैठी। तबोळ बची। पगधोवणी हुई। पाटा लागा। थाळ धरीजिया। पुरसारौ सरू हुयौ।

जीमाकिया री मडळी भेळी ई जमी ही।

पण औ काई पुरसारै मै दुरभात कांकर !

सगा रै घरवाळा जीमाकियां री नाबरी सुणराखी ही। बानै करणी ही रौळ ! इयै वास्ता चीजा ई खास तौर री बणाई ही। पूड़्या मै रुई, मटर री जागा सिसियै री मीगण्या रौ साग। सौरै री जागा थूळी-खांड।

जीमाकिया रा नसा पता ऊगोड़ा । माय लागी लाव-लाव अठीनै सगा रै घरवाळा छेड़-छाड़ करण ऊपर उतरग्या ।

तौ इयां रै थाळ मैं पुरसी थूळी । बीजा रै सीरौ । केई तौ नसै में थूली नै ई हाथ बतावणा सरू कर दिया । पण एक हौ बळ तोड़ खीरौ ! वेमू को रयौ गयौ नी !! वै पुरसारी सामौ जोय'र पूछियौ—मालका—

औरा नै तौ सीरौ पुरस्यौ

म्हानै पुरसी थूळी !

के तौ म्हारा करम पातळा !

के पुरसा री भूली ?

पुरसारी हो मीठी मसकरण अर हाजर जवाब । हंस'र उथळौ दियौ सगा—

ना तौ थारा करम पातळा

ना पुरसारी भूली

मूडौ देख'र टीकौ काढ़यौ

मार गबागब थूळी ।

३१- चींठी मैं भारूं को होसीनी ?

एक तौ इया ई गाववाळा भोळा हुवै भळै जाट ! लाई कद तौ सैर देखियौ ! काळ पड़ै'न गाव छोड़ै। बिखौ काटण सैर आया। सेठ रै मजूरी लागा।

लुगायी वासीदौ करै। विलाणौ बिलोवै। फोटा थापै। जाट गाया नै नीरै-दूवै। दिन-भर दानखानै मै बैठौ रैवै। भौळायौ काम-धंधौ कर देवै।

सेठ रोटी-कपडा अर १५) रौ महीणौ देवै। लाई बिखै रा दिन तोड़ै। कद समौ हुवै'र कद गाव जावै।

एक दिन सेठ कैयौ- धन्ना, भाज'र डाकखानै जा तौ ? आ चीठी लेजा। बाबू नै देदियै। पाछौ एक पुरजियौ देवै जिकौ ले आये।

धन्नै डाकखानै रौ उणियारौ तौ देखियौ हौ पण बठै'रै काम-धंधै सू वाकफ को हौ नी।

पूगौ डाकखानै। झलाई बाबू नै चीठी। बाबू फट चीठी नै तोल'र कैयौ- चिट्ठी भारी है, और टिकट लगाओ।

धन्नै रै गतागुम मै को आयानी ! चीठी नै भारूं बतावै है अर भळै कैवै है टिगस लगावौ !! बाबूडै मै अकल को दीखै नी ! भारूं भळै घणी भारूं को होसी नी !!

हमै, बैरै मन मै मावै नही ? कद कई नै पूछा अर कद बात रौ सळ निकळै ?

डाकखानै सू बार आय'र एक मिनख नै पूछियौ- इयां बाबूड़ां नै के रुजगार मिळै है ? लागै तौ कोरा मोथा ई है !

मिनख कैयौ- रुजगार तौ १२५) १५०) मिळतौ

होवैला । पक्की तौ ठा कोयनी ।

धन्नौ बावूडै नै सूरत्न आगो । [illegible] पाछौ हवेली ।

पूछियौ– सेठां ! बावूडा नै के [illegible] [illegible] है ?

सेठ हस'र पूछियौ– क्यों रे धन्ना ! [illegible] ?

'मेरे देवण नै तौ के है ? पण [illegible] नी [illegible] ई कोयनी ?'

'किया रे, धन्ना ?

'आप चीठी भेजी जिकी [illegible] । [illegible]– [illegible] है, भळे टिगस लगावौ ।

'तौ, लै लगाय दे ।'

'क्यां वेई ! टिगस लगाया चीठो भळै भारी को हुवैनी !! बावूडे की अकल नीसरी है !

सेठ हस'र कैयौ– आपा मूरखां सू क्यू माथौ लगावा ? आपानै काम काढणो'क ? ले, भळे टिगस चेपदे ।

धन्नौ उचबै भरीज'र बोलियौ– मेरै तौ को जचीनी ! क्यू टिगस फालतू गमावा !! आगलाई टिगस उत्तार'र चीठी हौळी करला । पछै इब्बै मै गेर देसा । के बावूड़ै की गरज है ? बावूडौ तौ ऊधमतियौ है !

सेठ कैयौ– नही रे धन्ना, 'सिलाम सट्टै क्यों मीयैंजी नै नाराज करा ।' इया सू नित काम पड़ै है । आपणा टिगस बेसी लागसी तौ लागो । 'समंदर मैं रैय'र मगरमच्छ सू क्यौ बैर विसावा ?

३२– बाबौ रघौदस

गाव मै एक हडमानजी रौ मिदर। पूजारी रै गुजारै खातर थोडी माफी लगाण री जमी। कई गाववाळा धरम रै लेखै देय देवता। दूध-दही-छाछ मागी मिळ जावती इण तरै हडमानजी रै पूजारी बाबै राघौदास रौ मजै सू गुजारौ होंवतौ हौ।

काळै सू धौळा ले लिया, पण बाबै तौ कदैई गांव छोड'र सैर रौ मूडौ ई को देखियौ हौ नी !

पाचै आगळचा ई एक सिरखी को होवै नी। गाव रै एक दुस्ट मिनख मिदरवाळी जमी रौ खासौ भाग दाब लियौ। केई बरसा ताई बाबै दाद-फिरयाद का कीनी। 'साळै नै हडमान बाबौ खाय जासी', दुरीसास देय'र संतोस कर लेवतौ।

पण जद हडमान बाबै इण दुस्ट माथै गदा नही चलाई तद बाबै रै खळबळी लागी। टुर पडियौ सैर खानी। ठोकदी दरखास्त।

डीघौ सरीर, पक्कौ रंग, धौळा-धपफ केस, तुकमतुक्का दाडकळी माथै ऊपर हाथ भर लंबौ टोपलौ, गोडा सू नीचौ मैलौ भगवौ चोळौ पगा मै कारचा लागोडा देसी जाडा जूत, गळै मै लबी बडी मिणियांवाळी माळा, लिलाड़ माथै रुपियै जित्तौ गोळ संदूर री मीडौ, एक हाथ मै खाधै सांइनी डांगडी

अर बीजै मै बौरखौ। जिलम-भर दफतरा रौ मूडौ देखियौ को हौनी, पैलीपोत आयौ। खाखौ-विलखौ हुयोड़ै !

हड़बडाय'र माय बडण लागौ कै चपरासी टोकियौ— किठै बडतौ जावै है ? दीखै कोयनी दफ्तर है, नानी री घर को है नी।

हाथ जोड'र बावै लाचारी सू बैनै राजी कियौ। बै, सामै बैठै एक मुसी नै आगळी सू बताय'र कैयौ— वावा अै पेसकारजी है, इया नै दरखास्त दे दै।

'पेसगारजी कूनै है—पेसगारजी कूनै है', कैवतौ वावौ मांय बडियौ।

पेसकार— हल्ला मत कर बुड्ढे। बोल क्या काम है ?'

'दरखास्त दैणी है, हजूर'।

लावो। तुम बाहर बैठो।

'नही,मा-बाप मनै बार मत काढौ। हूं साव साचौ हूं। हडमानजी री जमी दुस्टा····

'अरे धीरे बोल भाई, अफ्सर नाराज होवेगे।'

'अबछर भळै बीजा ई है के !' म्हारै वास्ता तौ थे सगळै अबछर हौ !

पेसकार दरखास्त पेस कीवी। अफसर चिघ'र बोलियौ— बेवकूफ कही का ! इतने वर्ष कहां मरा था ? दरख्वास्त मियाद बाहर है। दाखल दफ्तर कर दो जी।

पेसकार डैण नै बुलाय'र समझायौ— इतने वरस क्यों नही आया ? अब कुछ नही होगा। भागजा। तेरी दरख्वास्त दाखल दफ्तर हो गई है।

डोकरै कान ढर'र पूछियौ— दाखल दफ्तर भळै के हुवै है ?

पेसकार कैयौ— अरे बाबा, वह अब यहाँ रहेगी। तेरे को नही मिलेगी ? नामंजूर करदी है।'

डोकरै बिगड'र कैयौ— क्यू, मैं साव साचौ हूं ! इसटाम का पीसा दिया है ! भळै लिखाई रा न्यारा ! थे क्यू राख हौ ! एक तौ मेरी सुणाई को करौनी, भळै कागद ओरूं राख सौ ! औ के न्याव है !!

'कह दिया न, नामजूर होगई। भागजा।'

'के हुयगी ? सावळ समझावौ ?'

'अरे तू मौड़ा आया न, इसलिए सुनाई नही होगी।'

आछौ धरम डूबौ रे ! नहीं सुणाई करौ तौ मेरौ कागद पाछौ झलावौ ! बीजी जागा कूक सू !!

'कह दिया न कागद हम रखेगे ?'

'इसटाम का पीसा ठोकाई का को आया नी ! थे राखौ तौ मेरा पीसा देदौ !!'

चपरासी बाबै नै बार काढ़ दियौ। 'आछौ धरम डूबौ रे- आछौ धरम डूबौ रे बाबो बड़बडांवतौ रैयौ ! पछै रीस खाय'र बौलियौ— थांरी नीवत खोटी है ! हड़मानजी थानै समझसी ! जावौ, गरीब का पीसा थेई खावौ-पीवौ ! हूं तौ थारै नाव नै रोंवतौ औ गांव टुरियौ !!

३३— सिनकी सिवगोपाळ

सिनक्या अर खडकियोडी चासणीवाळा री किसी अलायदी दुनियां थोडै ई बसै है ? बे ई था-म्हारै वीच मै ई बसै है। था-म्हारै मायला ई हुवै है।

इया री समझ-सूझ ई उदबुदी हुवै है। माथै रा पेच इसा ढीला हुवै है कै अवोडौ दिया चटियै ई पड़ जावै !! अै कैवै सो खरी। इया री समझ आछी। इया री हा मै हा मिळावौ जित्तै राजी। थोडी घर री अकल भेळी कै अै हाथै न बाथै। अै ना तौ गैला मै अर ना सैणा मै !! ना बळध मै अर ना गाय मै !! गाया गाया गीत गाया तौ गुटकै अरथोडी ऊकचूक किया अगलै रै बाथै पड जावै। छिडिया पछै कौडी काम रा नही। घर रै परायै री काई गिणत नही। इया री सुणौ अर हा भरौ। तौई इया रै सागै निभाव हुवै।

तौ म्हारा सिवगोपाळ इसा ई सिनकी जीव हा। आप रौ हाजमौ जाबक बिगडग्यौ हौ। वैद कैयौ— दूध पीवौ तौ आधौ-आध पाणी मिळाय'र। छाछ पियौ तौ घणी आछी।

पण छाछ पीवण री तौ आप रै जाबक जची कोयनी। बैसू तागत का टूट जावै नी ?

हा, दूध पीवण री हाडोहाड जचगी पण पाणी मिळियोडौ नही। इसौ पंगापोळ दूध क्या अगचंग लागै ?

खरौ-खाटी दूध पीवै जिकौ जरै नही। घडी-घडी जाजरू विगाडै।

एक दिन चिघ'र मा नै कैयौ— आ क्या बात है जिकौ दूध रौ छाटौ ई पेट मै को पचै नी ?

मां बोली– बेटा ! हाजमौ खराब है । हौळै-हौळै सुधरसी ।

दूध मै आधौ-आध पाणी ......

'(बात बोट र) बळग्यौ पाणी ! बळग्यौ हाजमौ ! परमातमा नै हाजमौ बिगाडण नै हू ईज लाधौ ! बीजा खूटग्या !!

दूधवाळौ आय'र पूछियौ– माजी ! कित्तौ दूध दू ?

सिवगोपाळजी भडकी दी– माजी क्या बतासी ! भरदे काठौ गूणियौ !

मा उचंबै भरीज'र पूछियौ– इत्तै दूध रौ क्या करसी, बेटा ? सिवगोपाळ खीज'र उथळौ दियौ– करसू म्हारौ माथौ ! था तौ टोक ई दियौ नी ! एक तौ परमातमा लारै लागग्यौ अर बीजा थे घरवाळा चक्या सूखावौ हौ !!

मा कैयौ– बेटा ! सूई कैवतै ऊधी ......

'खाड मै पडौ सूई'र ऊधी ! आज हूं भरियौ गूणियौ गटकाय जासू ! देखसू कित्ता'क दस्त लागै है ! कित्तौ'क दूध टट्टी मै निकळै है ! छेकड छिटाक भर तौ पेट मैं रैसी'क नही !! गुण करसी तौ इत्तौ ई घणौ !!

ज्यौ ई दूध कंठा सू नीचै उतरियौ कै पेट मै मरोड़ौ सुरू हुयौ खळकाय'र टट्टी री संका हुई जिकौ पाधरा ई नाठा जाजरू खानी !

लागण लागा दस्त ऊपर दस्त ! अर हुयग्या भंवरजी जाबक सुस्त !

पण कैरी मगदूर जिकौ टोकै अर बाधेडौ लेवै ?

३४– न्यायौ क जौ

कैबत मै कैवै है– 'सीयाळौ सभागिया दोरौ दोजखिया' जोयीजै गरम थेली, गरम आसरा, गरम चाय, गरम सिगडी, गरम माल, गरम कपडा, गरम गिदर बिछाणा, गरम केसर, गरम हीनौ, गरम ई मैफल अर भळै ... ।

सरीर नै सावळ अर सबळौ राखरण सारू इरणी रुत मै, कोई सूठ रा, कोई मेथी रा, कोई गूद-गिरी रा लाडू बणवावै, कोई मस्त-पाक, कोई गाजर-पाक कोई गूद-पाक तौ कोई मदन मोदक बणवावै ।

ज्यो बळधा गाडी नै बागरण सू वा सोरी-सोरी चालै अर बैरी ऊबर बधै, इया ई सीयाळै मै काया नै बागण सू वैरौ अऊखौ बधै अर बा सोरी चालै, आ तौ हुई सभागिया री वात ।

दोजखिया री इण रुत मैं घणी दुरगत होवै ! सी पड़े तौ इसौ पडै कै काया कापै, काळजौ धूजै ! लायां खनै ना सीरखा आसरा अर ना सीरखा कपडा । ना पूरौ खावरण-पीवण नै ना पूरौ पैरण-ओढण नै । ना पूरौ बळीतौ बाळरण नै । झर-झर कथावा ओढ़ण नै अर फाट्यां राल्या बिछावण नै । गोडा गळै मै घालिया गीडोळी मारिया पड़िया रैवै । टावर एक बीजै सू चिपिया सूता रैवै । ऊपर सू घरवाळा जाळी-झरोखावाळी एक ई जूनी सीरख नाख देवै ।

हवा ठंडी, सड़कां ठंडी, आंगणौ ठंडौ, भींत्यां ठंडी गाभा ठंडा, गूदड़ा ठंडा, काया ठंडी, मन ठंडौ अर माया ठंडी !!

सियाळै मे ई भळै पो तौ 'पो खल्लड़ खो' हुवै ई है। रात नै लोग चौक-चौक में धूयां जगावै। दिन मे ई बासती खनै सूं खिसकण रौ जी को चावै नी।

जोर क्या वटै ? काम-धंधौ तौ कियां ई सरै।

म्हारा गुरु ओझाजी पो रै सी नै ई घोळ'र पी लियौ ! ठंठौ कुडतियौ अर ऊपर गमछौ ओढियोडौ ! कैवत में कैवै है—'टावरां रौ सी बकरिया चरै है'। पण ओझाजी आंपरै सी नै आप ई चरग्या हा !!

काळौ सरीर करड़-काबरा केस, काळा जाडा भवारा, काळी बडी आख्यां अर काळी ई बटदार मूछां। भोर री ठंडी वेळा मे लोग तौ सी-सी कर'र धूई तपै। अर ओझाजी माराज एक हाथ में लंबी लाठी अर बीजै मे लोटौ लियां 'पिच थू-पिच थू' करता रोज निमटण नै दरवाजै बार जावै !

एक दिन मी-मीं फंवार आवै ! डाफर चालै ! धूई तपतां रा ई काळजा कांपै !! ओझाजी तौ आपरी नित री पोसाक मै ई डाग लेय'र निमटण नै टुरग्या !

धूई तपतै एक जजमान पगे लागणा किया। कयौ— गुरुजी जुलम करौ हौनी ! इयै ठंड मै निमटण जावौ हौ !

ओझाजी– ठड किठै है जजमान ?

बीजौ– पिरतख नै परमाण क्या ?

ओझाजी– म्हांनै तौ को लागै नी ।

तीसरा–म्हे तौ ठंड सू मरिया जाय रया हा !

ओझाजी– जजमान ! थांरै काळजै मै ठंड बडियोड़ी है ।

चौथौ– अर थारै ?

ओझाजी– म्हारौ काळजौ न्यायौ है ।

पैलौ– काकर ?

ओझाजी– देख जजमान कै आख खुलतै ई म्हे पैला अडाणां री रकमा संभाळा । फेर लोटा रै थागां नै गिणा । जित्तै सरीर न्यायौ हुय जावै ! भळै मटक्यां मैं मुळकती माया नै गिणा-निवा । जणै परसीणौ आवण लाग जावै !! अबै थे ई बताओ म्हांनै सी कांकर लागै ? पछै क्यो तौ मोकळा गूदड़ा पैरां और क्यों कावळ ओढ़ा ?

३५– जिनवर

फागण रौ मस्त महीनौ। गैलौ तिवार। जागा-जागा रम्मता रा गावणा हुवै। धमाला उड़ै। चंग खड़कै।

रम्मता री चोख्या खूब ठाठ सू निकळै। आगै बाजौ बाजै। मोटर, तागा-इक्का री लैण लागोड़ी। खेलांरा रै हाथ मैं छराछरा। सगळां रै नवा रंग-रग रा गाभा। धनसबाणियां सूंथणा पैरया नै।

कोटवाळी गरम। रम्मतां मै रौळौ-बौदौ रोकण सारू कोटवाळसाब खेलारां रा मुचळका लेवै। कोटवाळ ठैरियौ बारलौ। अठै री रीत-रिवाज अर नाव-धांव सू जाबक नावाकब। एक नै पूछियौ– तुम्हारा नाम ?

'कूकौ।'

'तुम्हारा ?'

'सूवौ।'

लिखौ पेसकारजी। हाँ तुम्हारा—

'मिनियौ।'

'अरे तू बोल भाई ?'

'कुतियौ।'

कोटवाळ चिघ'र बोलियौ–सब के सब जानवर ही आये हो, कि कोई मनुष्य भी है ? जावौ,उड़-भाग जावौ जानवरो।

३६— जाट

जटबुध का आवैनी, नटबुध आय जावै ! जाट हुवै ई खुरापाती ! इसी अचूकी वात कैवै जिकौ सुणनियौ लेवतौ ई जावै !!

मीयै अर जाट री बात तौ छावी है ई। मीयै सेखी मे कैयौ—

जाट रे जाट,

तेरे सिर पर खाट।

जाट बोलियौ–

मीयां रे मीयां,

तेरे सिर पर घट्टी ।

मीयै कैयौ– मोथा तुक तौ जुडी ई कायनी ?

जाट बोलियौ– तुक-फुक हूं जाणूं कोयनी, भारूं तौ मरियौ 'क ! मीयौंजी क्या उथळौ देवता !

म्हारै पाड़ोस मैं ई एक जाट रैवतौ हो। म्हारै पाडोसी नै रौळ सूझी। कयौ– रामूड़ा ! ओ रामूड़ा ! अरे वाकौ बळग्यौ के जट्टू ?

'क्यू तेरे के काम है ?'

'अरे बच्चू, तू कित्तीक खायलै रे ?'

३७— पदवी

वीकानेर मैं वैद सम्मेळण री काम धण्णाटै सूं चालै। घालमेल लागोड़ी। 'श्रौ करौ', 'वौ करौ' री ऊतावळ लाग रयी। सगळां नैं श्राप श्रापरै कामां री फिकर।

काम इयौं पसरियौं जाणौं सुरसा राखसी री देह! काकर कावू मैं श्रावैं? श्रूक-चूक नही हुय जावे? कोई काम घ्यान सूं उतर नही जावैं? इण कारण काम करणिया रै जिम्मै रैं कामा री फैरस्त वणायीजण लागी। काम करणियां रा नांव टूकीजिया।

कैरै कित्ती लंवी पूछ है, कांकर ठा पड़ै? कोई श्रापरौ श्रपमान नही समभ लेवैं?

पैलीपोन मा'सय फोफानंद नै ई पूछियौ— श्रापरै नांव रै लारै किसी-किसी पदव्या लिखी जावैं?

पंडित फोफानंद हा यथा नाम तथा गुण! वेपरवायी देखांवता, श्राळस मोड'र वोलिया— लिखलौ जचै जित्ती!

'इयां काकर लिखला? म्हानैं क्या सुपनौ श्रावै?

'घणी ई है किसी-किसी लिखाऊ! माडलौ खास-खास— श्रायुर्वेदाचार्य, श्रायुर्वेद मार्तण्ड, धनवंतरी, साहित्य-शिरोमणि भळै ...

'वात वोट'र, (वारै वाळ-वंधु) कैयौ— कमी है तौ भळै सोध लै! लुच्चौ किठैई रौ! किठै करी ही रे तैं श्रै सारी परिख्यावां पास!!'

फोफानंदजी फीका पड'र वोलिया— तौ लोका नैं तौ मत सुणा! लिखलै थारै जचै जिकी।

———

३८- दोल ऊपरलौ म रग

सेठ तौ सेठ ई हौ, विलालो । मुतलब मैं तौ हौं सावचेत । पण लागतो हौ स्यानियै ज्यूं ।

जीम-जूठ'र तकियै रै सायरै दोल फैलाया मांय ई मांय लैग-दैग री हेंसाव कर रैयौ हौ ।

ऊनाळै री ही रुत । भाग जोग सूं हवा री ठंडी लैर आयी । झेरां आवण लागी ।

संवळौ, पाधरौ अर सोरौ सट्ट मारग जाग'र एक कीड़ी दोळ ऊपर जुळवुळग लागी ।

सेठजी चमक'र वोकाडा पसार दिया ! खन-खनला दुकानदार दौड़िया ! हडवड़ाय'र पूछियौ हुयौ कांई ! काई हुयौ !!

सेठ मनूस उणियारौ वणाय'र रोवणै सुर मैं वोलियौ-कांई मती पूछौ, गजब हुयग्या !

लोका घवरा'र पूछियौ धीरज धरौ ! हुयौ कांई ! कौ तौ खरौ !!

सेठ भारी गळै सूं कैयौ- एक कीडी पेट माथै होय'र निकळगी ।

सगळै हैरान होय'र वोलिया-तौ इसी क्या बात हुयगी ! क्या विगडग्यौ !

'बिगड़ कांकर को गयौनी ! रस्तौ तौ खुलग्यौनी ! आज रांड कीड़ी निकळगी तौ काल कोई हाथी निकळ जासी !!

३६— रसोईयौ

सेठजी हा गाड सू पइसौ उठावणिया। पैलै नंबर रा सूम! 'हींग लागै ना फिटकड़ी अर रंग पक्कौ' चावता हा!! दमडी खरचण रै नाव सू वांरै माथै मै लट्ठ लागतौ हौ। पक्का मूत'र तोलणिया हा।

चांवता हा, एक छटवौ रसोइयौ, वौई रोटी राद्दै। इयां काम काकर ढूकतौ? छटवा रसोइया छटवौ रुजगार मागै। तिवार-टाकड़ै ऊपर आस करै ऊपरली पैदा री। सेठजी रै इसी ऊल किठै ही?

छेकड सेठजी री मिनसा फळी। 'भाग फूटौड़ै नै करम फूटोडौ मिळई गयौ', कैवत मै कया परमाण है।

अठीनै इया रै देवण-लेवण नै रामजी रौ नाव! तौ बठीनै रसोइयौ मै तीन काणा ई नही। वैनै कोई राख तौ को हौनी। इया रै कोई रैवतौ को हौनी! दोनू रौ ढ़ब ढूकग्यौ। 'जैगोपाळजी जैगोपाळ दोये ढूंगा एको ढाळा'।

रसोइयै दीसिया दिन ऊगोड़ी हौ! चूलै मै फूक देवणी ई को आवती हीनी। कोरौ रोय्या रौ ठाव हौ!!

तौ सेठ नवै रसोइयै नै, रसोई भौळाई।

अठीनै बासती अड़ी कपड़ली उठीनै रसोइयौ फायौ फीटौ हुयग्यौ ! बैरौ फूं-फू-फूं-फू करतै री नाक'र आंख्यां झरण लागी। लाई जमना आदमण नै दया आई जिकौं बै चूलौ तौ सिलगाय दियौ।

पण रोट्यां कुण बटै-सेकै ! बेमेधा रौ आटौ उसण नाखियौ ! तवौ तप'र हुयग्यौ लाल बंब !! रोटी पड़ै अर झट ई बळैं ! बळियोडी रोट्यां रौ ढ़िगलौ लागग्यौ !!

सेठनै चायीजी रसोई ! दवसैणौ रसोई मैं बडियौ। बळियोड़ी रोट्यां रौ ढिगलौ जोय'र बैरी तौ ऊपरलौ सास ऊपर अर नीचलौ नीचै रैग्यौ !! आंख्यां फाड़'र ढ़िगलै नै जोवतौ वड़बड़ायौ– आ क्या माथै री रसोई करी है ! जावक डफोळ-संख ई लागै है !!

रसोइयै हड़बड़ाय'र पूछियौ– हुयौ क्या ?

'हुयौ बुरीगार रौ माथौ ! डफोळिया, सगळी रोट्यां बाळ नाखी ! 'भळै पूछै है क्या हुयौ !!

'बस, इत्ती'सीक ई बात है। तौ थे मत खाया। बळियोड़ी रोट्यां हूं खाय लेसूं। थांरै बीजी बणाय देसूं।

'बणा ई रे बणाई ! राखस है जिकौ ढ़िगलौ खाय जासी ! म्हारी तौ रिख्या कीये, किठै ई मनै तौ मत खाय जाये !!

भगवान ई जाणै, रसोइयै रै, अर सेठ रै कांकर बिध बैठी !

४०– चपरासी

मदर'सै री हैड मास्टर ही अबोग्ड़ौ तौ चपरासी हौ बैरै ई माथै वाधरा जोगौ- 'तेलण सू नही मोचण घाट वैरै मोगरी तौ बैरै लाट !'

रोजीनाई दोय-च्यार वेळा तौ चकमक भड़ ई जाया करती ।

पण आजरौ ढंग उदबुदौ ई रग लायौ ! चपरासी रै कंई काम हुयग्यौ ! वौ टल'र-टल'र करतौ पूगौ कोई वारै वजी रै आसरै-धू दुपारै ।

हैडमास्टर इया ई सभाव रौ भैडा ही ई । आज तौ बात ई क्या पूछणी !

लियौ चपरासी नै लबडधक्कै ! पूछियौ क्यों मोड़ा आया ? आई कोई आवण री वेला है ? ना अरजी ना संदेसौ ?

'कुई कामडौ हुयग्यौ हौ सा ।'

'नोकरी है कन भाईबधी ?'

'तौ इसौ के अकाज हुयग्यौ ! के जगात मारीजगी !!

'सामा बोलिया तौ मनै आछी तरै जाणौई हौ ? नोकरी सू हाथ धोय·········

'(बात बोट'र) तौ किसा निसीब लूय लेसौ – 'माई-माई वौत ब्याई।'

'तिणखा को ठोकौनी ?'

'के बानावौ हौ ! देवौ तौ आगै जाय'र नव फूल्यां ईज हौ'क ?'

'तौ काल मत आया।' मनै इसौ डामच आदमी को जोयीजैनी।'

चपरासी फण्ण दैणी सी चपड़ास वघाय दी ! बड़बड़ायौ– बडा खांगा किया श्रौ स्याळियैवाळौ पट्टौ काठौ राखौ !

हैडमास्टर गरम होय'र गरजियौ– कंई समझौ ई हौ क ! थांरै मौड़ै आवण सूं म्हानै कित्तौ फोड़ौ पड़ियौ ?

'के पड़ियौ ? बतावौ तौ खरी ?

'थे नही आवौ जणै घंटी कूण बजावै ?'

'बस'क ? थे बैठा के करता हा ! थे ई बजाय देवता, घसीजै थोड़ै ई हा !

मास्टरजी री बोलती बंध हुयगी ! अर चपरासी फणगटौ मार'र बौजाय !!

४१– सतलड़ी लधसै

निराठ जूनी तौ वात कोयनी, पण, हा, जूनी जरूर है। बै बेला घणा भोळा मिनख होंवता हा। भडभड़िया–खड़खड़िया जरूर है। पण पेटै पाप को हौनी। कोठै जिकी ई होठै।

वा दिना, बुध्धी रौ, हणै जित्तौ फैलाव को हुयौ हौनी। मिनख सैसक्रत आछी भणियोडा होवता। कथा-भागोत वाचना व्याकरण ई कंठ करता। पण तौई भोळा तौ नावुक ईज हा। आज, बारी बाता, धाप'र हसायै विना का रेवैनी। अर हणै रा लोक बानै मूरखाई वतावै।

सात भाई हा, थोडा-घणा सैई भणियोडा। पण भोळप मै समान हा कोई घाट-वाध नही।

सगळै आपरौ काम हाथै ई करता। हाथै ई कूवै सू पाणी लावता, हाथै ई कपडा-लत्ता धोवता, हाथै ई गाया दूवता अर हाथै ई सवदौ-सूत लावता, मजूर नै उखणाय'र नही, माथै ऊचाय'र।

तौ, अै भाई, घडा लेय'र पाणी लावण नै कूवै जावण री सोचण लागा। इत्तै मैं बडौ भाई बोलियौ– वीरा आपा नै पाणी लावण मैं अवळाई घणी पडै। सेठ री हवेली आडी आवै आ नही होवै, तौ, रस्तौ सीधौ-सटाक पडियौ है।

'सेठ नै कैसा, थारी हवेली खिसकायलै।'

'थोडी खिसकाया पाप को कटै नी ? धीस'र घणी-घणी आघी लेजाया काम सरै।'

'भाई ! सेठ हां-हां तौ करै है पण खिसकावै कोयनी '।

'कदास नहीं खिसकासी तौ ?'

'तौ, थे कैसौ जियां करसां ।'

'कंई तौ थेई अकल उपावौ ।'

'नहीं खिसकासी तौ आपां घींस'र आधी मेल देसां ।

'हां-हां, आ बात ठीक है ।'

'सेठ राजाजी नै चुगली कर देसी तौ ?'

'तौ; थे बतावो ?'

'आपां अरज करसां, म्हारै मारग मैं अड़ै है। म्हानै नितरा फोडा पड़ै है, अनदाता ।

'हां, ठीक है ।'

'तौ हरणैई हालौ, गायांवाळा रंढू लेय'र। हवेली आधी खिसकाय'र पछै ई पाणी ला सा ।'

'इयां मती करौ। कूवै नै ई घर रै खनै क्यों नहीं घींस लावौ ? नित रौ पापौ कटै ?'

'हा आ ठीक है ।'

'तौ हालौ कूवै नै ई घीसा ?'

'पण हवेली अड़ै'है नी ?'

'जणै पैला हवेली नै घीसौ ।'

टुर पड़िया, साते भाई रढू लेय'र। पैला चौकी रै बार'कर रंढू लपेट'र, लागा जोर लगावरण। इत्तै ई, सेठ ऊपर सूं बोलियौ– औ क्या करौ हौ माराज ? चौकी भागसौ क्या ?

'भांगां कोयनी, घीससा ।'

'क्यों पण ?

'म्हारै मारग मै अडै है। म्हानै अंवळाई खावणी पड़ै है।

'हूं हाफेई खिसकाय लेसूं।'

'हाल खिसकाई तो कोयनी'क ?'

'हणै लौ, पण थे कूवै नै ईज क्यो घीस लावौ नी ?'

'थारी हवेली अडै है।'

'कूवौ अठै सू आधौ है। इत्ती दूर तौ थे वैनै घीस लावौ ? हू हवेली खंस लेसू। दोनू काम सागैई हुय जासी।'

भाया सला करी कै वात तौ ठीक कैवै है। वात धरम री है।

बडौ भाई बोलियौ— पैला पाणी रा घडा तौ ले आवा। मौड़ौ किया मा लडसी।

दुरिया साते भाई घडा लेय'र।

मारग मै एक जणौ वोलियो— हणै कदास सतलडी लध्धै तौ ?

'तौ सगळा रौ सीर।'

'लाधै तौ मने सीर सगळा रौ कायरी ?'

'क्यो, म्हे सागै कोयनी काई ?'

'बतावौ सीर काकर करसा ?'

'साते भाई एक-एक लड़ी ले लेसा।'

'नही लाधणवाळै री दोय पाती होसी ?

'जणै सीर मै गोळ, पड जासी ?'

'पडसी तौ पडसी। थानै टुकड़ा दे देसू।'

'क्यों, थे सापता लड़ लेसौ अर म्हे टुकड़ा ?'

'म्हे दोय पांती को देवां नी ।'

'म्हे ई बराबर पांती करासां ।'

'बराबर को करूं नी जावी, करणौ हुवै जिकौ कर लेवौ ?

'एक भाई कैयौ– तौ आपां टुकड़ा ई ले लेसां ।'

'क्यो ले लेसा ?

'राड़ मिटा'सा ।'

सुण'र एक भाई नै चढी रीस ! ठोकी आपरै घड़ै री बैरै घड़ै ऊपर ! हमै दो पाळट्यां हुयगी– तीन अठीनै च्यार बठीनै । घडा सू घडा भांग नाखिया !!

लडता-लडता, पूगा मा खनै । न्याव करावण ।

मा पूछियौ– किठै सतलड़ी, देखावौ ?'

'सतलड़ी तौ हाल अवै लधसै ।'

'हाल लधी कायनी !'

'लधसै ए मा लधसै, कै दियौनी ।

मां कैयौ– टका बटीजग्या थां दीसिया ! घड़ा पाखती मैं फोड़ आया !!

जावौ आघडा ई । पाड़ोस्या रा घड़ा माग'र कूवै सू पाणी तौ लावौ । मौड़ौ हुयग्यौ ।

हणै लै, मा । थारा हुकम, कैय'र– ले घड़ा'र नाठा कूवै खानी ।

सेठ री हवेली अर कूवै नै खिसकावण री बात अधरबंब मै ई लटकती रैयगी !!

४२-- पंचवौं वेद

रेल रै डब्बै मै, इत्ती भीड- इत्ती भीड़ कै पग राखण नै ई जागा नही । मर डूब'र सामान धरणवाळी पटडी माथै बैठणौ पडियौ ।

डब्बै मै भीड'र गरमी सू इत्ती हुबसौ कै सरीर ऊपर परसीरणै रा परणाळा बैवै । जी घबरावै ।

गाडी छूटी । जान मै जान आई । थोड़ी हवा तौ लागी । म्हारै भायलै सरमाजी नै इसी बेळा गवास लागी । छेड़ी बेसुरी गधा-मलार ! डब्बै रा मुसाफर तळमळाय उठिया !!

एक संडै-मुसंडै मिनख सरमाजी नै टोक'र कैयौ थोड़ौ परनै हट आधा, वेद भगवान माथै काकर बैठग्यौ ?

सरमाजी उथळौ दियौ- मनै तू सूरदास लागौ जिकौ बिस्तरै नै वेद भगवान् बतावै है ?

'थारी तौ मायली अर बारली दोनू फूटोडी दीखै है, बाबूडा ! ऊपर सू सूरदास ई मनै बतावै है ? सापरते 'क वेद भगवान बिराजिया है नी ।

'तौ बिस्तरै मै क्यो बडिया बैठा है ? क्या सी लागै है कन मूडौ देखावता लाज आवै है ?

'साळा । एक तौ सास्तर माथै बैठग्यौ । भळै टग करै है !

'पण भला माणस । बिस्तरै मै वेद क्यो बड़ियौ है ? टापरै मै ठाई है, कै, वेद कित्ता है ?

'च्यार भळै कित्ता ?'

अर औ बिस्तरै मांयलौ ?

'पाचवौ ।'

म्हां तौ आज ताई च्यार ई सुणिया हा । अौ पाचवौ थारी समझ रौ नमूनौ दीसै है ?

तनै कंई मालम ! लगाय लियौ तेली रै बळध दाई चस्मौ अर लारै की रैयौनी ?

'आ तौ बता कै कुणसी नगरी नै बिछोड़ रौ दुख देय'र आप इयै भोम नै पवितर करण सारू पधारिया हो ?

' के कैयौ ? हूं को समझियौनी ?'

'समझ नै लारै ई छोड आयौ क्या ?'

'के बकै है ?'

'अरे भला मिनख, किठै सू पधार रयौ है ?'

'तनै के करणौ है ? कंई माथै मागै है ?'

'माथै मांग तौ तौ खुल्लौ फिरण देवंतौ ! बडै घर को भेजाय देवतौ नी !

:जाणै तेरौ ई राज है ! डौळई दीखै है नी बाळण जोगडी !!

'थांरे नाव मै किसा सुभ आखर आवै है ?

के बकै है, मोथा ? की समझ पडै नी ?

'अरै थांरौ नाव काई है मोथा ?

,क्यो तनै नूतणौ है के ? म्हारी खुसी कौ बताऊंनी ।'

'थारै वेद भगवान रै पूछहै क्या ? आ क्या लटकै है ?

को मानै नी रौळ करतौ'क ? कैय'र, वै सरमाजी रै मगरा मैं लट्ठ रौ गुद्दौ लगायौ। म्हे सरमाजी रै मूडौ सामौ जोय'र टी-टी हसण लागा ! कयौ– अबकलै थारौ गुरु मिळियो है, सेर नै सवा सेर !!

सरमाजी भळै छेडखानी लीवी। पूछियौ औ पूछ-पूछाळौ वेद था जिसा मूरखा रै पढण रौ होवैला ?'

मानै कोयनी मुडदा ! माथै चढतौई जावै है !! कैय'र भळै बै सरमाजी रै गुद्दौ लगायौ।

म्हारै हसौ मावै नही ! एक बोलियौ– सरमाजी अबकलै थारौ उस्ताद मिळियौ ! अरे लट्ठ देख'र तौ भूतई भाग जावै, सरमाजी सरमाजी!! बीडी धुखाई अर गाडी आगै-आगै बधती चाली।

४३– मिथ्या सूं सत रौ ज्ञान

जिलम तौ ई कोई ज्ञानी-वैरागी हुवै कोयनी ? गिरस्त मैं रैवतै थका, कइयां नै साधू-संगत सू ज्ञान आ जावै । वैराग उपडण लागै ।

कइयां नै गिस्त मै, जिलमणौ-मरणौ, रोग-दोग अर संताप री जड जोवण मै बैराग उपड़ जावै अर ज्ञान हुय जावै ।

केई पइसा रै तोडै अर गिस्त रै धमीडा सूं नाको-नाक आय'र ज्ञान-वैराग री बातां करण लागै ।

पण वाळगोठिया अर भायला कईनै मिळै ई नही । मिळतै ई वे हौळै'सीक इसी सिरकावै जिकौ ज्ञान-वीराग डोल'र संसै खडौ हुय जावै ।

तौ, एक ज्ञानी जोगवासिस्ठ बाच रया हा– 'हे रामजी ! जगत् मिथ्या है ।'

इत्तौ मै ई, बारौ, एक मसकरौ भायलौ उठै आय धमकियौ । बोलियौ– पिडतजी, जणै देखा जणै ई थे पोथै मैं मगज मारता रैवौ हौ, थारै कोई बीजौ धधौ कोयनी ? अरे भाई, जगत मिथ्या है तौ होवै ? आणीजाणी क्या ? थे क्यों 'मिथ्यापणै' रै दुख सू सूकणै पड़ग्या ? फेर मिथ्या काकर है ?

पिरतख आख्या सू देख रया हा नी ? जीवां जिन्नै ग्यानौ। मरियां मिथ्या। थानै मौत रै नैडौ जावणौ हुवै तौ जावौ। पण म्हारी एक संका तौ मिटाय दौ ?

ज्ञानी हाथ जोड'र मुळकतै कैयौ– माफ कर उस्ताद ! हू थारै सू बारै को वदू नी !!

'इण मै वारै बटण री किसी वात है ? म्हारौ तौ एक चिनसौ'क सवाल है।'

'क्यो टिकण देवै नी ! तू हौळै'सी कुतरक छोड देवैला, अर हूं अळूजाळ मै पड जाऊंला !

'तौ कोरौ पोथौ ई बाचौ हौ ?' हूं मिथ्या जीव हूं पछै म्हारै सू डरौ क्यो हौ ?'

'तै सू तौ को डरू' नी, थारै कुतरक सू कापू हू !'

'जणै ज्ञान क्या भाठा सीखियौ है ?'

'चोखौ बाबा, हू हारियौ तू जीतियौ ! कई तरै पिंड तौ छोड ! मनै बाचण दे !!'

'थे भलाई बाचौ, म्हे ई सुणसा।'

'हां, जणै ठीक है। ज्ञानी पाछौ बाचण लागौ—

'है रामजी ! जगत् मिथ्या है ....

टोकर भायलौ बोलियौ, समझिया विना आगै को बाचण दानी। बतायौ जगत मिथ्या है क्या-?

'हां भाई, है।'

'थे-म्हे ?'

'मिथ्या।'

'मिंदर-मसीत, मौल-माळिया, सैर-नगर, चदर-सूरज ?'

'सगळै मिथ्या।'

'आसण, आसौ, कमंडळ ?'

'भाई, एकरमी तौ कैय दियौ सगळै मिथ्या।'

'देख्या, बात ऊपर पक्का रैया। आ बांचौ जिकी पोथी ?

'भाई ! मिथ्या, मिथ्या, मिथ्या।'

'तौ थानै इयै मिथ्या पोथी सू सत रौ ज्ञान कांकर होसी ?

ज्ञानीजी मुळक'र कैयौ– मनै तौ अळूंजाळ मैं नाख दियौ नी ! हमै ई सिधावौ– अै लबा-लंबा हाथ जोड़िया !!

४४– कथा

संगत री असर सैणां-अैणां दोनू माथै पटै है। कैवत मै ई कैवै है'क– 'काळियै खनै गोरियो वैठ, रंग नहीं बदळै, अकल तो बदळै ई।' आछी संगत सूं ई रागळे ऊंचा चढै अर खोटी सू नीचा पडै। संत तुळछीदासजी ई कयो है—

एक घडी आधी घडी, आधी मैं पुनि आध
'तुलसी' संगति साधु की, हरे कोटि अपराध

गाव री एक जाटणी सैर मैं वसगी। वामण-वाणियां री वास। देरा-मिदर। वास-विरत। कथा-कीरतन। संगत सूं इण ऊपर ई औ रंग चढग्यो।

तौ, जाटणी, रोज, एकै खानी पांच वजे अर घर सूं सिरक जावै।

जाट सोचै, घर मैं ई किठैई काम-काज करती होवैला ? वैनै, आ थोडै ई ठा ही, कै, वैरै घरवाळी कथा रो रोग लगाय लियौ है ? जाट रै कथा सू मुतलब ?

दिन पंदरै ताई तौ जाट गम राखी। पछै वैम उठियौ कै आ रोज-रोज किठै टरक जावै है ?

एक दिन जाटणी रै आंवतै ई जाट पूछियौ—

'तू नित-नित कीजा उठ जावै है ?'

'अे देखो, कथा हुणन जाऊ हूं।'

'क्यां'की ? करम की ?

'क्यू, ज्ञान बंचै जिको हुणू हूं।'

'हां ना ! ज्ञान के हुवै है, डळी'क भूको ?'

'ऊं मनै केठा ?'

'जद क्यूं धूड खावरण नै जावै है ?'

'क्यू ? हेठाणी, पिडताणी, बीजी घणी ई जावै है ।

'जाती होवैला । पण गैली, आपा रै था सू के लैणौ-दैणौ है ?' बे तौ बडा आदमी है ।

'ज्ञान हीखण मै के बडौ छोटौ ?'

'ना भाई, आपणै इसौ ज्ञान हीखणौ कोनी । आपणौ ज्ञान तौ खेती है ।

'खेती खड़ता तौ ·· · ·····

'जा गैली ! ज्ञान हीखै है । छाणै सू मूडौ तौ रगड़ लै जणै कथा लायक होसी !'

'क्यू ? क्या हूं फूटरी कोनी ?'

'आ हूं के कू । लोक हाफेई देख'र कै देसी ।

'थांनै रौळ करणी बीजौ के ?'

अर तनै हीखणौ ज्ञान

'हा हीखू क्यू कोनी ?

'ना, आपणै इया को चालै नी । काल हूं चूलै खनै बैठ'र राबडी-रोटडी बैगी बणा लिया कर ।

जाटणी हाथ जोड'र केयौ— अमै तौ हात दिन की ही कथा है । आ तौ सुण लेण दौ ?

'गैली ! ज्ञान तौ एक ई दिन मे आय जावै है । तै हुणी कोनी—

एक बार कथा हुणी, न आयौ हर्ड
बार-बार कथा हुणै, कान है के दर्ड

४५- सूम रै घरै धूम

बिस्सैजी रा हा पाच बेटा। पाचे जोध-जवाना। हाडे-गोडे पूगा। ढाई भीत ढ़ैवें। खावण मैं भला-भला रा छक्का छोडाय देवै। नामी जीमाकिया पांचै भाई भेळा जीमै तौ अधमण ऊपर भाखर वमा! जीमण बैठै तौ उठै कण! नैतणियै री हया ले लेवै॥

पण लढ़ाक लगावै! पराया घरां घर मै तौ पथ लेवै। दोरौ-सोरौ चाबौ-भूकौ करै। 'मोरिया करै मलार घरा पराया ऊपरा।'

घर हौ सहूकारा रे पाडोस मै। सगळा रै जीमण रा नैता आवै। अै भाई लगोट रैवै। पचाम नै जीमावण री सरधा होवै जिकौ इया पाचै नै नैतै। कूण चलाय'र करम मैं भाठौ बावै। कूण ताव नै तेड़ौ जावै। लाई सरवर री पैडी माथै ऊभा, तौई तिसा॥

भणियोड़ा तौ भोळै मीडौ। काळौ आखर भैस बराबर। बाणा नाखता दिन भर। मजूर एक लन्नर पक्का। सिज्या नै आटै जोगा पइसा घर मै लेय'र बडना। रोटी-दाळ तौ सोरी मिळ जावती। पण माल तौ सुपनै मैंई को दीखता हा नी।

आसोज रौ महीणौ। घर-घर सिराध। खुरपा-कडावा खडकै। बामणा रै नैतै ऊपर नैता आवै।

बरसा सू, अै, आपरै पाडोसी सेठ कपूरचन्दजी री गरज करै। कैवै सेठ कदेई तौ म्हांनै ई पोख। म्हांनै पोल्यां

फळ घणौ। झाड़खियां नै सींचै तौ उत्तौई फळ जित्तौ म्हां, मोटां पीपळां नै पोखियै रौ मोटां रौ मोटौ ई पुन। पूजीजतां नै सै ई पूजै। अपूजां नै पूजै, जिकी ई खरी पूजा। खरौ धरम। पण सेठ पक्कौ सूम। बैसू इयारी धूम कियां सहीजै ?

अबकळी बार सेठ कान ढेरिया। सोचियौ- खाय-खायर लाई कित्तौक खासी ? बामण रै बेटां री आंतरचां चीकणी होसी तौ आगोतर पुन ई है। भळै पाड़ोसी ई है।

तौ, सेठ, सिराध रौ पागडी-बंध नेतौ दरायौ।

आज तौ जाणै पाचा भायां नै राम मिळग्यौ ! खूब हंसै-खिलै !! उडीकै कद सिंज्या पड़ै, कद जीमण जांवा।

बाणा-धारणा नाख'र पूगा बगेची। छाणी भांग। हुय ग्या मतवाळा ! आंख्यां हीगळू बरणी !!

सिंज्यां सू थोडा पैला ठप्प पूगा सेठ रै घरै। सेठ कैयौ– माराज रसोई त्यार है। साऊ टाळीजग्या। थे हाफेई पुरस'र जीम लेवौ। हूं थोड़ौ काम मै हूं। रसोइयौं,हणै ई घरै गयौ है।

हमै तौ पांचू भाई इसा हरखिया कै मत पूछौ बात ! लागा थाळी भर-भर खीर गटकण ! नांखता गया ऊंडां कूंवा मैं ! खोल दिया सगळा ओरा-गूंभारिया ! बूटी री तार मैं गटकग्या सगळी खीर !! कडाई मैं, नमूनै दाखल, एक छोटी ड्वोळी भरी खीर छोड़ दी।

सेठ आंगण मैं आयौ ! दखणा री पावली पांचा नै न्यारी-न्यारी झलाय दी।

खाथा सू घरै टुरग्या।

सेठ पिछोकडै मै बडियौ। आगै खीर कँवै म्हारै नैड़ा ई मती आवौ ! सेठ री छकडी कम रैयगी !

अबै उणनै दोय वाता री सोच लागौ। एक तौ रसोइयै नै बुलाय'र खीर रंधावरण री। बीजी पाचा बामणा रै पेट फाट'र मरण री।

सेठ दूध सारू गूजरा मै आदमी दौडायौ। रसोइयै नै तेडौ भेजियौ।

बामरणा सोचियौ जीम तौ माल- मसोट'र आया, पण सेठ री पूरी कस को आयौनी। सला करी कै आपांती पांचै भाई आंगरण मै पसर जावां। मानै भेजौ सेठ रै घरै।

सेठ तौ माय ई माय घरणौ डरतौ हौ कै बामण पेट फाट'र मर नही जावै ! आदमी भेजियौ निगै करण। आगै आदमी जाय'र देखै तौ पाचै जणा आगरण मे पसरिया पड़िया ! बामणी सेठ रै आदमी नै ठोकी गाळचा कै म्हारै बेटां नै क्या खुवाय दियौ जिकौ अै तौ लोथ पडिया है।

अठीनै भा ले घोटौ'र पूगा सेठ री हवेली ! कैयौ–सेठ ! म्हारा बेटा मरै है !! तै खीर मै क्या घाल दियौ ? हूँ तौ कोटवाळी जाऊं हूं। तनै ब्रह्महित्यारौ पाप लागसी !

सेठ, भा नै माय बुलाय'र ऊंचा-नीचा समझाया। पग कपड़िया। हिडकी रै हाय लगायौ ! कैयौ माराज–पाच पचीस ले जावौ। दवा-दारू करौ। हूंई वैद नै लेय'र पगो पग पूगू हूं।

भा कैयौ– चंडाळ ! बाळ आघडा ई थारा पांच-पचीस !! म्हारी तौ घर रौ घर डूबै है ! तनै पड़ी है रुपियां री !! हूं, हरण रौ हरण जाऊं हूं राज मै ।

हमै सेठ हंगै अर बरै जे काई किसी ई हुयगी तौ सैर में काळौ मूडौ हुय जासी ! राज मै घीसीजसां जिकै पाखती में !

सेठ गळगळौ होय'र, भळै भारा पग काठा झाल लिया । कैयौ– म्हारी लाज थारै हाथ है ! हू धरम सू कैऊं हूं खीर मै कंई बैम करण जिसी जिनस का हीनी !!

भा तड़क'र कैयौ– आघौ हो, फागडदा ! काई गिलारी कूदगी होवैला ! हुं तौ राजाजी आगै कूकसू !!

बाणियै मै घणी खोटी बीती ! लाई री धरा हालगी !! घडी-घडी भा रै पगा मै पागड़ी नाखै !

छेकड पाच सौ रुपिया भारै पगा मैं मेलिया । कैयौ– अैतौ ले जावौ । भळै दवा-पाणी रा बेसी लागै तौ हूं हाजर हूं । राज-दरबार मै इण वात री ठा नही पड़णी जोयीजै । अबै म्हारी लाज थांरै हाथ है, माराज !

भा रुपिया लेय'र ढूका घरै । बेटा नै सगळी हकीगत कैयी ।

बीजै दिन, दिनूगै ई बे पाचै भाई, लावण्यां गांवता, घडा बजावता सेठ री हवेली आगकर निकळिया । कियां जोर सू खैगारा अर फेरियौ मूछ्या ऊपर हाथ ।

सेठ बांरै सामौ आंख्यां फाड-फाड'र जोंवतौ रैयग्यौ !!

४९– कुचकेळणी

बा मसखरा अर मजियोडा मिनखां री मंडळी ही। माया-मत्ता, मजब अर ममता सगळी बाता ऊपर टीका-टीपणी होंवती रैवती ही। पण कदैई किणी रै मन मैल अर सळ आवण रौ क्या काम ?

हां, सळ कइया रै पेट मैं तौ हा ई। कारण कै वे जीभ जोधा रै सागै पेट-पैलवान ई हा। पराये घरै पेट पूजीजता-पीपळ पोखीजता, जणै बारै पेट रा सळ निकळता। इसी तौ कई रै माथै मै खाज चालै जिकौई करै ? कूण इयानै नैत'र चलाय'र करम मैं भाठौ लेवै ? गाडै भरियें धान रौ नास करावै ?

एक दिन मंडळी रा दोय मा'रथी माथौं लगाय बैठा। एक हौ सनातनी तौ बीजौ हौ आरिया-समाजी। आरिया-समाजी कुचकेळणी की—

'पत्थर पूज्या हरि मिळै तौ हूं पूजू एक पाड रे'

सनातनी कयौ– म्हासू मत खसियै ना ? म्हे, थां आरिया दायी ऊपर-ऊपर ई को उडा नी। अरे अकल रा दुसमी– कोई पत्थर नै ई पूजै है ! पत्थर तौ थारी समझ माथै पड़ग्या !!

'तौ थांरी मूरती क्या है ? पत्थर कायनी ?

'पत्थर है ! पत्थर नही, पत्थर रै मांय भगवान है !

आख्यां जोयीजै !! आधा रै तौं पत्थर ई है—

'बुत परदा है, परदे मै छिपा और ही कुछ है ।'

'चाल, इया ई सही । आगै सुण—

'अजब हैरान हूं भगवन् तुम्हें क्यों कर रिझाऊं मैं ?

कोई वस्तु नही ऐसी जिसे सेवा मे लाऊं मैं ।

तुम्हीं हो फूल में व्यापक तुम्ही हो मूर्ति मे भगवन् !

भला भगवान को भगवान पर क्योंकर चढाऊं मै ?

अबकळै सगळै ही-ही करण लागा ! कैयौ– अबकै बाजी मारली !!

भला विरोधी बीर हंसड़ रै बीच मैं इसी छेड़खानी कांकर बरदास्त करतौ ! चिघ'र बोलियौ– चोट्टा किठेई रा इयां कैवतै बाकौ बळै है—

'तुम्ही हो अन्न मे व्यापक, तुम्ही हो पेट में भगवन् ।,

भला भगवान को भगवान मे क्योंकर घुसाऊं मै ?'

इयां कैवै तौ पीडिया किठै सू अरोगै !

सुण'र सगळै जोर सूं हंसण लागा !!

४७- गोठ

फेर-बदळ, जीवण मैं जरूरी हुवै है। लंबी टैम तांई, एक ई सिरखै काम-धन्धै मै लागै रैवरण सू, जी उकत जावै मन माथै एक हळकी उदासी रौ पडदौ पड जावै। उरण हालत मै चित्त उडियौ-उडियौ रैवै। कई काम मै जी को लागैनी।

किलरक अर मास्टर रौ जीवण तौ घरणौ ऊवाय देवण वाळौ हुवै है। अै लोक, लाई, थोडी'सी साती- थोड़ै'सै मनोरंजन पैदा करण वाळै वातावरण नै घरणै चाव सूं जोंवता-उडीकता रैवै है। औई, हाल साहितिक जीवां रौ हुवै है।

छोटी-सी टी पालटी-छोटी-मोटी गोठ इरणां रै मुडदै-मुरझायै मन नै, एक उमंग-इसी ताजगी-इसौ उछाव दे देवै है, जिकौ इरणा नै थोडै समै ताई फुरतीला अर जीवटवाळा बणाय देवै है। घणांई अै उपाव, उणानै मागा पडै है; लाया नै आगे जाय'र मिळै ई क्या है- गिरिणया-तिणिया टक्का। तौई, मन री आ भूख, जरा-सी तगाई भोग'र सात हुय सकती हुवै, तौ वे खुसी-खुसी भोगण नै त्यार हुय जावै।

तौ, इसी तरै री एक छोटी गोठ री तजबीज श्री ...'क' रै घरै हुई। केई मास्टर अर केई साहितिक जीव भेळा हुया। सगळा मै चोखी पटै। पण धधै मै फसियै रैवण रै कारण आपस मैं मिलणौ-भेटणौ समैपायक ई बणै। आज, गोठ रै मिस सू सगळै एक जागा भेळा हुय'र गप-सप अर हंसी-ठट्ठै सू जी राजी कर रैया हा!

जीमण री बेळा, लौत-त्रपत अर थूक बिलोवरा री पिरथा, म्हांरी संसकिरती मैं कायनी। पण पच्छम रै परभाव सू म्हां, म्हांरौ औ गुण छोड़ दियौ। म्हे ई, इण मौकै ऊपर दांत-घसाई करणी चालू करदीवी।

हां, एक बात कैवणी भूलग्या। म्हांरै साथ्यां मांय सू, घणा जणा री धरम-पतनियां सागै ही।

मिनख तौ, फेर ई, आवता-जांवता, बीजां सूं मिळ-भेट लेवै है। लुगाया रै तौ घर भली अर बे भली। तौ, आज लुगायां, लुगायां सू हंस-बोल रैयी ही!

इण कारण गोठ रौ महातम बधग्यौ हौ।

पातळ लागा। पुरसारौ सरू हुयौ।

एक– दूबेजी रै च्यार लाडूवां सा क्या होसी? पुरसारै नै पेट रौ घेरौ तौ देखणौ जोयीजतौ हौ!

दूजा– न्याव तौ सरमाजी सागैई को हुयौनी।'

तीजौ– क्यों?

चौथौ– आ बात ई समझावण पड़सी क्या? सरमाजी कैवै तौ समझायदू।

'(हंस'र) हू क्यौ पालूं हूं?

'बात आ है कै सरमाजी री मूंडौ तौ सुई सौ है परा पेट·········

'कूई सौ है।'

सगळै हा-हा कर'र हंस पड़िया! सरमाजी बोलिया– अरे भाई, थे किसा फूल सूंघौ हौ?

'तौई, थांरी रामात थां खनै ई है!

इत्तै मै दूबेजी सी-सी करता कयौ– अरे राम रे, मार डाला ! मिरचे ती

बात बोट'र राजस्थानी मितर हस'र कैयौ– थोड़ा हौळै, खनलै कमरै मै लुगाया वैठी है ।

'तौ क्या हुवा ?'

सगळै हसिया । दूबेजी सी-सी करता वोलिया– फजूल ही-ही ई करते हो । मिरचे क्या ती ...

ठैरौ-ठैरौ, कैय'र भळै सगळै टी-टी हसण लागा !

एक जणौ माडाणै हसी रोकतौ बोलियौ– दूबेजी इत्ती तौ सतोमत राखी कै आगलौ आखर बोलिया कोयनी ।

'बोलता तो क्या होता ?'

भळै हा-हा-ही-ही हुई ।

दूबेजी थोडा चिघ'र वोलिया– थारौ सवद-कोस कोई न्यारौ होवैला ? आगलौ आखर वोलन से क्या अनर्थ हो जाता ?

'सवद-कोस तौ घणौई एक ईज है पण, था यू. पी. सी. पी वाळा सबदा रौ अरथ थारै खानलौ ई लिखियौ है। म्हारै पासलौ छोड दियौ । हिदी नै राष्ट्रभासा वणावणी है जणै अठीनलौ ई अरथ लिखणौ पडैला ।

'कोई साफ उदाहरण देक'र बताओ ?'

'अटका' री अर्थ लिखियौ है, 'जगन्नाथजी का प्रसाद ।'

'नही तो ?'

'पण, म्हे, जिण बरतण मै परसाद राधै है उण रा चार टूक हुय जावण री किरिया नै कैवा हा ।'

'और ?'

' 'अभ्यागत' रौ अर्थ लिखियौ है 'मेहमान-अतिथी ।

'है ई औ ईज ।'

'जी नहीं । म्हे 'अभ्यागत', 'निकम्मै' नै कैवां हा ।

'(हस'र) थे तौ 'घोड़ै' नै 'गध्धौ' कैसौ ! थारै कैयां कोस थोड़ै ई बदळ जासी !!'

'अर थे 'ऊंट' ने 'हाथी' कैसौ तौ कोस बदळ जासी, क्यों !'

'इसा उदारण तौ हर भासा रै कोसां में मिळ जासी ?'

'बे एक प्रांत रा कोस कैयीजसी । सरबदेसी को गिणीजैनी ।'

'आखर, थे चावौ क्या हौ, साफ ई कौनी ?'

'म्हे चावां हा, कोस बणावती बेळा सगै प्रांतां रै विदवाना नै लेणा जोयीजै । जणै ई एक सबद रा सगळै अर्थ दिया जाय सकै है ।

'हां, आ तौ जचती बात है । पण..........'

'पण भळै क्या ?'

'आ कै थे म्हारै 'ती ''कैणै पर आप लोग क्यौ जोर सूं हंसिया ? क्यों मनै आगली आखर बोलण सू मना कियौ ?

एक जणै दूबेजी रै कान मै 'ती '' मे आगलै आ र रै जुड़ण सू बणतै सबद रौ अर्थ बतायौ ।

हमै तौ दूबेजी– राम-राम, कैय'र हंस पड़िया !

४८— हरताळ

मिनख अर समाज री दसा मै चढाव-उतार आंवती-जावती ई रैवै है ।

लिखमी बधियोडी का रैवैनी । वा तौ चंचळ है । आज अठै तौ काल बठै । कदैई निरधनिया धनवान तौ कदैई धनवान निरधनिया ।

सेठ मोवन रौ घराणौ, एक वखत, थुथकारौ घालण लायक हौ । लिखमी अगाथिया-पगाथिया रुळती ही । आगा दिया पाछा आवता हा । हरचन द्वारा लागोडा हा । मन माफक खावण-पीवणौ मन माफक पैरणौ-ओढणौ अर मन माफक ई मौज-मजा माणतौ हौ । घरर तौ क्या, बांरा नोकर-चाकर अर हाजरिया ई धापता-फाटता हा । टाबर-टूबर, घर मैं रामजी रौ दीन हौ । घर हंसतौ हौ । धन बरसतौ हौ । राज दरबार मै माण-काण हौ । समाज मै घणी पूछ ही ।

पण, कैनै ठा, काकर चाख लागगी । माया मारगै लागगी । ठाठ-बाठ, नाठग्यौ । माण-काण फीकौ पड़ग्यौ । क्या तौ लोक चलाय'र मिळण-भेटण आंवता अर क्या छीपा लेवण लागग्या । एक लिखमी क्या गई सगळी बातां मै ई श्री उतरगी ।

परण सभाव मै फरक काकर पडै ? वासनावां-कामनावां किया कमळीजै ? तिसणा री तेजी कियां मिटै ? छौळ लियोडां सू गरीबी मै गुजराण कांकर हुवै ? घणीई फूल रै जागा पांखड़ी मैं ई संतोस करलेवै। पण पांखडी तौ जोयीजैनी बाई फेर फूलरी ?

तौ, सेठ मोवनलाल, एक इसै मिनख री खोज मै हौ जिकौ पीर, बबरची, भिस्ती अर खर री भेळौई काम दे देवै। खनै टकां रै नाव ऊपर टोटौ। जणै किया काम सधै ?

छेकड़ संजोग बणियौ। म्हांरै मौ'लै मै एक बोळघंट हो। जाबक बोळौ घुन। सैना सू समझै। घर मै लाई रै रोट्या रा फोड़ौ। बोळघंट नै काम-धंधै माथै कूण राखै ? दिन-भर खपत करणियौ भळै जोयीजै। जणै बोळै री सरीर बैरी सैन माफक हिलै-डुलै।

सेठ रै टका को हानी। इणरै रोटी का हीनी। पाढौ ढूकग्यौ। सोनौ अर सस्तौ। जिसडै नै तिसडौ मिळग्यौ। सेठ रै खपत रै रूप मे बस्ती हुयगी। सैना सू समझाय'र चौवटै सू साग-पात अर सवदौ मगवाय लेवतौ। बोळौ रसोई ई कर देवतौ। माया-बाया कर देवतौ। सनेसा बाड़ी भुगताय देवतौ। जणै सेठ रै तौ घणै काम रौ। रोटी सट्टै क्या भूंडौ हौ ?

एक दिन, सेठ नै, हरताळ मगवावणी ही। हमै बोळै घुन नै कांकर समझावे ? छेकड सोचता-सोचता सेठ नै रस्तौ लाधौ।

दानखानै मै टगियोडी हर-गवरी री तसबीर उतारी। बोळै रै सामी धरी। आगळी हर पासी करी। बोळौ जोर सू बोलियौ– हर ? अबै सेठ दोया हाथा सू गीत गाय'र ताळ लगायी। बोळघंट कैयौ– ताळ ? सेठ च्यारानी फैकी। बोळै टुगटुग सामौ जोयौ। सेठ च्यार आगळचा देखाई। बोळै पूछियौ– च्याराना री ? सेठ नस हिलाई। बोळघट बात नै पक्की करण सारू दुसराई– हर ताळ-हरताळ, सेठ नस सू हां कैयी। भळै पूछियौ– च्याराना री ? सेठ हां री सैन करी।

बोळौ भाज'र झट चौवटै सू च्याराना री हरताळ ले आयौ।

४६ – यं

रामलौ अर गिगलौ दोनूं चंट अर चलती रकम। दोनूं एक बीजै रा सिर खावणा। दोनू सूरज रै बारकर फिरियोड़ा।

रामलै रौ भतीजौ हो सुकराचारज। काकै बैनै चौपग्गौ करण सारू घणी ई चेस्टा करी पण बात पार को पडीनी।

किठैई थोडौ आगळी रौ टिकाव होंवतौ, तौ लोग भांजक लगाय देवता कै छोरौ काणौ है। बणती बात बिगड़ जावती।

मंगळू रै अठै सगाई री बात पक्की हुयी। पण किणी बैनै खड़क देदी कै छोरौ तौ काणौ है। बै, रामलै नें कैवाय दियौ कै थारौ भतीजौ दुनिया नै एक आंख सू देखै है, मा'तमा है! म्हारी छोरी मा'तमा सुकराचारज रै जोग कायनी !!

अबै करै तौ क्या करै! अठीनै छोरौ बरसां मै बडौ होंवतौ जावै, बठीनै रामलै री चिंता बधती जावै। मांय, डवकौ कै काणा नै कूण छोरी देसी ?

अबै सुणौ गिगलै री बात। बेमाता बैरै कान मै कैय दियौ हौ कै बेटा थारै जिसी अकल कई मै कायनी! इयै रै ही भतीजी, रूप मैं तवै रौ ऊंधौ पासौ। एक ई टाग सू ऊभी होय'र पति पावण सारू तप करती !!

गिगलौ मर-पच लियौ, पण, छोरी सारू बीन को ढूकौनी। जिठै बात चलती उठै गिगळै रा दोखी भागौ कर देवता कै छोरी खोड़ी है।

छेकड़ उथप'र, अबकी बार छेकडली चेस्टा करण सारू औ घर सू टुरियौ ।

'भाग फूटोडै नै करम फूटोडौ सौ-कोसरी अवळाई खाय'र मिळ जावै ।'

तौ चौभाटै माथै अै दोनू पूत टकरिया । 'जैरामजी' हुई । नाव-गाव पूछिया । एक जणौ, बीडी रौ बंडळ काढियौ । बीजै तीलया री पेटी । दोये लागा धूवौ छोडण । दोये सोचै'कै बात काकर टोरा ?

छेकड़ गिगलै धूवौं काढतै पूछियौ— आगै सिध जावौला ?

'देखा, भाग किठै गोता खुवावै ।'

'क्यो, इसी काई आपदा है ?'

'काई बतावा दुनिया री रगत . .. .

'हा-हा, कोनी सकौ क्यो करौ हौ ?'

'दुनिया री रंगत ई जाबक बदळगी । लोका री मती ई ऊधी हुयगी । देखौ, म्हारै सतरै बरसां रौ भतीजौ है । देख्या भूख भागै ! हाडे-गोडे पूरौ । गाव मै सगळा सू सिरै भणियोडौ पण . .. .'

'पण काई, कौ तौ खरी ?'

'क्या कैवा, वै खातर टाबर को मिळैनो । वैरी भागौ कर देवै कै छोरै मै आ कसर है, बा कसर है ।

'असली बात काई है ?'

'कई नही सा ! आख दूखणी आई। डागदरा आंख आडो पाटी बाधी है। खोलण री मना कीवी है।'
'आ तौ कई बात कोयनी ? चिता मती करौ। बैरी-दुसम्या री मूडौ काळौ हौसी !'
'कद होसी ? हणै तौ चिता सू म्हारौ काळौ हुय रयौ है ! खाणौ-पीणौ हराम हुय रयौ है ! म्हारै समाज दीसिया डूबगी बात !!
'इण मै काई फेरसार है ! डूबोड़ीज है ! जदई तौ थांरै जिसा सैणा नै फोड़ा पड़ै है ! देखौ, बैरचा री बात तौ खैर जावणदौ ?'
'नही-नही, कौ क्यौनी ?'
'क्या कैवा, दोस कई नै कोयनी ! दोस आप रै करमां नै है !!'
'तौ कैवौनी, म्हां सू क्यो छानी राखौ हौ ?'
'म्हारी भतीजी रूप री रंभा, गुण री लिखमी है ! पण...... ....'
'पण काई ?'
'बैरी भागौ कर देवै कै बा खोडी है। असल मे बात आ है कै वा ईता री जायोडी है। गोदी सू नीचै काकर उतारा ! घणी दोरी देखी है ! हू तो कैवू हू भागा करणियां रौ नास .... '
'हुया बिना कदेई टळै है ! जरूर होसी !! आप चिता छोडौ। (मुळक-दुळक'र) थारै जचै तौ म्हारै भतीजै .... '

'(बात बोट'र) अरे सा, इसा म्हांरा भाग किठै है जिकौ आप सिरीखा सगा.........'

'ओ तौ आपरो मोटापणौ है ! म्हे तौ आपरा चाकर हा !'

'आ किया हुवै ? आप म्हारै माथै रा मुगट, सिर रा सेवरा हो !

'तौ जरणै सगपण पक्कौ हुयौ ? आप म्हानै छोटै सू मोटा किया !'

'क्यो म्हानै लजखाणा घालौ हो ? भला, म्हारी क्या बिसात जिकौ डूगरा नै छैया करा !'

'जै रामजी री सा ।'

'जै रामजी री सा– जै रामजी री सा ।' रामूजी ! जान धूम-धाम सू लाया भलो'क ?'

बीन रै आख ऊपर पाटी बधियोडी बीनणी काकै री गोदी मै । फेरा हुया । मनोरथ सफळ हुयौ जाण'र रामलै भतीजे रै कान मे होळे सी'क कैयौ– 'जुग जीतियौ रै बेटा काणिया !'

गिगलौ सुण'र हसियौ, कैयो– 'म्हारी बाई पर्ग हालै जरणै जाणिया !'

दो घर डूबता एक ई डूबौ !!

५०– वतऊं

म्हांरौ देस– भारत वरस, एक विसाल अजवघर है। जिठै तरै-तरै रा नगर, तरै-तरै री भासावा देखण नै मिळै है। कदैई-कदैई भासावां रै फेर सू अर्थ री इनरथ हुय जावै है।

बीकानेर री वात है। एक गुजराती अफसर कोट गेट वजार मैं पसारी री दुकान आपरी जोयीजती जिनस लेवण गयौ। जै राम जी री कर'र बै पसारी नै कैयौ– जल्दी से पाव भर हिरमिच दे देना तो'? पसारी, जिनस झळावणियै सामौ जोयौ। बौ फट्ट ई ठूंगै मै जिनस तोल'र घात लायौ। पइसा देवण सूं पैला, अफसर ठूंगै री जिनस देखी। इचरज सूं बोलियौ– भाई, क्या मागा क्या दे दिया ! जरा आंख खोलकर देखोना यह हिरमिच है ॥

पसारी जिनस देख'र बोलियौ– भाई साव है तौ हिरमिच ई। म्हानै आख खोल'र देखण रो कैवौ हौ, आपई जरा आख खोल'र देख लेवौ।

अफसर हौ चिडथियौ अर बळतोड़। बोलियौ– मुझे उल्लू बनाते हो ! जैसे मै नया ही सौदा लेने आया हूं ! कैसी बात करते हो !! चीज की बेचीज तो मत दो ?

पसारी धीरजवाळौ हौ कैयौ– बाबू साब अबै इयै रौ निरणौ कूण करै ? थे इयै नै हिरमिच को बतावौ नी। म्हे बतावा हा। राड सू बाड भली। हाल पइसा तौ दियाई कोयनी। जिनस पाछी देय दौ।

बीजी दुकान गयौ तौ उठैई आई हकीगत हुई। तीजी गयौ तौ बै तीजी ई सुणाई- कै आईज हिरमिच है, बिकरी री बेळा माथौ ना लगावौ।

खिज'र अफसर तौ पाधरौ घर रौ रस्तौ लियौ।

दफ्तर मै, बै, औ किस्सौ सुणायौ। अठै रै दूकानवाळा नै अज्जड अर मोथा बताया।

म्हा पूछियौ– थे क्या चावौ हौ, म्हे ई को समझिया नी ?

बा चिघ'र कैयौ– क्या नही समझे ! आपरै गूजै माय सूं एक नग जवहरडेरौ काढ'र देखाय'र कैयौ- यह चाहता हूं।

म्हे सगळै जोर मूं हसिया ! कैयौ-इयै रौ नाव 'जवहरडै' है हिरमिच' कोयनी। अबै तौ बो ई चकरीजियौ, बोलिया-क्या कहते हो !

म्हे फेर हसिया ! बो बोलियौ-हम गुजरात में इसको 'हिरमिच' बोलते है !

म्हा कयौ– हिरमिच तो लाल रग री होवै है। पोतण रै काम आवै है।

इणी तरै री एक बीजी बारदात सुणौ। बठै हाथापाई री नौबत आयगी ही।

हां, तौ एक राजस्थानी भाई किणी काम सूं लाहोर पधारिया ।

मकान रै सामै, सड़क माथै, बां, एक जणै नै मा' टोकरौ धरियां ऊभौ देखियौ । पूछियौ– इसमें क्या है ? टोकरै-वाळै उथळौ दियौ– 'बताऊं' । जन्टरमैन कैयौ– बता तो भला ? टोकरैवाळै भळै कयौ– 'बताऊं' ।

जन्टरमैन साव, थोड़ा ठेर'र बोलिया– अजब आदमी है ! खड़ा मुंह क्या ताकता है, झट बोलना ?

'हजूर, 'बताऊ ।'

'कब का बताऊं-बताऊं बकता है, । बताना !

'साहब बताऊं ।'

'अबे उल्लू, क्या कल बतायगा !

'कह तो दिया 'बताऊं ।'

जन्टरमैन रै इत्तौ खटाव किठै ! चिध'र रीस मैं कैयौ- बताता है तो बता वरना चलता बन ।

टोकरैवाळौ ई उथपयोड़ौ हौ । गळौ फाड़'र बोलियौ– बताऊं-बताऊं-बताऊं ।

नहीं मानता हरामजादे, मुझसे मजाक ! कैय'र साब बैरै एक थप्पड़ जमाय दियौ !!

टोकरैवाळौ पंजाबी मैं बड़बड़ करतौ, आंख्यां चढ़ाय'र संभियौ थप्पड़ रौ जबाब, मुक्कै सूं देवणनै !

खनैं सू वैंवतैं एक भलै मिनख टोक'र कैयौ— अबे, क्या करता है ?

टोकरैवाळौ बोलियौ— साले ने चाटा जो मार दिया। बाबूजी बैंनै समझाय'र बोलौ राखियौ। जन्टरमैंन नैं पूछियौ- बात क्या है ?

साव कयौ— अजी कुछ नही जी। इतनी देर से पूछने पर 'बताऊ-बताऊ' बकता है और बताता नही।

भलौ माणस हसियौ। कैयौ— इसमे न आपका दोष है न टोकरेवाले का। यह तौ भाषा की भिन्नता की करामात है। हम पंजाब मे 'बताऊं', बैंगन को कहते है।

इयां कैय'र बा, टोकरै ऊपरलौ कपड़ौ आघौ कर दियौ। हमैं मामलौ साफ हुयग्यौ।

म्हारा जटरमैन साव लजखाणा पड़'र टोकरैवाळै सूं माफी मागी। भलै माणस नैं घणा धनवाद दिया। झगड़ौ मिट्यौ।

५१– डौढ़ सैणौ

गळीवाळा बैनै 'डौढ सैणौ' कैया करता। रंग मैं तवै रौ सागी भाई होवण सू, केई बैनै कागलौ कैवता। सभाव ई कागलै सू मिळतौ-जुळतौ ई हौ।

'आप कानून घणा छाटतौ। बात मांय सू बात काढ़तौ। सुणनिया री खोपड़ी खाय जावतौ।

भायला-भपेला, मजाक मैं कैवता– आज थांरै घरै जीमसा। जणै, आप, कदैई तौ मनियै री मा घर मै कायनी अर कदैई बैरै हाथ लगावणौ कोयनी कैय'र साफ कोरौ निकळ जावतौ। टाळ बताय देवतौ।

पण, आप घणी बार जीमण री बेळा भायलां रै घरै पूगण मै नागा को करतौनी। कैवत है'क– खीरा मेली खीचडी, टीलौ आयौ टच्च।' आ, बै ऊपर सांगोपाग घटती ही।

भायला हंसी मैं कैंवता– म्हे तौं जीम चूका, चणूं करां हा, तौ उथळौ देंवतौं, कूण थांनै पालै है, करलौ चणू। आप डचियै गोधै दायी धीगाणै, धस'र थाळी मै हाथ मारणौ सरू कर देवतौ!

सागीडौ जीमण रौ तौ बैनै जी सू सौक हौ।

भाग सू लुगायी इसी मिळी जिकौ बिडदाय-बिडदाय'र बैरौ उछाव वधावती रैवती। कैया करती– पराये घरै जीमौं तौ कोरौ नांव ई मती किया। इसा डट'र जीमिया करौ जिकौ जीमावणवाळै री ठा पड़ जाय! बाख फाट जाय—

कंथा ! इसडौ जीमजे पेट फाट मरै,
राड हुयी रौ धोखौ नही, पर घर हाण करै ।

आप ई, जीमण मै ओछौ को उतरतौ नी ! पेट मायला सगळै ओरा-गूभारिया भर लेवतौ ! घरै पूग'र विछाणा विना विछाया ई, शवासण लगाय'र लबौ पड जावतौ जणै बहू समझ लेवती'कै आज पति-परमेसर जीमण-जुध्ध मै 'जीत'र आया है !!

एक बार इसी बीती जिकौ लैणै रा दैणा पड़ग्या ! लोभ सू गोदाम मै, इत्तौ माल भर लियौ'कै दसू वारणा ढकीज'र सास ऊचौ-नीचौ आवण लागौ ! पेट ढोल बण'र नगारै दाई बाजण लागौ ! 'अरे राम ! हमै मरियौ-हे राम मरियौ रे !!

भलौ हुवै, लाई, धरमारथ दवाईखानैवाळै वैदजी रौ, जिका री दवाई सू, घणखरी वायु नीचलै बारणै सू निकळ'र अकास मै जाय मिळी ! पण सागै ई बध खुलग्या ! एक-दो-तीन-च्यार कर'र, इक्कीस दस्त सागैई लागा ! कई दिना ताई बध खुलिया ई रैया— मार दस्त ऊपर दस्त ! आख्या बैठगी ! मूडौ निकळग्यौ ! सरधा टूटगी । माचौ झलग्यौ !!

वैदजी कैयौ— भाखफाटी, हवा खाया करौ । आ बात आपरै हाडो-हाड जचगी ।

भोर हुयौ । चिड़्या चक-चक करण लागी । आपरी नीद उघडी । डागलै सू नीचै उतरियौ । कई सोचण लागौ । डीढ़ सैणप मगज मै चक्कर काटण लागी ।

मन मैं विचारण लागौ– वैदराजजी कैयौ हौ– 'हवा खाया करौ।' 'हवा लेवौ' को कयौनी। तौ, हवा खावणी है, लेवणी तौ कायनी। बारै जावण री तौ सगती कायनी। डागळै चाला। ऊपर सुध्ध हवा आसी।

भोर री फूल-ठड पडै। इयै डागळै जाय'र हवा खावण सारू बाकौ फाड दियौ! सरीर हौ जाबक कमजोर, ठड सू छाती जड़ीजगी! जोर रौ जोखाम हुयग्यौ! अर सिज्या नै चढग्यौ जोर रौ ताव!!

म्हा भायला नै ठा पडी कै कजळूजी माचै मै पड़िया है। सगळै सुख पूछण गया।

आगै देखा तौ कजळूजी तौ होळी रा सांग बणिया बेठा है! माथै ऊपर एक लबौ मैलौ ऊनौ टोपलौ जिकै माथै छुरंगौ। कबर मै डौढ हाथ रौ फाटौ पुराणौ गमछौ लपेटियोडौ, रंग रातौ राजा हाई! जाणै माचै माथै साख्यात कोई लगूर बैठौ हुवै! कसर-कसर पूछ री ही! भेस देख'र, म्हां माडाणै हंसौ रोकियौ!!

म्हा पूछियौ– तबियत काकर है?'

'मर रैयौ हू।'

'हुयौ क्या?'

'जो खाम बण'र छाती जड़ीजगी।'

'मीडकै नै ई जो खाम!'

'फोट थानै दुष्टा! हूं तौ मर रयौ हूँ। थानै रौळ सूझी है!

क्या करा म्हे ? 'कैमरौ सागै लाया कोयनी, नयी तौ'

'नही तौ करम फोडता ! देखौ दुष्टा नै मजाक सूझी है !!

कजळूजी, सगळा सू, सवायौ म्हारौ विसवास किया करतौ हौ । मै पूछियौ– मनै तौ बताय दौ क्या कौतक कियौ ? काकर बुखार आयौ ?

बो बोलियौ– इया सगळा सैताना नै बार काढ दै तौ बताऊं ।

सैतान सोरे सास उठै सू जावण वाळा थोड़ै ई हा ! कमरै रे असवाडै-पसवाडै लुक'र ऊभ ग्या । कजळूजी मूडौ फाड'र हवा खावण री बात कैयी । हमैं तौ मनै ई जोर रौ हंसौ आयौ !

इत्तै ई मै बार सू आवाज आयी– भळै बाकौ फाड़'र हवा खाये, भायला ! सागै ई सुणीजियौ जोर रौ हंसौ – हा-हा-हा ही-ही-ही !!

कजळूजी लजखाणौ पड'र मुळकतै कैयौ– सगळै लुच्चा वळै है ! बदमास, बारणै रै चिपियोड़ा कान लगाया सुणता हा ! फेर रजाई सू मूडौ ढक लियौ ।

म्हे सगळै सारै मारग हसता-हंसता घरे आया !

५२– दाढ़ी ऊपर टैक्स

जमानौ बदळग्यौ, रंग-ढंग बदळग्या, भेस बदळग्यौ भासा बदळगी, मन बदळग्या, मानतावां बदळगी, संसकार बदळग्या धरम रौ सरूप बदळग्यौ अर बदळग्या मोल तोल करण री निजर रा आधार। पण आ सगळी उथळ-पुथळ घणखरी सैरा मैं ई हुई। गाव इणा सू घणी बाता मै अछूता रैयग्या।

म्हांरा गावा मै हाल ई जूनी बाता अर इसा भोळाभाळा मिनख मिळै है जिका नै बदळियोड़ै जमानै री हवा ई का छीपी नी।

म्हांरौ लक्खू जाट इणी तरै रौ जीव हौ। किणी काम सू माड़ाणी सैर रौ मूडौ देखणौ पडियौ। अठै रौ ढ़ंग-ढाळौ अर जिनस-पत्तर नै आख्यां फाड'र जोवै!

बा दिनां मै फोनू बापरिया ई हा। सगळा नै, इयारौ घणौ चाव हौ। जागा-जागा फोनू बाजै।

लक्खू एक चौक माय सू निसरियौ। तौ क्या देखै है कै लकडी री चमचमांवती पेटी जिण ऊपर एक मोटौ हौकड़ौ लागौ है, रै बारकर केई जणा बैठा है। उण पेटी मायसू मिनख जिसी बोली आय रयी है!

लक्खू देखियौ औ भळै क्या कोतक है! बौ ई ढुळक'र खनै जाय ऊभौ। लाई ऊचबै भरीजग्यौ कै रावौ क्या है! पेटी माय मिनख किया बोलै है! इत्ती छोटी पेटी मै बड़ियौ काकर! बड़ियौ तौ मायौ काकर! मायौ तौ जीवै कांकर!

हमै क्या करै! लाई रै गतागुम मै का आयानी! खनै ऊभै एक मिनख नै पूछियौ— औ भ` के सांगौ है! भले भाई-भले!!

'पेटी से भूत बोलै है ।'

'साचे ई !'

'तो कूड थोडै ई ?

'बडियो काकर !'

'मितर सू ।'

'इण पेटी रा के दाम लागै है ?'

'सौ रुपिया'

'समझ को पडी नी, कित्ता ?'

'अरे जट्टू पाच वीसी, समझियौ'क ?

'समझग्यौ । दाम बोळा लागै है । चीज तो अैडी है, भले भाई भले !

लक्खू आगै वधियौ । सैर मैं मसकरा मोकळा हुवै है । लक्खू नै देख'र एक जणै रै मन मै चुळबुळी चाली ! वोलियौ-न चालियौ अर लक्खू री दाडकळी झालतौ ई हुयौ ! पछै धमकावता बोलियौ– ठैर । आगै किठै वधै है ।'

लक्खू चौकळीज'र कैयौ– क्यू ! तेरौ के लियौ ।

'आटौ बोलै है, तनै ठा कोयनी !'

'क्या की ?'

'औ घास क्यू बधायौ ।'

'म्हे गाववाळा दाडी रखावा हा ।'

'रखावौ तौ हौ, पण इण रौ भार हुवै है नी ?'

'मेरे पर, तो तन्नै के ?'

'तेरे पर नही सडक माथै । सिरकार इण पर लाग लगाय राखी है ।'

'अरे भाई-अरे भाई– गांव.........

'गांव-फांव हूं को जाणू नी ? देखलै, तनै कोई दाड़ी-वाळो बैवतौ दीखै है ?'

लक्खू निजर पसार'र जोयौ तौ बैनै, निर मुच्छिया, अठै लावौ ! काजळ रै सिलकियै जियां, काजळ री बडी टीकी जियां, अर कोई-कोई बट घाल्योड़ी मूछावाळा मिनख तौ बैवता दीसिया पण दाड़ीवाळौ एक ई को दीसियोनी । जणै लक्खू रै जची कै वात तौ साची है ।

बौ लाई हाथ जोड़'र डरतौ बोलियौ– अबकाळै तौं छोड़दै पछै हूं मूंडा लेसू । मैं तौ गाव रैऊं-हूं, ठा को हीनी ।

'ठा को हीनी कैयां छूटको को हुवैनी । राजकाज है, काढ रुपिया ?'

'कित्ता'क ?'

'दो बीसी ।'

'इत्ता मेरे खनै कठै पड़िया है !'

'जणै चाल कोटवाळी अर मूडाव दाड़ी ।'

'अरे नही भाई । राम-दुहाई, मनै कोटवाळी मत लेजा ! (डरते-डरते, आंसू नाखतै) मेरा हाड फोड़ गेरैगा ! आ दाड़ी तूई भला'ई कतरलै !!

सुणनियां सै हंसण लागा ! लक्खू रै पड़ी ही जीव री ! एक भलौ-माणस बोलियौ– क्यों संतावौ हौ रे, गरीब नै ? जावण क्यों दौनी ?

लक्खू रौ पिडौ छूटियौ, अर बौ-तौ छूमितर हुयग्यौ !

५३– मैमसाब रौ फदर

जिका रौ भेस वानै ई छाजै। जिका री भासा वानै ई ओपै। कोई कित्ती ई पराई भासा भळाई भण लौ, पण, जिकै री बा मातरी भासा है उण रै जोड़ै कदै ई को पूगै नी। मातरी भासा मै लिखियोडा लेख, मातरी भासा मैं दियोडा भाखण, मातरी भासा मै पिरगट कियोडा भाव आपरै देस भाया रै मना मै सोळै आना उतरै। इसा पराई भासा मैं पिरगट कियोडा कदम काळ मै ई सोळै आना तो क्या आठाना– दो-च्यार आना ई पल्लै को पड़ै नी।

बिबेकी तौ, आपरै भाया सू, मातरी भासा मैं ई बोलै। पण डौढ-सैणा, अधबूळिया, फीगरियोडा सान देखावणिया मिनख बिबेक्या सू गिणती मैं मोकळा मिळै है। जिकै घरवाळा सू ई पराई भासा मै बोलण नै बडपण अर सान समझै है! इसा मिनख मातरी-भासा रा सतरू हुवै है! अर उणरी ऊनती नै लारै धकावै है!!

म्हांरै राजस्थान मै इसा मिनखा री कमी कोयनी। कमी क्या बीजी जागावा सू बेसी है।

सैणा वजै जिकारी अकल निकळियोड़ी दीखै! आपरैं घरवाळा सूं, भाया सू मितर भायला सू बोलती बेळा वे 'हम' 'तम' छाटियै बिना को रैवैनी! जाणै लाई यू पी. सी. पी. मै जिलमियोड़ा होवै! अबार पाधरा ई उठै सू आया हुवै!!

केई तौ वीच-बीच मै अंगरेजी छांटण लागै पाखती मै ! वीजी जागावां रा लोक, इयां को करैनी ! इसा मिनखां नै मोथा-डफ्फा समझै ! मांय ई माय हंसै !

औ रोग दफतर रै बाबुवा मै घणौ मिळै। अर बांरै सतसंग रै परभाव सूं चपरासी तांई अछूता को रैवैनी !

इसी ई, एक नजीर अठै लिखी जावै है।

म्हांरै दफ्तर री साब, काळी साव को ही नी, गोरी ही परण तौई हिंदी नही बोलतौ-समझतौ हुवै इसी बात का हीनी। परण ठा नहीं, किसनै चपरासी नै बैम ही कै साब हिंदी समझै कोयनी, कन वौ आपरी सेखी अर चतराई जतावण सारू, साव सू बात करती बेळा, वीच-बीच मै अंगरेजी रै सबदा रौ उटपटांग पिरयोग कर लेवतौ हौ !

संजोग इसौ बणियौ, कै लाई मघ्घै चपरासी रौ सुसरौ समायग्यौ। बौ दफ्तर को आयौनी। साब रौ हौ बौ अरदली।

साब पूछियौ– किसना ! मग्गा किडर ?

किसनै हडबडाय'र उथळौ दियौ– हजूर ! मघ्घा की मैमसाब का फादर मर गया है।

साब किसनै रै सामौ आंख्यां फाड'र जोयौ ! पछै मूडै आडौ रूमाल देय'र हसतौ-हसतौ कमरै मे बड़ग्यौ !!

५८– मास्टरजी

धरम रा वीज किसा'क हुवै है, किसी मिट्टी जोयीजै, जड ऊडी जावै कै ओछी, कित्तोक विस्तार हुवै, किण तरै री खाद'र सीचाई जोयीजे वा सदा हरी रैवै है कन सूक जावै, किण तरै रा पत्ता-फूल-फळ लागै, इया सगळा सवालां नै केन्द्र बिंदु मान'र, मानवी बुध्धी अर संसार रा मत-मतांतर जुगा-जुगा सू बार कर चक्कर काटता आय रया है।

पण मास्टर सोवनलालजी री वहू री बुध्धी री फेरी अठै ई ठभ'र आगै का वधती ही नी, क 'धरम री जड सदा हरी रैवै है।' कंनै दिया सू धरम और कंनै दिया सू पुन्न री जागा पाप हुवै है अर्थात कूण पात्र अर कूण कुपात्र है, इण बाता सू वैनै कई मुतलव को हौनी। वा, तौ, मागणिया नै, धरम रै नाव ऊपर दिये ई राखती।

मास्टरजी रौ घर हौ मभ चौक मैं। लुगाई भलै भाग सू मिळी धरमातमा। घर मैं मगता री बाढ आयगी।

छुट्टी रै दिन मास्टरजी घर मैं वैठा हा तौ वानै भिन्न-भिन्न सुरा अर सबदा मे 'जै-जै' सुणीजी– 'जै रुघनाथजी री,' 'जै ठाकुरजी री', 'जै हडमानजी री', 'जै रामजी री', 'जै किसन भगवान री', 'जै रामदेवजी री', 'जै भैरूनाथ बावै री', अर 'जै पवनसुत हडूमान की।'

जै भगवानिया पछे आयी भजनानदिया री बारी– 'कोई मीरा मेडतणी भगवा लेलिया हर राम', 'मेरे गिरधर गोपाळ

बीसरो न कोई', 'मुगट पर वारी जाऊं नागर नंदा', 'राधाजी नै डसग्यौ काळौ नाग', 'बेटा सरवण पाणीड़ौ पाव'; 'राजा भरतकुमार एक दिन सिकार की धारी मन मे', 'कभी नहीं सुना कि धन घट जाता है, दान दिये से' अर 'सेर भर आटा पाव-भर दाळ जब देगा नरसग का लाल।

मास्टरजी नाको-नाक आयग्या ! हंस'र पूछियौ– आज-काळ बार जावणौ बंध कर'र घर मे ई कीड़ी-नगरौ सीचणौ सरू कर दियौ क्या ?

'कांकर ?'

'जोयौ कोयनी, हणै तांई कित्ती जमात थारै घरै आय-चूकी है ! हाल किसौ तातौ टूटियौ है ? सिज्या तौ मौ ....

'(वात बोट'र) इयां मत कैया करौ। धरम री जड़ सदा हरी रैवै है।'

'आ तौ हूं ई मानू हूं। दीखै ई है, बा जड़ थारै आंगण मै ऊंडी जाय'र मजबूत हुय चूकी है !'

'छोड़ौ मजाक ! थां सुणियौ कोयनी औ भजन– 'कभी नही सुना के धन घट जाता है दान दिये से।'

'सौ सुणियौ-सुणायौ है। काल सू एक काम करौनी ?

'क्या ?'

'एक रसोइयौ अर एक नोकर राखलौ।'

'क्यों ?'

'नोकर तौ फकीरिया फौज नै धान-चून बांटसी अर रसोइयौ.........

'(वात बोट'र) अर रसोइयौ क्या करसी ? म्हारी माथौ !'

'भला लिखमी, म्हारी जाड़ है जिकौ हूं म्हारै छोटै मूडै सू थारै मोटै माथै री नाव ......

'ना छेडौ ना, थानै तौ छुट्टी रै दिन रौळ सूजै है !'

'अर तनै नारायणी मडळचा री सेवा सू फुरसत का मिळै नी !'

'फेर वाई बात, थानै तौ कुचकेळनी कियां विना आवड़ै कोयनी ! कैवौ नी रसोइयौ करसी क्या ?'

'लाया, रौ पीसण-पोवण रौ फोड़ौ मिटाय देसी ! खाली १०) १५) रुपया री ई तौ वात है ! जिकौ धरम री जड तौ हरी है ई ! पण क्यौ मन्नू री मा, हमै तौ धरम री बेल मै धौळा-धौळा फळ लागण लागग्या होसी !'

'किसा फळ, साफ ई कैवौनी ?'

'अरे बे फळ को हुवैनी क्या ? जिका नै धरम री भासा मै 'धौळा फळ' अर लोक-भासा मै 'नगद नारायण' कैवै है ।'

'बस रैवण दौ ! थानै तौ मजाक-मसकरी छोड'र कंई सूझै ई कोयनी !'

'भळै सुण, वे 'नारायण' मीठा घणा बोलै है— टणण... टण-टणण-टण !

अबकाळै तौ मन्नू री मां हंसियै बिना का रै सकी नी ! पूछियौ— छेकड, थे चावौ क्या हौ !'

'मुगती ।'

'भळै छेडखानी ! कैसू, म्हारै सू !

'ना-ना ।'

'तौ पछै ?'

'थांरी फकीरिया फौज सूं ।'

'आयां नै हाथ रौ ऊतर देवणौ ई पड़ै । म्हारै सूं तौ 'ना' को कयीजै नी ।'

'तौ तू घर री मालकण री हैसियत सूं मनै हुकम देदे । हूं काल ई ·······

'क्या करसौ !'

'फ्लीट छिडक'र इया सू पिंडौ छोडाय लेसू !'

'कांकर !'

बताऊं, कैय'र मास्टरजी एक कम एक दरजण बांदर सेना रै वीरां नै हेलौ पाड़ियौ। सै उछळता-कूदता, बाप नै घेर'र ऊभग्या !

मास्टरजी कैयौ– देखौ बेटां ! अबै आपारै चौकी माथै जै भगवानिया अर भजनानंदिया चढ़ै तौ थेई बारै जियां ई 'जै' बोल'र बारीसर बांसू कैया– 'बाबाजी पइसौ दौ-बाबाजी पइसौ दौ ।'

बांदरां पूछियौ– बे नही देसी जणै ?'

'जणै क्या ? वारै हाथ धोय'र लारै ई पड़ जाया ।

नही देवै तौ पिंडी मती छोडिया ?'

बीजै दिन, ज्योंई बादर-सेना, जै भगवानिया अर भजनानंदिया ऊपर 'बाबाजी पइसौ दो—बाबाजी पइसौ दौ' रौ रामबाण छोडियौ कै वारा पग छूटग्या ! भळै वांरी हमलौ बोलण री हीमत टूटगी !!

५५– झूठौ झमेलौ

गोपाळ अर हरी दोनूं बाळगोठिया ।

पण पैलड़ौ, घणौ कंजूस-कंजूसां रौ राजा । चाम जावौ पण दाम ना जावौ, वैरौ मूळ मितर !

गोपाळ वैसूं रौळ किया विना चूकतौ को हौं नी । भलाई करौ ! कांकडिया कंवळा घणा जिकौ स्याळिया खाय जावै !' जीमांवणौ तौ दूर, वैनै पाणी पायौ ई पोसांवतौ को हौ नी ! सूकौ ई टरकाय देवतौ !!

हरी, एकरसी मन मैं पक्की धारी कै इयै कंजूसराज रै लढ़क लगावणी ! तौ वौ करड़ै मतै टुर बयीर हुयौ ।

गोपाळ, वैनै आघै सूं आंवतौ जोय'र मन मैं विचारियौ कांकर इयै चंडूळ सूं पिंडौ छोडावां ?

वै आपरी बहू नै, सीखाय-पढ़ाय'र एक थोथौ बांसड़ौ त्यार राखण री कैयौ ।

हरी आय ई पूगौ । गोपाळ पूछियौ– आज दिनूंगै ई कांकर फोड़ौ देखियौ ?

'थां सूं मिळियां नै केई दिन हुयग्या हा जिकैसूं ?

'तौ नीरांत सूं, जीम-जूठ'र ई आंवतौ ।'

'अठै ई न्हासां-धोसां र भौजाई रै हाथ सूं ई जीमसां ।

मजै सू बाता करसा ।'

'तौ हालौ कूवै हाला ।'

'कूवै क्यो ?'

'अठै ऊनौ पाणी करणौ पडसी । मुफत मैं बळीतौ बळसी । उठै ताजौ निकालियोड़ौ न्यायौ पाणी न्हावण नै फोकट मै मिळसी ।

'तौ हालौ, थारी मरजी ।'

न्हाय-धोय'र घरै आया । अठै चूलौ ई को सिळगियौ हौ नी ! गोपाळ गरम होय'र बहू नै पूछियौ– वात क्या है ! कद रसोई बणसी ! हणै ताई त्यार हुय जावणी जोयीजती ही !

'त्यार म्हारै सिर सू होंवती ! साग लाय'र दियौ हौ !

'पैला करमा नै क्यौ रोई नी !'

'मूडौ सभाळ'र वोलिया ! कसूर आपरौ अर खोटी-खरी मनै सुणावौ हौ !!

'तौ अकल री बैरण मनै पैला कै देवती !

'थानै को सूझतौ हौ नी !'

'क्यौ ? माथै चढ़ै है क्या ! हणै हूं पूजा .... '

' 'पूजा उतारौ' जिकौ हूं मोल री गोली का आई नी ! म्हारै वाप टका को गिणवाया नी ! बडा न्याल किया जिकौ अबै पू......

बोली का रैवैनी, कैय'र, गोपाळ फटै-फटैं बैरै ऊपर थोथी वासड़ौ फटकारण लागौ !

बै ई घर माथै उठाय लियौ ! ऊंचै सुर सू बाकौ फाड़ दियौ– 'मारै रे–मारै रे–छोडावो रे !!

आड़ोस-पाड़ोस रा अर सुणता-गुणता लोक भेळा हुयग्या ।

हरी नै आई लाज ! लुक'र हौळैसी डागळै ऊपर जाय चढ़ियौ !

थोडी देर वाद मिनखां री रमरभोळ मिटी । गोपाळ इणगी-उणगी चोखी तर देखभा 'र हौळैसी कैयौ– हमै तू क्यों रोवै है लिखमी ! मै तनै किसी साचेली मारी ही !'

बा'ई सुर वदळ'र, गणका करती बोली– तौ हूं किसी साचै ई रोऊं हूं !'

इत्तौ मे ई, डागळै सूं मूंडो काढ़'र हरी हंसतौ बोलियौ– ' ई किसौ साचेलौ गयौ हूं !

अबै तौ धणी-वहू रै अर बहू धणी रै सामौ आंख्यां फाड-फाड'र जोवण लागा !!

५६— जोसीजी

जोसीजी हा फक्कड, 'कोई जोरू न जाता अल्ला मियां से नाता !'

आज अदीतवार तीखौ बार ! छुट्टी री दिन ! सगळै काम नीरात सुं हुवै । जोसीजी उठ'र आख्या छांटी । कराई सिल्ला-लोढीनै सिनान ! पिरगट करी सुभ कामना 'सिला लोढ़ी करै सिनान रिध्धी- सिध्धी देवै भगवान !!'

भांग छणी ! रग लागण लागा !! 'लैणा ही कैलास पाति,' 'आवौ सन्तौ पियौ प्याला, पापी पाखडी रा मू काळा,' आव हरी-भरी गुणकरी, भेज सिव भोळा छप्पन किरोड़ री चौथाई जिण नही पीवी भाग री कळी उण छोरै सू छोरी भली, मार मूजी रैंकूचा, कदै न आवै ऊचा !!'

नसापता जमाय'र, जोसीजी जरदा-पत्ती लगाई ! पछै, 'पिच थू-पिच थू' करता टुरचा जगळ !

पछै कुरळा-दातरण, सिनान-सपाडा अर सेवा-पूजा सू निपट'र चेतायौ चूलौ ।

आटौ ऊसणन बैठा कै बाररणै सू एक साधू अवाज लगाई 'नारायरण-हरि', 'नारायरण-हरि ।'

जोसीजी हा हंसी-खुसी रा जीव ! बोलिया– पधारिया तौ मौकैसर ई ! जै हो नारायण ! बारै ई ऊभा रैवौला कै मांय आय'र दरसण देवौला !

साधू– अरे वावा ! हमसे क्यों मजाक करता है !

जोसीजी– तो क्या अपने बाप सूं करूं, नारायण !

इत्ती कैय'र जोसीजी बार आया। आगै देखै तौ साधूजी माराज तौ पूरै ठाठ-बाठ सूं ऊभा ! खांधै माथै कांबळ, एक हाथ में कमंडळ, बीजै मै पांच-छव जागा बळाका खायोड़ी पळपळाट करती काळी लकड़ी अर बगल मै आसौ !!

जोसीजी नै साधू रौ ठाठ जोय'र लागी गुदगुदी ! क्यौ-वळियारी भगवान ! इत्ता दिन किठै आबू रै पाड़ां मै पधारिया हा ! म्हे तौ बिछोडै में ई मर पूरा हुया ! किठै जाय लुकिया हा सामी !!

साधू बोलियो– अरे बाबा ! ठंडी-बासी रोटी हो तो दे रे।

जोसीजी– नही-नहीं। आपको और ठंडी-वासी। राम-राम ! आपके लिए तो अभी गरम-गरम और नरम-नरम फुलके बनाये देता हूं।

साधू देखियौ– 'इयां तिला में तेल कोयनी। टुरपडियौ।

जोसीजी कैयौ– बस चल दिये क्या ! अरे बाबा ! यह कंबळ तो मुझे भी देता जा ! मै भी तेरी ही तरह फक्कड़ !

साधू अळगो जाय'र बोलियौ– 'फक्कड़' नहीं तूं तौ पूरा 'लक्कड' है !

जोसीजी कैयौ– जरा ठहरता तो वच्चू को ऐसा जिमाता कि नानी याद आजाती ! साला कोली भगत कहीं का, दिन में साधू अर रात मे घरवारी !!

जोसजी टिक्कड़ सेकण लागा । इत्तौ ई तौ एक मंगतै जोसीजी री जै बोलाई ।

जोसीजी सुणी-अणसुणी करग्या । थाळी पुरस'र लागा जीमण । मंगतै देखियौ जोसीजी सगळै रा सगळै टिक्कड़ थाळी मैं पधरा लिया है ! जद वौ बोलियौ—

मंगतौ– जोसी जुगदातार मनै जीमाय'र जीमसी,
जोसी– उबरसी अंगार बाई पण उबरै नही !
मगतौ– म्हारी निजर अपार जीमणियौ जीवै नही,
जोसी– मरसी मागणहार जोसी नै जोखौ नही !

५७-- चौबेजी

मजाक-मसखरी करणिया दुनियां मै मोकळा लाधै है पण चौबां री तौ जात री जात इण मै नामूजदार है ! हंसी–ठट्ठा करणा चौबे लोग जिलम सूं सीखियोडा हुवै है- मा रै पेट सू ई सीख'र आवै है । इयां री उखत'र सूझ इसी उदबुदी हुवै कै मनूस, सूखियै अर मरियोड़ै मनवाळां मै उछाव अर आणंद री लैर बैवाय देवै है ! वारै रूखै-सूखै मनां नै हरा बणाय देवै है । पछै जीवतै जी वाळा री वात ई किसी ! बानै तौ अै मिळतै ई हरियाकरस कर देवै ! बारी तौ इयांरै दरसणा सुंई कळी-फळी खिल जावै, नाड़-नाड़ नाचण लाग जावै ! चौबे अमूजणी रै रोग री रामबाण ओखद है !! मसकरी अर चौबे दो न्यारा सवद होंवतै थका अर्थ एक ई है- एक बीजै रौ पर्याय है !!

एक समै री वात है। ऊनाळै री रुत। तळाव माथै मिनखां रौ ठठ्ठ लागोडौ ।

एक कुचमादी बाणियौ सगळां नै सुणाय'र घडी-घड़ी जोर सूं कैवै– बोलो कोई है मरद पट्ठौ ? करौ हीमत ? सामलै डागळै सूं मारौ गंठौ । गिणलौ नगद पांच सौ ?

डागळौ अकास सू वातां करै ! मन करणियां रौ, सामौ जोय'र आंख्यां फाट जावै ! मन कच्चौ पड़ जावै ! इत्ती ऊंचाई सू कूदै तौ सगाट निकळ जावै !!

अठीनै गंठा बीडणिया रौ सावस टूटै तौ वठीनै वाणियौ फीगरै !

इत्तौ मै ई, भीड नै चीरतौ एक चौबै आयौ । बोलियौ– लाला ! नेक थैली के दर्शन तो करा ! कूदने को तो हम तैय्यार है ।

वाणियै रुपियांवाळी लाल कोथळी ऊंची उठाय'र जोर सू हिलाई । माय सू नगद नारायण खणखणाय उठिया ! अबै तौ चौबैजी रै मूडै मै पाणी आयग्यौ ! डागळै पासी जोयौ तौ जी कापग्यौ ! इणगी लोभ, उणगी मौत !!

तौ चौबेजी उठै सू खिसकिया । घरे पूग'र बाप-बेटा आपस मै सला करी ।

पछै, आपरै बापरै सरीर माथै दवादस तिलक लगाय, धौळी कोपीन पैराय'र, बीजै रस्तै सू होडवाळै डागळै लेजाय'र ऊभौ कर दियौ ।

उठै सू सेठ नै पाडियौ जोर रौ हेलौ । सुनले लाला, ये अपनी मरजी से कूद रहे है, थैली तैय्यार रखना !

सेठ ऊचौ जोय'र कयौ– नही माराज, बात थारी हुई है, थेई कूदौ ।

चौबेजी हंस'र बोलिया– तुझे तो किसी एक प्राणी की हत्या लेनी है तो इनकी ही लेले ! ये मर रहे है तू मार रहा है ये बूढे है मै जवान हू ! मेरे पर तो दया कर लाला, मुझे तो चार दिन ससार की हवा खा लेने दे !!

५८– लोभी डोकरौ

लोभ मिनख नै क्या-क्या नाच को नचावैनी ! आ लेयलू,बा लैयैं लूं बैसूं हूंच लू,बैसूं ठगलूं,इणी तरै जी मै हबोळा उठता रैवै ! हऊफा मारतौ फिरे देस-परदेस ! खावण-पीवण रौ खनै सरतर होंवतै थकां बैरौ जी एक जागा जमैं कोयनी ! अऊरा वोर कनै को भावै नी !

तौ म्हांरौ लोभी डोकरै ई लोभ रै वसीभूत होय'र कळकत्तौ ठोका मनाया ।

कळकत्तौ मोटौ सैर । सडका माथै मिनखां रौ समंदर उलटियोडौ ! गाडी घोड़ा, ट्रैम, मोटर, लोरी अर रिकसावां इणगी सूं उणगी अर उणगी सूं इणगी दौड़ै ! निजर चूकी अर मरिया ।

डोकरौ लाई हाऊ-जूजू हुय'र पटड़्यां माथै फिरै ! तिमंजली, पंच-मंजली अर सत-मंजली इमारतां नै आंख्यां फाड-फाड़'र जोवै ! इत्तौ ई मै बैवतौ मिनख मांय आय पड़ै ! कैवै– बाजू हटो । तो इया धक्का खांवतौ, डोकरौ उथपग्यौ ! सोचियौ– अठै कमाई-कजाई तौ होसी तौ होसी जमराज रै घर रौ जोरदार तेड़ौ तौ जरूर ई आय जासी !!

बैंवते-बैवतै बैरी निजर एक नांव रै पाटियै ऊपर पड़ी- लिखियो हौ 'औषधालय' ।

डोकरौ काम चलाऊ हिन्दी अर कंई-कई संसकिरत जाणतौ हौ। ओखधाळै मै भाखौ घालियौ ई हौ कै वैदराज बोलिया– पगे लागू-सा ! माय पधारौ, बारै ई क्यो पग ठाभ लिया ?

डोकरै आख्या ऊपर हाथ मेल'र टुगटुग वतळावणियै सामौ जोयौ ! पूछियौ– तनै ओळखियो कोयनी बेटा ?

'मनै ई को ओळखियोनी ! हूं मोतीलाल हूं नी !

'मोतीलाल किसौ ? कैरौ बेटौ ?'

'सोवनलालजी रौ।'

'सोवनलालजी किसा ?'

'क्या किसा ? छगनलालजी रा।'

'तौ जणै छगनलालजी कूण ?'

तीन पीढ्यां तौ बताय दी हमै भळै क्या बताऊं !

'ओळखियौ तो कोयनी। थारा ननाणा ?'

'हरस सिवनाथजी म्हारा नाना है।'

'सिवनाथजी भळै किसा रे ?'

सिवनाथजी, जेठमलजी रा।'

'तौ जेठमलजी कूण ?'

'अबै थानै काकर ओळखाऊं ! ननाणै-दादाणै री तीन-तीन पीढ़्यां तौ बताय दी ! भळै क्या बताऊं !

डोकरौ नैड़ौ भिडियौ। अबकलै बैनै ऊंडौ-ऊंडौ याद आयौ। बोलियौ– हां-हां, अरे बे जेठमलजी ! तैतौ बेटा, सगळै बुगचै रा नाव बताय दिया। पाधरौ ई क्यो नही कैयौ कै हूं लगूरजी रौ पोतौ अर कुतियैजी रौ दोईतौ हूं।

'इया ई खरी ! आप रौ पधारणौ कांकर हुयौ ? कंई दूखै-पाचै है, मांदा-ताता हौ ?

'मांदौ-तातौ पड़ौ म्हारौ बैरी-दुसमी ! हूं तो साजौ-सूरौ हूं !

'तौ जरणै ?'

'देख बेटा ! थारौ दादौ लंगूरजी बडौ कीमियां हौ ! हथाळी मैं सरस्या ऊगाय देवतौ !

'ऊगाय देवता होवैला ! थे मुतलब री बात कैवौ नी ?'

'बोली रौ तौ तूई चरकौ लागै है बेटा ! कपड़ा-लत्ता सू ई जंटर मैन है ! क्यों हुवै नी तू ई बै दादै रौ पोतौ ठैरियौ ! ओछौ क्यौ उतरै !! थारै बिकरी-बट्टा कांकर चलै है ?'

'भगवान री किरपा है !'

'हा इया ! घणी आछी ! म्हांरौ जी सोरौ ! थुथकारौ नाखू हूं !

(नैड़ौ भिड'र हौळैसीक) तौ बेटा बाबैजी रै खातर एक बधिया धोती-जोड़ौ तौ काढ़ !

'म्हारै कोई धोतीजोड़ा री दुकान थोड़ै ई है !'

'करम तत्ता हुया परा ! जणै बेटा थारै कमायी-कजायी

माडी ई है !'

'इयां ई खरी !'

'मनै निमटण री जोर री संका है ।'

'तौं निमटलौ । सामली सीढी चढ'र ऊपर चला जावौं ।

पसवाड़ै ई जाजरू है । माय ई लबर पड़ियौ है ।

'सीढी उपर तौ मरै जिकौ चढै । थूक थारै मूडै माय सू

'अर लंबर तौ जाजरू माथै लागोडा होवैला ?'

'नही बाबाजी । लबर 'ठूठै' नै कँवै है ।'

'हरे-हरे राम ! पासौ टाळै । कळकत्तै मै सगळी बातां

ऊधी ई बळै है क्या !!

पछै मन ई मन गुण-गुण करतौ, डोकरौ, आ कँवतौ कै

फजूल टैम खोयी, पाधरौ ई नाक री डाडी दुरग्यौ !

५६– गुरु घंटा

बिरमाजी रौ कारखानौ तौ जोरा सूं ई चलतौ रैवै है ! कदैई मौळ को आवैनी !

खटाखट खोपड्यां घड़ीज रैयी ही ! एक जणौ फटा-फटा मो'र लगाय रयौ हौ– 'अटपटी', 'खटपटी', 'अभागियौ', 'सभागियौ', सैणौ, अैणौ अर डौढ सैणौं ।'

ममाई सैर री बात है । म्हारै जोतसी रामलाल री किसी छाप री खोपड़ी ही आ तौ हू आपरी परख माथै ई छोडूं हूं ।

उणां एक काळै छोटै पाटियै ऊपर लिख राखियौ ही– 'कोई फालतू बात नही करै । जिलमपतरी देखावण री फीस २) । हाथ देखावण री फीस १) ।'

पण बांनै क्या ठा ही कै केई बुरीगर ई हाथ देखावण नै आय जासी !

कोई जित्तौ सवाल पूछतौ बैनै उत्तौ ई उथळौ देंवता ।

एक दिन पाडोसी, आपरै बेटै रौ हाथ देखावण आयौ । पूछियौ– पिंडतजी ! देखौ तौ आ किसी रेखा है ?

पिंडत कयौ– 'भाग रेखा है ?'

'तौ आंटी-खांगी कांकर ? अर आ तौ विद्या री रेखा है, क्यों नी ?'

इयां लाई रा दो घंटा खायग्यौ । देवण-लेवण नै रामजी रौ नांव !

एक बीजौ माणस आयौ। दीखण मै भलौ। कई सुभ काम रौ मूरत पूछणौ हौ। पिडत सखेप मै बताय दियौ। पण औ भलौ माणस लागौ सवाल ऊपर सवाल करण। फलाणै तौ तेरस रौ दिन ठीक बतायौ। थे तीज रौ दिनकियां बतावौ हौ ?

डौढ घंटौ औ खायग्यौ। आधी न छिदाम कोरी राम-राम! जावता ढाढस बधायग्यौ कै मौकौ आया कसर कढाय देसां! हणै तौ खाली मूरत ई पूछणौ हौ! इयै री तौ क्या फीस होवै !!

पिडतजी ऊथप'र सोचण लागा– 'गाय घास सू भायलौ घालै तौ खावै क्या !'

जणै, बा एक बीजौ पाटियौ लगाय दियौ– 'सलासूत री टैम परमाणै फीस लाग जावैला।' फालतू टैम बीतावणिया खनै टैम रै हैसाब सू फीस ली जावैला।'

एक दिन, मामै-भाणजै री एक छंटियोडी जुगल जोडी, रै चुळबुळी चाली! पूगा जोतसी रै अठै, तखत्या बाच'र, मूंडै आडौ रुमाल देय'र दोनू जणा खुडस्या ऊपर जाय जमिया!

जोतसीजी देखियौ अै आछा मिनख आया, जिकौ राम न सिलाम अर खुडस्या माथै जमता ई हुया!

पांच मिट गम राखी, पछै बारै सामौ जोयौ। वे दोनू टुग-टुग जोतसीजी सामौ जोवता रैया! बादरा दाई एक बीजां रै सामौ जोवता रैय'र, छेकड़ जोतसीजी मून भग कीवी– कांकर पधारणौ हुयौ ?

मामौ बोलियौ— देखौ, पैला आप बोलिया हौ, फीस नही लगणी जोयीजै ।

'आप अजब आदमी लागौ हौ ! भाई, कंई कैसौ ई !

'आप हाथ तौ देखणौ जाणौ हौ ?'

'जी ।'

'हाथवाळी रेखावां री फळ मिळतौ तौ होसी, क्यों ?

'इण मै कोई सक थोड़ै ई है ।'

'अन्दाजी टोरा मारौ हौ'क, अजमाय'र देखियौ है ?

'सइकडा-हजारां हाथ देखिया है । रत्ती-रत्ती बात मिळै है ।'

'अै हाथ री रेखावा ढ़ाईजै है'क नी ?'

'हा । करम फळ भोग्या पछै ढ़ाईज जावै है ।'

'जणै आ बतावौ, मिनख रै मरियां पछै बैरी हाथ री रेखावा ढाईजै क्यो नी ?'

जोतसीजी आख्या फाड़-फाड़'र जुगल जोड़ी नै पगरै अंगूठै सू चोटी तांई जोयी अर कैयौ— आप जिसा सजन बरावर पधारता रैवै तौ म्हारा तौ पाटिया चित्त हुय जावै !

'नही पिडतजी, आप गुरू हो !'

'पण थे भाई साब गुरुबां रा गुरु गुरुघंटाळ ।'

'अलौ ! थे तौ नराज हुयग्या ? जणै जोर क्या करां जांवांई ? नमस्कार !

'नमस्कार ई नही सास्टांग डंडोत ! भळै तौ किरपा मती किया !!

६०– जिसड़ै नै तिसड़ौ

एक ही कंजूस सेठ, मूत'र तोलणियौ ! पइसौ खेसतै बैरौ जी निसरण लागतौ !

बौ चांवतौ हौ कै आपरै बेटै नै अंगरेजी भणावणौ । पण मास्टर ढूकतौ को हौ नी । ढूकै किठै सू ? मास्टर मागै घंटा रा दस रिपिया । सेठ काम बाणयौ चावै दोय च्यार मैं ई ।

छेकड़ जिसड़ै नै तिसड़ौ मिळ ई ग्यौ– भाग फूटोड़ै नै करम फूटोड़ौ !

एक मास्टर साब हा तीजी-चौथी किलास तांई भणियोड़ा । बे बासै मै जीम'र सैर मै चक्कर लगांवता कै कोई टूसन मिळजाय । आटैवाळा पइसा तौ खडा कर लेवां । तौ इयानै जोयीजती ही माथौ खसोलण नै जागा पण भाडौ देवण रौ जुगाड इयां खनै को ही नी । चावता हा फोकट मैं सवदौ ढूकावणौ ।

एक दिन गोता खावता सेठ सू जाय भिडिया । थोड़ी ताळ ताई दोये दाव पेच खेलता रया । छेकड़ कुस्ती मै गधा-लोट हुई । एक निरणौ ऊपर पूगा । सेठ मास्टरजी नै बिना भाड़ै जागा देवण री हा भरी । मास्टरजी सेठ रै बेटै नै फोकट मैं पढ़ावणौ मंजूर कियौ ।

सेठ देखियौ बाडैवाळी साळकी दे देसां, फालतू पड़ी है ।

मास्टर देखियौ टिकण नै जागा तौ मिळी। भलांई कित्तौं ई कंजूस हुवौ, 'गोबर पड़सी जिकौ तौ धूड़ लेय'र ई उठसी।'

सैरणप रा श्रै दोनू सूरवां मांय ई मांय श्रापरी चाल ऊपर फूलीजै !

सेठ कयौ– मास्टरजी ! छोरै नै, खाली, तार लिखरणै वांचरणै श्रर थोड़ी-सी हिन्दी सीखाय दौ।

मास्टरजी राजी-राजी हांकारौ भरलियौ !

पढ़ाई चालू हुई। मास्टरजी कयौ– लिखौ बेटा– धारा मैनै गूभारिया, मीठा मैनै खाड, रजपूत मैनै सिपाई, धौळा मैनै दूध, खट्टा मैनै श्रमचूर, श्रर बदबू मैनै कादौ-कीचड़ !

मर–डूबर, श्रा टूसन, कोई च्यार-छव मईना चाली ! पछै सेठजी बेटै नै हुसियार करण सारू परदेस लेयग्या ! श्रर उठै ई जमराज रै वारंट मै जबतै होय'र परलोकपुरी सिधारग्या !

श्रापरै बाप रा श्रस्त लेय'र गिगाजी जांवती बेळा, मास्टरजी रै चेलै घरे तार दियौ– 'Father killed go Ganga Cut head Eat Biramans.' श्ररथात् पिताजी समायग्या, गिगाजी जाऊं हूं, भद्दर होय'र बिरामरण जीमासू !

६१– चोर अर सेठजी

एक हौ सेठ ! पूरी छंटियोडी रकम ! सूरज रै वारकर सात फेरा खायोड़ौ ! पिड री साची वात तौ आपरै भाजी नै ई को कैवतौ नी, बीजा तौ गिणती किसी मैं ! चौक मै जद चतर अर चरियोड़ै मिनखा री गिणती होंवती तौ इयां सेठ चौथमल रौ नाव सगळा सू ऊपर गिणीजतौ ! बाकी रा मिणिया तौ ओ समेर !

कांकर ई, अदळ-बदळ'र, घूमाय-फिराय'र काई वात भलाई पूछौ, सेठा रौ उथळौ इसौ होंवतौ जिकौ मजाल क्या कै वारै भाव नै कोई साफ-साफ समझ लेवै !

टूकै मै बौ पूरौ राम सू मिळियोडौ हौ !

एकरसी एक चलाक चोर सेठजी रौ भेद लेवण सारू बारी हाट गयौ ।

सेठ तकियै रै सायरै दोल छिटकायां, बही मै मूडौ घालियां बैठौ हौ । चोर थोडौ आतरै सेठा रै रंग-ढग री जाच करण सारू ऊभौ रयौ ।

एक फैसनदार जटरमैन आयौ अर ऊंतावळ करतै कयौ– इसमे एकाभे का तेल डालदो ?

सेठ, ठाव मै, मिरियै सू फट्ट ई तेल घाल दियौ । जंटर-मैन आंख-नाक मोड़तौ बोलियौ– सेठजी ! तुम बड़े गलीज हो !

सेठ पूछियो– क्यों, क्या हुयौ ?

जंटरमैन कयौ– होता और क्या ? सिर्फ एकाने का तेल लिया उसमें भी एक मक्खी आगई !

सेठ हंस'र बोलिया– भोळा ! एकानै रै तेल मे तौ माखीज आवै, हाथी किठै स् आवै !

जंटरमैन, 'हुश–छीः छीः' कैवता गया परी ।

चोर देखियौ अठै दाळ गळणी है तौ ओखी; पण चेस्टा तौ कर देखां ।

नैड़ौ भिड'र, बै, सेठां सू 'राम-राम' की ।

सेठ गैरै अर अजमायोड़ै सुर मैं मुळक'र पाछी 'राम-राम' कीवी !

चोर कयौ– मनै काम-काज रै कारण टैम ई का लाधै-नी । आज मर डूब'र टैम काढ़ी है ! आपरै दरसणां री घणां दिनां सू मन मै ही । मनै आप सूं रुजगार-धंधै री थोड़ी बात बैठावणी है ! हणै ऊंताळ मै तौ बात खुल'र होसी कोयनी ! म्हारै खनै ई टैम ओछी है अर थांरै ई बिकरी-बट्टै री बेळा है । हां तौ इयां फरमावौ आपनै किसी टैम सबीतौ रैसी ? रात नै दुकान मौड़ी बधांवता होवौला ? कन अठैई सूवौ हौ ?

सेठ बडा सूं पैलाई तेल पीवणिया हा ! दाई सू कई पेट छानौ, थोड़ैई रैवै है ! सेठ हंस'र उथळौ दियौ– देखो कै म्हारौ कई पग-पतौ कोयनी । मनमौजी हूं ! हाट सूय जाऊं ! कदे कोटड़ी सूयजाऊं ! जचै तौ सूऊं अर सूऊं ई कोयनी !

६२– जींवतौ भूत

सेठ घासीराम हा मालदार अर हंसी-खुसी रा जीव ! गीत अर 'चौमासा'-'लावण्या' रा रसिया ! खुद ढ़ोलक ऊपर गांवता। आछा-आछा खेलार हाजरी मै रैवता ! जिका रा कूवै दाई कंठ ! गावता जणै ठडी रात मै आघौ-आघौ सुणीजतौ !

सेठ सगळा नै पोखतौ ! हाथ पोलौ राखतौ ! 'हाथ पोलौ'र जगत गोलौ ।'

आपई, जीवतै जी री हो ! इसी ई ही मंडळी पण धनियौ–मिनियौ हा मंडळी रा सिरदार ! रोवता नै हंसाय देवता ! सकाअर सूखियां नै हरिया करस कर देवता ! भाठै मै फूल खिलाय देंवता !

एक वार, धनियै नै सेठ किणी काम सू दिल्ली भेज दियौ। मिनियै नै आवण लागौ बुखार। मजलस सिरदारां विना सूनी ! सेठ ऊणा !

इयां सूनै-सूखै वातारण मैं सेठ नै काकर आवडै ? जणै धनियै नै अरजंटी तार दियौ वैगौ आवण रौ।

धनियौ रेलघाट सू पाधरौ सेठा री हवेली पूगौ। सेठा रै चाली चुळवुळी ! हा ई घणा दिनां सू अमूजियोडा ! मूडौ उतार लियौ ! निसासा नाखता वोलिया– आव, भाई ! पण अवै धायां ई क्या हुवै !

'आप दिलगीर क्यौ दीखौ हौ !'

'(भळै निसासा नाख'र) ना पूछ भाई ! हे राम लाई ....'

'कौ तौ खरा, हुयौ क्या !'

'हाय ! लाई धनि ....'

'(हड़बडाय'र) क्या हुयौ धनियै रै !'

होंवतौ क्या ! लाई खूटग्यौ !!'

'है ! एकाएक क्या हुयौ ! परसूं तौ, बैरी, राजी खुसी री चीठी आई ही !'

'अरे भोळा ! जिंदगाणी रौ क्या भरोसौ है रे !'

'क्या हाट फैल हुयग्यौ !'

'हा रे ! लाई मिनि ...... हाय लाई मिनि ....'

'जणै तौ, मनै, उठै जावणौ जोयीजै !'

हणै ई जारे भाई ! हमै सोच कीयां कांई बटै ! तू आय'र लाई टाबरां रै माथै हाथ फेर ! लुगाई नै थावस बंधा !!

'तौ, लौ, हणै ई जाऊं हूं !'

'देख एक काम करै ! माथै पल्लौ घात'र—'हाय, मिनिया बीरा रे मिनिया— हाय, मिनिया बीरा रे मिनिया बाग देवतौ जायै !'

'इयां क्यौं !'

'रिवाज है, गैला ! घर खनै पूगै जणै जोर सूं कूके ! भर आंगणै मै तौ घणै जोर सूं !!

घनियौ माथै पल्लौ घात'र बांग देवतौ टुरियौ ! घर खनै दूणौ गळौ फाड़ियौ ! खारौ रोज सुण'र लोक ऊचवै भरीजग्या !

आंगण मै पूग'र तौ इसी चीसाडी मारी जाणै काळजौ चीरीज रैयौ हुवै !!

माळियै मै बैठै, मिनिया, रोवणौ-धोवणौ सुणियौ ! मांय ई माय कयौ– औ कुण बाळण जोगडौ मनै जीवतै नै ई बांगां देवै है !

पछै बरंडै माय सूं, झाखौ घाल'र, जोर सूं हाकौ कियौ– अरे ओ घनिया मसाण ! कैनै रोवै हैरे !

पण घनियौ कद सुणतौ हौ ! बैनै तौ सेठ सीखाय'र भूत कर दियौ हौ !

घनियै आगण मै माथौ पीटणौ सरू कियौ ! रोयौ खारौ– 'हाय रे बीरा मिनिया– हाय रे बीरा मिनिया !'

मिनियौ ऊपर सू कूकियौ– मसाण क्यौ रोव है ! क्यौं अपसुगन करै है !'

पाडौ-पाडोसी भेळा हुयग्या ! सगळै आख्या फाड-फाड़'र घनियै नै जोवै !

इत्तौ ई तौ, धम्म दैणी-सी, मिनियौ, आंगण मै आय धमकियौ । बोलियौ– वाळण जोगडा ! मनै जीवतै नै ई क्यों रोवै है रे !

अबकलै धनियै री धुन टूटी। देखै तौ मिनियौ सामौ ऊभौ !

धनियै रौ मूडौ फक्क हुयग्यौ ! भारी गळै सू बोलियौ– भायला ! तूं तौ साचैई जीवै है !'

'तौ तै क्यां मनै मरियौ समझियौ ?'

'(रोय'र) पण सेठ तौ कदेई कूडा को बोलै नी ?'

'आघौ बळ सेठ रा मिनकायोड़ा ! हूँ जीवतौ थारी छाती ऊपर ऊभौ हूं नी !!'

हमै तौ धनियै हंस दियौ !

मिनियै कैयौ– सेठ बड़ौ पाजी है।

धनियौ बोलियौ– जणै तू मरियौ तौं कोयनी !' हूं तौ समझियौ कै.............. ।

क्या समझियौ, बाप रौ सिर ! मिनियै कयौ– देख हूं जींवतौ-जागतौ थां दोनां री छाती माथै मूंग दळू हूं !!

धनियै कयौ– जीवतौ ई भूत हुयग्यौ होवैला !

फेर दोये जगा पूगा सेठ री कोटड़ी। मिनियै, सेठ नै खूब खरी खोटी सुणाई !

सेठ, नाभी सू हा-हा कर'र हंसियौ ! खूब गम्मत रैयी, थोड़ी देर !!

६३– सिवदत भाई

म्हारा सिवदत भाई हा तौ घर रै आंगण तांई ई भरिणयोड़ा पण ठाठ-बाट मै लाट साब सू ओछा को उतरता हा नी ! बुगलै दांई ऊंचौ-ऊचौ टुणमुणियौ कोट, इसी ई ऊजळी झक्क पैंट, पगा मै काळा पळपळाट करता बूंट; हाथ मै गेडियौ, माथै उघाडा रंग कोयलै जिसौ, आख्यां अधवीचली- ना छोटी ना मोटी सोनलियै चसमै सू ढकियोड़ी, मूछा करजन फैसन, जाडा भंवारा, नाक थेवौ अर लिलाड़ दोय आगळ री ।

इया रैवतै थकाई, लोग मूडा-मूंड तौ तारीफ करता अर परपूठ मै कैया करता– पूछ बायरौ पूरौ लंगूर !

लोगा नै क्या पड़ी ? धान घर रौ खावै अर बात पराई बणावै ? अै लाई एकला ई तौ इया को रैवै नी, वीजा घणाई रैवै है । पण, सगळा नै छोड'र इयानै ई लंगूर क्यौ कैवै ? क्या इया ई कोई गधी रै हाथ लगायौ है ? कोई वांरी नानी मारी है ? पडिया झख मारौ, हाथी लारै घणाई कुत्ता भौसै है ।

अै रूप मै कागला अर सुर मैं गिडकराज है, तौ इण मै इयां रौ क्या कसूर ? आ तौ विधाता री भूल है ।

हा, तौ सिवदत भाई विद्या बिसनी पूरा हा । नैडी-आघी भलाई किठैई काई सभा क्यौ नही होवौ, अै तौ टैम सू पैला उठै पूगई ता । सुर अर बिसै रौ मेळ, सोनै अर सुहागै मेळ हुय जावतौ हो ! इत्तौ जरूर ठीक होवतौ कै, मितरी, इया नै सगळा सू लारै टैम देवतौ । क्यो कै ज्यौई अै अथ करता सभा री इति होवण लागती ।

वाचनालै मैं जावणौ अंधू चूकै तौ चूकता। पण पढ़ता अंगरेजी रौ ई छापौ। इयां चोखी तरै समझ लीवी ही कै अंगरेजी बिना पूछ कायनी। अर फेर अंगरेजी मैं पडियौ ई क्या है ? एक डिकसनरी ई तौ मोल लेवणी पड़ै है ?

पढ़ण रै सागै-सागै, इयां बोलण रौ अभ्यास सरू कर दियौ। सगळै मां रै पेट मांय सूं तौ सीख'र आवै ई कोयनी ? अभ्यास सूं ई विद्या वधै है। तौ पछै सिवदत भाई इणी मारग ऊपर क्यौं नही वैवै ?

तौ, इया पैलीपोत आपरै बाळगोठियां अर भायला सूं ईज अंगरेजी बोलण रौ अभ्यास सरू कियौ।

एक दिन गरमी पड़ै तौ इसी पड़ै जाणै खीरा उछळै ! आप जीमणवार जीमण जाय रया हा, हाथ मैं थाळी-कटोरौ अर लोटौ लिया। मारग मैं वारै बाळगोठियै भायलै– स्यामू रौ घर पडतौ हौ ! बै, इया नै 'जै रामजी री' कीवी।' इयांई पाछी 'जै रामजी' री कीवी। अर अंगरेजी मैं कैयौ–

'Good bye. This is the window sit down.
(जै रामजी री ! इया गाखै मैं बैठी हौ) !'
'आपरी दया सू।'
'Today is very syphlis.'
(आज घणी गरमी है)
'आज तौ गरमी काई लाय बरसै है !'
'Yes, My head is eating circles and circles.'
('हा ! म्हारी माथौ चक्कर खाय रयौ है')
'Come on please let us have a talk.'

('पधारौ नी, आवौ वाता करा')
'Mr. late. Do not narrow me'
(मिस्टर, देर हुय रयी है, मनै तग मनी करौ)
'But where are you going to?'
('पण आप किठै पधारौ हौ')
'I am go sugar plums eating.'
('हू लाडू जीमण जाऊ हू')
'बै दिन तौ, था भतीजै होवण रै हरख मे म्हानै सागीडा माल घोटाया !'
'What went of yow. My ten rupees killed.'
(थारौ क्या बिगडियौ ? म्हारा तौ दस रिपिया पूरा हुयग्या !)
'हा-हा-हा-ही-ही-ही'
'What laugh. Not lie'
('क्या दात काढौ हौ, कूडो को कैवू नी ।')
'मौकौ आवण दौ, म्हे ई थारौ मीठौ मूडौ करासा ।'
'Fly dust.'
(थारै धूड उडै है)
'हा-हा-हा-ही-ही-ही' म्हे तौ थारा दरसणा सू ई खिल उठा हा !
'I top upon you also.'
(हू ई थारै ऊपर लट्टू हूं')
आ कैय'र सिवदत भाई जीमणवार री मारग लियौ ।

———

६४- सिध्धूजी

घणोई पैलावाळी बखत को रयी नी, ना उसा भोळा मिनख रया, पण तौई इसां आदम्या रौ जाबक तोड़ौ आयग्यौ हुवै इसी बात तौ हाल ई कोयनी। इयं जमानै मै ई इसां जीवां रा दरसण हुवै है जिकै 'वध्धू'री पदवी धारण किया बैठा है। किठैई एकई पदवी सू, अै लोग, रीसाणा नही हुय जावै इण खातर इयां रै सनमान सारू इण सू मिळती-जुळती बीजी घणी पदव्यां, लोका, घड राखी है- घघ्घू, बघ्घू, डफ्फू, ढ़ब्बू, जट्टू राजा घघ्घू, अर जडभरत ओण।

तौ म्हारा सिध्धूजी माराज ई इणी तरै री एक पदवी-धारी जीव हा। रूप अर अकल जद भगवान रै घर सू बंटी ही तद इणां रौ हाथ सगळां सू नीचै रैयग्यौ हौ !

इयां री दुनिया ई बडी का ही नी। घर अर चौक मै जित्तौ आतरौ हौ बस वित्तीई लंबी-चवड़ी भोम इयां देखी ही।

सगळी दुनिया मे, मारै छाडै किणी सूं सिध्धूजी रै हेत को हौ नी। मां ई रूप अर अकल मैं सागोपाग इयारी ई मां ही !

सतरै बरसां री औस्था ताई, सिध्धूजी, मां री गोदी का छोडी नी !

बादर इसा हा कै मिन्नी म्याऊं-म्याऊं करती तौ आप भेळा-भेळा होंवता; बीजळी चमकती तौ ओरै मैं लुक जांवता अर खड़कौ-भड़कौ सुणता तौं बोकाडा पसार देंवता !

सरम रा तौ साख्यात पूतळा ई हा ! बाळगोठिया, आपरै सासरै जीमण जावती बेळा इयांनै सागै लेजावण सारू नोरा काढ़-काढ़'र उथप जांवता पण अै तौ कदैई हांकारौ

को भरता हा नी।

ठूकै मैं इया रै तौ घर भलौ घणौ हुयौ तौ चौक।

मा नै, सिध्धूजी रै ब्याव री घणी फिकर लागी ! वे इयारौ दीपतै मोटै घराणै हौ। घर ई कयौ करतौ हौ। आघा दिया पाछा आवता हा। इसै घराणैवाळै नै बीनण्यां कित्तीक नही ?

मा रौ मनोरथ सफळ हुयौ।

सगा वडे सैर रा रैवणिया मातवर रईस मिळिया। इसै वडै घर री बेटी मिळी। गाजा-वाजा अर धूम-धाम सू वियां हुयौ। मोकळी मुजमानी-खातरदारी कीवी। हाथी माथै बीनराजा री सवारी निकळी।

पण जवाई रौ मूडौ फीकौ-फीकौ, डौळ डभकीजियोडा !

मूडै माथै मुळक रौ नाव नही। सासरै वाळा, लाया, वानै, रमावण-रीझावण री घणी चेस्टा करी पण वे तौ उलटा घणा सुस्त अर उदास होवता गया !

सिज्या पडी। रात आई। अबै सिध्धूजी नै थोडी-सी साती मिळी। पण औ क्या ? औ छम-छमाछम-छम भळै क्या सुणीजै ! फेर काई आफत आवणवाळी है क्या ! वे गीडोळी मार अर गाभौ ओढ'र मूयग्या ! हौळै-हौळै सास लेवण लागा !

बहू मिळी ही रूप री रभा। पण, बानै बा कळकतै री काळी माई जिसी लागती ही। लायण घणी चेस्टा की पण वा तौ चदरै माय सू मूडौ नही काढियो'स नही काढ़ियौ। बहू जाणी सरीर मै कई चिणपिण होवैला। पान लगावण लागी।

पछै सिध्धूजी नैं, बींण रै बोला मैं वेनती कीवी– म्हारै हाथ रौ पान तौ अरोग लौ ? एक वार सू सुणाई नही हुई जणै दूजी-तीजी बार कैयौ। अबै दीनदयाल कई'क ढळिया अर चदरै माय सू, मूडौ ढकिया ई हाथ बार काढ़ दियौ। वहू हाथ माथै पान वीड़ौ मेल दियौ अर सिध्धूजी हाथ माय खांच'र वीडौ अरोग लियौ।

पण, वां, कदैई पान खायौ तौ हौई कोयनी ! होठा रै छेडा सू पीक चूयग्यौ। हे राम औ लाल-लाल क्या है, खूद ! सरीर परसीणै सू हवहोळ हुयग्यौ ! हडवडाय'र चदरौ फैंक'र उठियौ ! वहू झट पीकदाणी सामी कीवी अर कैयौ इयै मै थूकौ। सिध्धूजी थूकियौ तौ लाल-लाल साचेई खूद ई है, हमै वेम को रयो नी। जी बैठग्यौ, सरीर धूजण लागौ ! पाछाई बिछाणा मै जाय बडिया अर मूडौ ढ़कलियौ। जिकैरा भाख-फाटी खोळ आधी करी।

बीनणी लायण, घणी रात ताई पग चांपती रही।

राम-राम करतै सासरै मै दिन बीता ! हमै आयौ सीख रौ मूरत। आज सिध्धूजी कईक ससवा-कईक राजी दोखिया !

छेकड देव-पितर मनाय'र घरै पूगा। पाडोस्या री भीड-भाड मिटी जणै मा सिध्धूजी नै लाड सू खोळै मै बैठाय माथै हाथ फेर'र पूछियौ– बेटा ! तू तौ सूक'र काटौ हुयग्यौ रे क्या, बा लोगा, तनै, दोरौ राखियौ ?

हमै सिध्धूजी रै मन मायलौ दुख रौ गोटौ पिळघळ'र आख्यां माय सू झरण लागौ ! बसका भरता बे बोलिया– मा उठै क्या-क्या दुख पाया जिकौ म्हारौ जीव ई जाणै है ! औ तौ

थारै भाग हो कै जीवतौ आयग्यौ !!

मा, वानै काठा चिपाय'र ओढणै रै पल्लै सू आंख्यां पूछी अर दुखा री वाता पूछण लागी । सिध्धूजी, मा नै आप बीती सुणाई जिकी बारै ई सवदा नै सुणण मै आणद आसी

मोटो-सो एक पाड मगायो वा मे भीत भितैया,
वाय चढाय मोहे नगर घूमायो तऊ न मरचो मेरी मैया !
(अबारी वाळै हाथी री सवारी)

मा आसू नाखती बोली– हाय लाल-हाय बेटा ! तै मोकळौ दुख पायौ !

मा सुण तौ खरी–

आकन के दो पता मगाये वा में लगायो दहिया,
वाय खवाय मोहे रक्त छुडायो तऊ न मरचो मोरी मैया !
(पान बीडौ खवावण री बात)

भळै आगै तौ सुण म्हारी मा—

इन्दर की इन्दराणी आई, पहने रात रतैया,
सारी रात मोहे मुक्कन मार्‌यो, तऊ न मर्‌यो मेरी मैया !
(बहू रै पग-चापण री बात)

हाय लाल ! हाय बेटा ! तै मोकळौ दुख पायौ– कैवती-कैवती मा जोर सू रोवण ढूकी ! सिध्धूजी ई बोकाड़ा पसार दिया !!

पाडोसी घभराय'र दौडता आया ! घणी-घणी चेस्टा कीवी जणै ऐ लांई दुख सू फाटता दोय प्राणी– मा-बेटा रोवता रया !!

६५- कमाई

काळू 'यथा नाम तथा गुणा' हौ। कागलै रौ मासियाई अर ऊंधै तवै रौ सागरण भाई हौ। कोयलै सूं ई नातै मैं नैड़ौ हौ। विद्या मैं आपरै काळौ आखर भैंस बराबर हौ। भाग रा ई काळा हा, ऊगतै ई रौ बाप मरग्यौ! मां लायरण, मैनत-मजूरी कर'र घणौ दोरौ पाळ'र बडौ कियौ।

हां, बुरै मै इत्तौ भलौ हुयौ कै काळू मामूली-सी रसोई बणाय लेंवतौ हौ। गरीब घर रौ होवरणै सूं नातै-गिन्नै वाळा क्यौ चावरण लागा हा? संसार मैं तौ, सिमरथ रा सगा हुवै। निबळां रौ सगौ तौ अथान, नाथ ई हुवै।

मौ'लैवाळा अर पाड़ोसी, थोड़ी सानूभूति जरूर देखांवता हा।

अबै काळू १८ वरसां रौ हुयौ। अड़चन सामनै आ ही कै करै तौ क्या करै? मां चांवती ही कै हमै बौ, बैनै सायरौ लगावै।

ममाई विसाल बौपार री नगरी। पाड़ोसी लोग उठै ई नोकरी-चाकरी अर दलाली किया करता। दीयाळी रै मौकै, उठै, खूब चैल-पैल रैवै। राजस्थानी भायां रौ उठै लाखां रौ बौपार चलै। वां दिनां रोजीना सूं बत्तौ सट्टौ उठै हुवै। केई गरीब भाई दीयाळी रै मौकै ममाई जरूर जावै। आपांरा ई देस रा मुनीम, मैरबानी कर'र सट्टै री दलाली मंडाय'र आवणियां रौ बणै जिसौ सत्कार करै। वे ममाई देखई लेवै अर कई कमाय ई लावै।

काळू री मा रै हाथा-जोडी करण सूं, एक सजन पाड़ोसी, अवकळी वार, दियाळी ऊपर, काळू नै आपरै सागै ममाई लेजावण रौ हाकारौ भर लियौ। कयौ— हूं कोसीस कर'र, इयै नै, किठैई वासै मै नोकरी लगवाय देगूं।

ओ तौ काळू ठोठ अर भोदौ अर औ ममाई रा ठाठ-बाठ ! लाई, मूडौ फाडियां मोटा मकाना अर मोटी दूकाना सामौ जोया करतौ ! बैनै इया लागतौ के वौ किणी जादू री नगरी मै आयग्यौ !!

पाडोसी, वैनै सागै लेय'र देसी भायां री वडी दुकांना मै फिरियौ। मुनीमा नै कै-सुण'र काळू नै— कंई पइसा पैदा कराय दिया। कई बेरी मां नै ई रुपिया भेजाय दिया।

काळू, पाड़ोसी रै खनै ई रेवतौ अर बठैई सूवतौ। एक दिन, पाड़ोसी, काळू नै समभाय'र कयौ— काळू ! आ धणियां री ममाई है ! अठै रौ पाणी लागणौ है। अठै तौ हळकौ अर ओछौ जीमणौ जोयीजै। मीठौ-चूठौ रौ तौ नाव ई नही लेवणौ। मीठौ खायौ'र मांदौ पडियौ। एक वार पाणी लागोडौ ऊंबर-भर मार करै। इसी पाजी मादगी लाग जावै कै मरियां ई पिड छूटै। तू तौ भाई, आपणै, कदैई मिठाई मत खाईजे हो ?

काळू भोळौ-डाळौ हौ। पाडोसी री सीख बैरै हाडोहाड बैठगी। किसी खोटी हुयी ! लाई, आंख्यां सू दुकानां मै मिठाया रा ढिगला तौ जोवै पण दाणौ ई मूडै मै नही मेल सकै !

काळू रौ घणौई मन चलतौ। खनै डौळ ई हौ। पण पाडोसी री सीख वैरै मूडै माथै माडाणी ताळौ जड़ दियौ।

काळू नै, एक वासै मै चूलौ फूकण री नोकरी मिळगी। काळू दिनभर काम-धंधै मैं अळूजियौ रैवै। खूब खट'र काम करै। वासै रै मालक रौ मन भीजै। वैरी गरीबी रौ ई विचार राखै।

इयां, काळू पूरा दो बरस ममाई मैं पूरा कर दिया। खनै, थोड़ा पइसा भेळा हुयग्या।

अबै, काळू रौ मन मां रै दरसण सारू तडफण-कळपण लागौ! देस री हर आवण लागी। पाड़ोसी ई अबै इण नै देस भेजणौ ठीक समझियौ।

हूं अर जोसीजी, ममाई सू, देस आय रया हा। पाड़ोसी म्हां सू मिळियौ अर काळू नै सागै ले जावण रौ कयौ। म्हां हा भरली।

म्हारा सगळी जोसीजी बडा मसकरा हा। कई सू को टळतानी। मनूस सू मनूस रौ मन राजी कर देवता। भाठै मैं फूल खिलाय देवता!

म्हे जाय जमिया रेल रै डब्बै मै। जोसीजी हंसी-ठठै सू मुसाफरा नै हसावण लागा।

इत्तै ई मै, काळू नै लेय'र, पाडोसी आय पूगौ। घणी-घणी भौळावण देय'र काळू नै म्हारै खनै छोड़ग्यौ।

जोसीजी फट्ट ई पूछियौ– औ ईज वौ आसामी है क्या? इयै ई अमोलै पदारथ नै संभाळ'र लेजावणौ है? आ-हा-हा! क्या ई फूटरी मूरती है! जाणै विधाता आपरी सगळी

चतराई इयैं रै घड़ण में ई पूरी करदी ! म्हारा भाग ई पोचा हा जिकौ इत्ता दिन इण उदबुदै प्राणी रा दरसण ई को हुयानी ! हणैं ई भाग जागिया है ! आरे भाई काळू ! आ लाडेसर, म्हारै चिपता-चिपत बैठ जा। इणगी-उणगी भटक्यौ तौ म्हे किठै हाथ घालसा !

सगळै हंसण लागा। गाडी सीटी दी।

जोसीजी रै रमण-रीझण सारू जीवतौ रमतियौ हाथ लागग्यौ !

काळू रै रूप री सोभा हुय ई चुकी है। काळौ, किर-कांटियौ, लबतड़ अर लटका-मटकां मैं लुगाया नै मात करै !

जोसीजी हंस'र पूछियौ– काळू ! ममाई मै तौ खूब सैल सपट्टा अर मौज-मजा मणिया हुवैला ?

'कांयरा करम रा मजा माणिया, चूलौ फूकियौ।'

"तौ बाळ साध दे, क्या मन मैं है ?"

"मन मैं मोकळी है। ममाई मै तौ दाळ-रोटी खाई अर मजूरी कीवी। मिठाई भळै चाखणी किसी हुवै है ?"

"तौ चाखी क्यौनी ? पइसा को हानी क्या ?"

"पइसा तौ हा पण, खावण री मनाई ही।"

"तौ छानै-छुळकै खाय लैणी ही ? कूण देखण नै आवतौ हौ ?"

"मांदौ पड जावतौ जणै !"

"वाह रे काचा ! कदैई खावणिया ई मांदा पडै है ? देखलै मनै, किसौ'क घोट-मोट हूं ? म्हारै तौ मिठाई

बिना कासी ई को उठैनी ?"

"मनें तौ कैय दियौ हौ कै मिठाई खाई तौ मांदौ पड़ जावैला । पाणी लाग जावैला !"

"तौ पाणी तौ तैं पियौ ई होवैला ? बौ थांरै पेट रै लागौ तौ है ई ।"

"हां लागौ तौ है ।"

"तौ तूं मादौ तौ को हुयौ नी ?"

"जणै रांडरा, मिठाई खाय'र मन री तौ काढ़ लैणी ही ?"

"थां तौ मनै अळ्जाय दियौ ।"

"अबै तौ खायलै करम-हीण ! हाल किसा– 'मियां मरग्या अर रोजा घटग्या !"

"क्या करूं, क्या नहीं करूं कंई समझ में ढूकै कोयनी ।"

"तौ म्हारै जिसै दानां री बात मानलै । मनैई थांरै पूगावण री भोळावण है ।"

"हां, राजी-राजी मान लेसूं ।"

"तौ आवण दे ठेसण ।"

"क्या करसौ ?"

"थारी मन री कढ़ासूं ? मर'र भूत हुय जाय जणै ?"

पछै जोसीजी बैंनै नीचै सूं ऊपर तांई जोयौ। फेर सासटांग डंडोत कर'र बोलिया– तूं काळू नहीं, म्हारी काळी मां है! तू जननी है! हूं सगळै मारग थारी दाड़ खुल्ली ई राखसू! जीजान सूं सेवा करसू।

"क्यों जोसीजी, मनै लुगायी क्यों कैवौ हौ!"

"तौ तू क्या तू मरद है! हूं तौ थारै लटकै-मटकै अर भीणी बोली माथै मुस्ताक हूं!

सुणिणिया, सगळै हंसण लागा! सगळै, काळू नैं, 'काळी माई' कैवण लागा।

इत्तै मै ई ठेसण आई। जोसीजी खूमचैवाळै नै बुलायौ। मा रै आगै मिठाई री ढिगलौ कर दियौ! फळवाळौ आयौ। मोकळा फळ लेय'र मा रै चरणा मै पधराया!

जिकौ कोई आवतौ, जोसीजी तौ, कंई न कंई जिनस बैसू लेय'र मां री भेट धरता ईज!

अंत मै, चाय रौ प्यालौ सामौ धरियौ! पान बीड़ौ मेलियौ! गळै मै फूल-माळा पैराई! गाड़ी टुरी!

बीजी ठेसण आई! जोसीजी भळै मां री खातर मोकळा फळ-मिठाई ले आया! हाथ जोड़'र कयौ– अरोगौ मां!

डब्बै मैं हंसी-खुसी री लैर आयगी! सगळै मुसाफर काळू'र जोसीजी खानी देखै अर वातां री रस लेवै!!

अबकळी बडी ठेसण आई– जकसेन ! जोसीजी उतरिया मोकळी सामगरी लाय'र भळै मां रै आगै मेलदी !

मां बोली– अबै तौ जोसीजी धापग्यौ, खजै कायनी !

"नही मां, म्हारौ पण है कै थारी दाड़ खुल्ली राखसू !"

"तौ म्हे सू खजै कोयनी जर्णै कांकर खांऊं !"

"तू तौ काळ नै ई खाय जावै है ! पछै आ सामगरी तौ कित्तीक ?"

"म्हारौ पेट दूखै है नी !"

"तौ टट्टी में जाय'र हौ ळौ हुय लै ?"

"नही मनै अबै जाबक को भावैनी !"

"इयां तौ चलै कोयनी ? म्हारौ पण खंडत हुय जावै ?"

"को भावैनी–को भावैनी, काठी धापग्यौ !"

"तू तौ धापगी मां, पर्ण हूं को धापियौनी ?"

"जर्णै मनै मारसौ !"

"मरै, मां रा बैरी-दुसमी ! माता अमर है !"

भळै नवी ठेसण आई, जोसीजी रै तौ बाई सागी बात।

लाई काळू जोसीजी सू पिडौ छोडाय'र टट्टी मे जाय बड़ियौ।

जोसीजी, लोटौ'र अंगोछौ लेय'र हाथ धोवावण सारू सेवा मैं ऊभा रया !

काळू बोलियौ— मत संतावौ मनै, दीखै कोयनी म्हारौ पेट दूखै है नी !

जोसीजी पेटी खोल'र पाचक चूरण काढियौ। अर काळू नै खुवायौ। पछै पान खवायौ। थोडी'क देर हुयी नी भळै काळू टटी मै दौड़ियौ !

हाथ धोय'र, काळू कयौ— जोसीजी ! हूं तौ सूवू हूं ! मारग मैं म्हारै उतरणै री ठेसण आवै जणै मनै जगाय दिया !

जोसीजी बोलिया— सुख सू पौढ मां, सेवग सेवा मैं जागै है ! तनै जगासूं नही तौ जोर क्या करसू !

इण तरै, हंसी-ठट्ठै मैं मुसाफरी री लंबी टैम सुख सू कटगी। अर काळी माई री जीवती-जागती सूरती नैं जोयीजती ठेसण ऊपर बधराय'र म्हे दोनू ई घरै पूगा।

पण, जोसीजी री काळी माई रौ उणियारौ, हाल ताई याद आवै जणै आंख्यां आगै नाचण लाग जावै है।

६६— भूत रौ भ ई जमदूत

बिधाता बामणां ऊपर क्यौ हाथ खावै है ? क्या खेटा काढै है ? बामणां, बारौ कांई बिगाड़ियौ ? कोई बांरी नानी मारी है कै सासू मारी है ? का कई रा भरमायोड़ा है ? कै पखपात करै है ? कन इन्याव ऊपर उतरग्या है ? बै बूढ़ै खखोड़ रै ऊंडै मन री ठा को लागै नी ? मोटी अकलवाळै मिनख रै ई मन री ठा पड़णी औखी है जिकौ बिरमाजी रै मन री तौ ठा पड़ ई कियां सकै है ?

काम बामणां नै दोरौ भौळायौ ! गुणां मै पांती करदी । पण माया बांटती बेळा मन मै खटाई पड़गी । घणखरी बाणियां अर बीजां नै जोयीजती बांट'र बामणां नै सफा हाथ बताय दिया । मीठा घणाई बोलिया पण मांय ई मांय छुरी फेर दी ।

लांठां सू किसी लड़ाई ? स्याम सू किसौ संगराम ?

तौ, लाई मार लंगोट'र कूद पड़िया करम भोम मैं कोरा रा कोरा.।

पण इण भोम मैं कोरां रौ काकर काम चालै ? आ करम-भोम क्या टका-भोम है ! अठै तौ पग-पग मै टकौ जोयीजै ! नही जणै मूडौ बिलखौ कियां ऊभौ रैवौ टकटकौ !

तौ इणी तरै रौ, एक कोरै काळजै रौ बिरामण एक नगर मै रैवतौ हौ । हौ घणौ जीवटवाळौ पण जमा रै नांव पर खनै मीडी ही ।

आटो दाळ, साग-पात सगळे ओधार घाट आवना हा। नगद घाट में ओधार सूं, घणीई, आछी अर गन्ती सवदी मिळ जावै पण पइसै विना जोर काई वटै ?

छेकड़ ओधार तोलते-तोलते हटाणियां धापग्या। हमें ? 'ओधार-पोधार थारै घरै सिधार।'

विरामणी ही भली अर घरलोचू। घणीई जुगती सूं काम चलांवती पण फूल री जागा पांखडी तौ जोयीजै'क ? वैरी जुगाड कांकर हुवै ?

हटाणियां हटक दिया, जणै वणियौ जित्तै पाडोस नूं माग-ताग'र काम चलायौ। कांकर ई मर डूब'र धाकौ-धकायौ गाडौ गुड़कायौ। पण हमें तौ सगळा खानी री नकारै री मजबूत फाचरी पीया रै आड़ी आयगी।

जद लाचार होय'र, वामणी, दोरै जी सूं, रोय'र पती नै कयौ– अबै जाबक काम को चलै नी। थे हाथ ऊपर हाथ धरिया बैठा हौ ! दिनूगै ई खावण नै जोयीजै। क्या म्हारा हाथ-पग भांगू ? आपा तौ पेट आडी पाटी वाध लेवा, लाई टाबर कांई समझै ? वे तौ मा रै जी नै रोवै। इया भूखा री, बिलखणौ-रोवणौ काकर सहीजै ? कद ताई सहीजै ? थानै पूरा आठ बरस निकमा बैठा नै हुयग्या।

बिरामण देवता वोलिया– क्यों झीखै है ! भगवान् रा हाथ लंबा है, बेई देसी।

'देसी तौ बेई'ज। भगवान थांनै हाथ-पग दिया है, कंई तौ उदम करौ। सूतोड़ै सिग रै मूडै मैं आफेई तो मिरग अया'र बड़ै कोयनी ?

'तौ, तूई वता क्या करूं ? किठैई काम-धंधौ दीखैई तौ कोयनी ! पड़ियां हां, भगवान् रै भरोसै । चूंच दी है जिकौ ई चुग्गौ देसी । तैं सुणी कायनी—

अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम ।
दास मलूकौ यू कैवै, सब रौ दाता राम ।।

'थे तौ इयां कैय'र चुप हुय जावौ ! लैणायत म्हारा पल्ला खांचै ।'

'तू बांनै कैयदे वे म्हारी पागडी उतारलै ।''

'जावौ, इयां म्हारै जीवता होवण दू !'

अमावस री घोर ंधारी रात । मूसळाधार बिरखा । हाथ नै हाथ सूझै नहीं । बीजळी पळाटा मारै । टापरौ चूवै । माय माछर खावै । नींद नही आवै । इणी बेळा बिरामणी सागी राग उघेरी ।

पण आज न जाणौ कियां बिरामण देवता रौ सूतोड़ौ पुरसारथ जाग उठियौ ? बोलियौ– थारौ कैणौ सरब साचौ है, लिछमी ! तूं लायण क्या करै ? थोड़ौ निभायौ ? देख आज कोई उपाव करूं हूं ।

इया कैय'र, बै, आपरौ लट्ठ अर कांबळ सांभी । बिरामणी जाणियौ रीसाणा हुय'र जावै है । लायण, बांरै पगै पड़'र कैयौ– हणै नहीं-हणै नहीं । इसी कुबेला मै तौ भूत ई घर सू बार को निकळै नी ।

बिरामण हंस'र बोलियौ– जणै भूत घरै ठावा लाधसी । हूं बांनै जोवण नै तो जाय ई रयौ हूं । तू मनै रोक-टोक मत, खुसी सू जावण दै । कैय'र बिरामण चल धरियौ ।

वैवतौ-बैवतौ एक जंगळ मैं पूगौ। एक विरछ रै नीचै ऊभ'र कंई विचारण लागौ। विरछ ऊपर ही भूत रौ वासौ। बौ कड़क'र बोलियौ—

'कूण है रै ? ठैर तौ, हणै थारी ठा घालूं हूं।'

बिरामण तौ जान हथाळी माथै मेल'र बार निकळियौ हौ। इसी गीदड-धमक्या सूं बौ क्या डरतौ हौ!

बै जमी माथै जोर सूं लट्ठ पटक'र कैयौ- वेगौ आव। वेगौ काम सरै। राजा रै हुकम सूं मनै पूरा सौ भूत कपड़ना है। तै सूं बरकत करूं। नही जणै इसी कुवेळा मैं कोई घर सूं बार निकळै है?

भूत रै काळजै मैं सी तौ वडग्यौ। पण हीमत राख'र नीचै उतरियौ। बामण फट्ट ई घाटौ झाल लियौ। भूत री आख्या निकळगी! रोयौ- अरे मरू रे, मनै छोडदे! थारौ गोली-चाकर! थारी गऊ! तू कैसी जियाई कर लेसूं!'

बामण दात पीसिया, आख्या काढी अर लट्ठ ताणियौ! हमै तौ भूत धूजण लागौ!

बामण बोलियौ- हुय जा आगै, नही तौ प्राण ले लूला!

भूत सीधौ-सीधौ टुरग्यौ। थोडा पांवडा वध'र लाई डरतै-डरतै हौळैसी'क पूछियौ- राजा म्हारौ काई करसी?

बिरामण- थारौ बळीदान करसी, छाटौ थोड़ैई घालसी? सौ भूता री बळी देसी।

भूत रा होस उडग्या! बामण रा पग झाल'र, रोवतौ बोलियौ- मनै उबारलौ! कई तरै बंचायलौ, माराज! जिलमभर हूं थारौ चाकर रैसूं!! गुण मान सूं!!

'तनै छोडदूं, जणै राजाजी मनै इनाम को दैनी ।'

'क्या ?'

'धन ।'

'धन हूं थांनै मोकळौ दे देसू । राजा सूं ई बत्तौ । थे, हालौ म्हारै सागै ।'

'हाल किठै ले जावै है ?'

'पछै मनै तौ छोड़ देसी'क ?'

'हां ।'

भूत आगै अर वामण लारै । पचास पावडा छेड़ै बै पग ठांभिया । कयौ– अठै जमी खोदौ । धन रौ चरू निकळसी ।'

बामण कड़क'र कयौ– फिट, पापी ! थारै थकै हूं खोदू ?

भूत डरतौ बोलियौ– गुनौ माफ करौ, माराज ! अर जागा खोदण लागौ । एक चरू निकळियौ, मौ'रा सू भरियोड़ौ, जगमग-जगमग करतौ ।

बामण कैयौ– चाल, पूगाय दे चरू म्हारै घरै । जणै छोडूला ।

हमैं बामण देवता रौ क्या कैणौ ! हरचन द्वारा लागग्या पक्की हवेली, सोनै-चांदी रा बरतण ! लुगाई गैणा सू लदीजियोड़ी ! टाबर-टीकर मौजां माणै ! आघा दिया पाछा आवै ! घी-दूध-दही री नद्यां बैवै !!

सगळौ सुख होंवतै थका, बिरामण देवता री बूढी मां दुखी'र थकियोड़ी !

बेटै मां नै हाथ जोड़'र पूछियौ– माजी ! थानै काई दुख है ? क्यों उदास रैवौ हौ ? काकर सूकणै पड़ग्या ?

मां फीस पडी ! कैयौ— वेटा ! एक मिन्नी छानी-सी आय'र पुरस्योडी खीर पी जावै है ।

बेटौ बोलियौ— आछी कैयी मा ! मिन्नी राड री माजनौ, जिकौ, म्हारी मा री खीर पी जावै ! राड री केचरौ को काढ नाखू नी । म्हारी तौ भूत ई भै खावै है, मिन्नी राड़ तौ कित्ती'क !!

बामण रै मन मैं भळै लेर आई । आधी रात नै हळ'र बैल लेय'र पूगौ समसाणा मैं । लागौ जमी जोतण । अर भूत घबराया ! बारौ वठै वासौ हौ । सरणै आय'र सगळै हरता बोलिया— थे म्हानै वैठा-सूता नै क्यो संतावौ हौ माराज !

बामण— हूं खेती करसू !

भूत— रैवण दौ बापजी ! म्हे थारै घरै, जोयीज'सी जित्तौ धान हाफेई पूगाय देसा ।

बस, फेर बामण नै क्या जोयीजतौ हो ? बामण पाछौ टुरग्यौ ।

कई दिना छेडे भूता रै घरै जंवाई आयौ । घणा लाड-कोड, गीत-नाद हुया ।

आधी रात हुई जणै भूता जवाई नै कैयौ— कवरजी ! थे तौ आराम करौ । अर म्हांनै'स एक बेगार काढणी है । खळै सू धान ढोय'र, एक बामण देवता रै घरै पूगावणौ है ।

जंवाई पूछियौ— क्यौ भला ?

भूता उथळौ दियौ— लाठौ-नागौ है, हाड़ भाग नाखै ! मार सू आपा आधा भागा ई हा !!

जंवाई हो सेखी खोर ! मूडी मरोड़'र बोलियौ– भली कैयी सा ! जरौ बात डूबगी परी ! अरे, आपा तौ भूत हां, एक बामणियै सू डर जासां ! आज मनै जांवण तौ दो भलां ! ठा घालदू कनी बामणियै री !!

तुक इसी पीवी, कै जिकौ कांई कैवां ? बामण रीस भरियोड़ौ, घोटौ अर गळफांसौ लिया मिन्नी रै आवण री वाट जोय रयौ हौ कै इत्तै मैं ई सेखी-खोर भूत मोरी माय सू मूंडौ काढ़ियौ । बामण आव देखी ना ताव घालगळ फांसौ अर फड़ै-फड़ै घोटै सू पूजा उतारणी सरू कीवी ! सेखी तौ हुयगी हवा अर 'मरियौ रे, मरियौ रे', कैय'र रोवण लागौ ! बामण डपट'र पूछियौ– 'तू कूण ?'

भूत रोंवतै-रोंवतै कयौ– औं तौ हूं, एक भूत !

बामण दांत पीस'र कैयौ– ठैर तौ पाजी ! भूत री इत्ती जाड़ जिकौ म्हारै घर मै वड़ै ! जान को लेलू नी, साळै री ! कैय'र, उठायौ घोटौ ऊचौ ! भूत पगां पड़ग्यौ ! डरतै-डरतै हौळै'सीक पूछियौ– हूं तौ आपरै ई काम आयौ हौं माराज !!

'क्या ?'

'आप रै घरै कोरौ धान पूगावां कन पीसियोड़ौ ?

'कोरौ नही, पीसियोडौ । हरौ री हरो पूगावौ ।'

'जो हुकम, कैय'र जंवाई-भूत तौ, सरम सू सासरैवाळां नै मूडी देखायां बिना ई, पाधरा घर खानी तेत्ती एका दिया !

६७- गुसांयां रा लटका

दैणा-लैणा

(१)

इया तौ संसार री हरेक वात ऊपर नवी लैर-नवी वैर रौ परभाव पडिया विना, को रयोनी । पण म्हारा गुसाइयां अर खास कर'र बांमें ई बूढा तौ, पुराणै तौर-तरीकां नै इसा काठा चिपाय लिया जिकौ जरा ई ढीला को किया नी । लोगां रौ उनमान ठीक है कै बूढा ऊपर नवी लैर रौ परभाव नहीं रै बराबर ई पड़ै है । तौ म्हारा अै बिरध गुसाई ई इण रौ अपवाद नहीं बण सकिया ।

एक बार, एक जणै नै, थोडै रुपिया री जरूरत पडी । बौ केई जागा भटकियौ पण सगळी जागावा सू साफ नकारौ तौ को मिळियौ नी मिळियौ मीठौ उत्तर जिकौ 'न' रौ नैड़ौ पाड़ोसी हौ ।

जणै बैनै एक उपाव सूझियौ । बै एक बिरध गुसाइजी माराज री भगती चालू करदी । कई गिरै सू खरच करणौ पडियौ यानी कदैई उणां री खातर पाव भर रबडी तौ कदैई कडाकंद ले जाया करतौ । बारै ना-ना करणै ऊपर ई, औ तौ बारै, पगां मै कुलडी-- दूनौ समरपण कर ई आवतौ । समै पाय'र भगती रंग लेई आयी । फळ औ हुयौ कै गुसाईजी बैनै आपरौ भगत-आपरौ सिस समझण लागग्या ।

औ नित बांरै घरै पूगतौ अर इणगी-उणगी री बातां बणांवतौ। जद दोय जणा भेळा वैठै तौ बांमै मेळजोळ बधै है अर घरोपै रौ भाव बण ई जावै है।

एक दिन, मन माफक मौकौ पाय'र, बड़ी भगती भाव सूं, इण भगत, श्रीचरणां मै बेनती राखी कै बैनै २००) रुपियां री सखत चायना है।

गुसाईजी पूछियौ– इत्ता रुपियां रौ क्या करसी ?

बै कयौ– माराज ! घर मैं स्वाड़ होवण वाळी है। निकमौ रैवण सू कंई रुपिया बजार रा माथै हुयग्या। अवै काम-धधै लाग्गौ हूं, भगवान आपरी सुभासीस सू भली करसी। कोसीस कर'र आपरा रुपिया वैगाई दूध खोळ'र पाछा देय देसूं। लाओ, आपरै चौपनियै मै हूं म्हारै हाथ सूं खातौ घाल दूं। थोड़ा-थोड़ा ज्यौ देवतौ रैसू, चौपनियै मै जमा करतौ रैसूं।

गुसाईजी बैरै भगती भाव ऊपर रीझ'र तुरंत रुपिया दे दिया।

दो-एक दिन तौ, वै गुसाईजी रा दरसण करण री किरपा की पछै आवणौ बंध कर दियौ।

वद गयी सुद आयी। पूरै छव महीना छेड़ै, एक वार, जद वौ चौक मांय कर जाय रयौ हौ, गुसाईजी बैनै हेलौ पाड़ियौ– अरे ! बिना मिळिया ई जावै है रे ?

भगत उथळौ दियौ– माराज ! इण बेळा ऊंतावळ मैं हूं। घणौ जरूरी काम है। ठैरिया सू हाण होवण रौ भै है।

माराज कयौ– इत्ता दिन आयौ क्यों नी रे ?

भगत– माराज ! अठै को हौनी । बार– परदेस कई
काम सू गयोडौ हौ ।

माराज– काल तौ जरूर आवै ई ला'क ?

भगत– हा, माराज ! कोसीस करसू ।

माराज– अरे कोसीस क्या ? जरूर आये ।

भगत– 'ठीक है' कैय'र चलतौ वणियौ ।

पूरा बारै महीना होवण आया, भगत, पधारण रौ फोडौ को देखियौ नी । माराज घभराया । अवै, बंसूं पाछा रुपिया काकर वसूल होवै ? अतौ-पतौ ई तौ मालम कोयनी ? भला भगत नै अतौ-पतौ पूछताई काकर ? वैरौ पतौ तो माराज रौ हिरदौ हौ ।

अबै, बौ, चौक माय कर बैवतो तौ माराज री निजर बचाय'र ।

माराज लारै सू वैनै देख'र वडवड़ करता । पण, खुद, बैनै, बुलाय'र पूछण री तकलीफ करणी वाजब को समझता नी ।

आधै सू, वैनै, देखता तौ उळटा आप लुक जावता जाणै बौईज माराज री लैणदार होवै । जणै वह आख्या सू अदीठ हुय जावतौ, तौ, सगळा नै सुणाय'र कैवता– ठग किठैई रौ । म्हारै सू २००) रिपीया ओधार लेयग्यौ, बारै महीना हुयग्या, देवण रौ नाव ई को लेवै नी । जाणै कोयनी, कै हूं, राज-दरबार चढ जाऊला ! जद देसी कै नही ! रुपिया इया पचायग्यौ जाणै बापरौ ई माल हुवै ! रुपया मैनत सू भेळा हुवै है ! बोटी सू झड़काई'जै कोयनी ! आकां रै को

लागै नी !! हूं क्या छोडूं हूं, रुपिया कढ़वाय'र ई रैऊंला !

भळै केई महीना बीतग्या । पण करजायत भगत, बामण री धन, फिरती देवण रौ विचार तांई को कियोनी ।

आज फेर बैनै चौक माय सू बैवतै जोय'र, गुसांईजी भाज'र घर मै जाय बडिया ! लुक'र जोंवता रया कै भगत कित्तीक आघौ गयौ परौ ! जद बौ खासी दूर गयौ परौ, तौ अै पिरगट हुया । अर चौकवाळा रै बीच मै गरजण लागा— हूं ई देख लेसू कितीक दिन भळै म्हारा रुपिया को देवैनी ! बामण री खरी कमाई रौ धन कदम काळ मैं को पचै नी; फूट'र निकळ जासी ! मै ब्याज रै लोभ मै रुपिया को दिया हा नी ! साळौ चोट्टौ किठै ई रौ ! खोटी नीवतरौ ! रुपिया लेयग्यौ पछै मूडौ को देखायौ नी । हूं दावौ ठरकाय देसू जणां क्या करसी ? पग झालसी, हिडकी रै हाथ लगासी अर 'बापजी-बापजी' कैसी ! माजनै मै धूड़ नखवाय'र ई रुपिया देंवतौ दीखै है !!

उणगी सू जातोड़ै, गुसांईजी रै खरै भगत— एक उकील साब, आ बात सुणी पण ठीक-ठीक समझ मै का आई नी । बै पूछियौ— आज क्यौ समंदर मैं ज्वार आय रयौ है ? क्यौं र किण ऊपर तौरा चढ़ियोड़ा है ?

गुसाईजी, थोड़ा सांत होय'र बोलिया— कंई कोयनीजी, लैण-दैण रौ मामलौ है । साळौ, रुपिया ठग लेयग्यौ अर अबै गूठौ देखावै है !

उकील पूछियौ— है कुण ? नांव क्या है ?

गुसाईजी कयो– आसामी तौ एक गूथार है। देगांजी बैरौ क्या नाव है– क्या नाव है, जीब नींचै है। याद कोनी आवैनी। म्हारै चौपनियै मैं तौ नाव मंडियोड़ौ है।

'कित्ता रुपिया है ?'

'दोय सौ।'

'कद दिया हा ?'

'औई कोई डौढ बरस होसी।'

'क्या ब्याज ऊपर दिया हा ?'

अरे! ब्याज रै लोभ सूं थोड़े ई दिया हा।' लारै आफत मै हौ, नित आवतौ-जावतौ हौ !'

'काई चीठी, वाकायदा बैरै हाथ री लिखियोड़ी है क्या ?'

'लो, थे तौ कानून छाटण लागग्या ! चीठी कैनै लिखवावण री चायना अर फुरसत ही। एक चौपनियै मै बैरै हाथ सू लिखवाय लियौ है।'

'गवा ई कोई होसी ?'

'फेर बाई कानून री बात ! अरे, क्या हू कई रै सामनै रुपिया देय'र बै गरीव री आबरू लेवतौ ! आफत मैं हौ, देय दिया। मनै क्या ठा ही कै औ नीयत खोटी कर लेसी ? मूडौ ई को देखावै नी ? कैवतौ हौ बेगाई रुपिया पाछा देय देसू। फेर कोई गेर तौ हौ ई कोयनी ? नित री जाण-पैचाण वाळौ हौ।

'जाण-पैचाण वाळौ ही जद ई तौ, जाण बूझ'र चकमौ देयग्यौ। पण माराज कई नै गवा तौ राखणौ हौ ?

'ओ हो! फेर कानून छांटै है। क्या कांई रै आगै ओधार देय'र वैरी आबरू गुमांवतौ ?

'(हंस'र) तौ जणां रुपिया वसूल कांकर होसी ?

'आपणा होसी तौ आय जासी नही तौ वौ ई खावौ-पीवौ !

'तौ इसौ भगत भळै कोई लाय दूं ?'

'लासौ तौ नटसू थोड़ै ई ? थां सुणियौ कोयनी—

मांगन गये सो मर गये जो कहुँ मांगण जांय।
उनसे पहले वे मुंए जिन मुख निकसत नांय॥

चोखौ ! तौ अबै रुपिया पाछा लैणा है'क नहीं ?'

'वौ देसी तौ क्यों नहीं लोस ?'

'अर वौ नही देसी जणां ?'

'तौ क्या करसू ? वैरौ मांस तौ काटण सूं रैयौ।

'धींगाणै कांकर लेसूं ?'

'हुकम हुवै तौ हूं निकळवादूं ?'

'हां-हां, इत्तौ तौ कर भाई ! थारा पिताजी म्हारा घणा मिलण वाळा हा ! थे घर रा ई टावर हौ, कोई बीजा तौ हौ कोयनी।

'लावौ, मनै चौपनियौ देखावौ तौ खरी ?

गुसांईजी, घर रै मांय जाय'र भट चौपनियौ ले आया। वकील ध्यान सू देखियौ। कयौ— मामलौ कंई गड़बड़ सौ ई

दीखै है । पण थारै वास्तै जरूर कोसस करसूं । गवायां जुटावणी पड़सी । अच्छा, थे परसूं कचेड़ी पधार जाया ।

गुसाईजी घबराय'र बोलिया— अरे ! म्हनै ठेठ राज-दरबार मै घीसै है, भाई ?

उकील केयी— एकबार थोड़ी देर वास्ता पधार जाय', थारी जरूरत पड़सी ।

(२)

दावौ दायर हुयौ । भाड़ै रा गवा हाजर हुया ।

गुसांईजी रै उकील बात नै पक्की करण सारू आपरै ई एक गवा नै पूछियौ—

'थांरौ नांव ?

'फूलचंद ।'

'ऊंवर ?'

'पचास साल ।'

'किठै रैवौ हौ ?'

'गुसांईजी रै घर सू थोड़ौ आघौ ।'

'गुसाईजी, जिण वेळा इयै नै रुपिया दिया हा, थे हाजर हा ?'

'हां साब ।'

गुसाईजी मन ई मन बांढीजता हा ।

'थे वठै क्यों गया हा ?'

'माराज रा दरसण करण नै, म्हारा गुरु है।'

अबै तौ भला गुसांईजी कांकर मन नै वस मै राखता ? एक तौ गवा कूड़ौ ऊपर सूं माराज नै गुरु बताय दियौ ! मूंडौ मरोड़, पग पटक'र वोलिया– क्यों रे ! तूं किठै बळतौ हौ वै बेळा चंडाळ ! तनै भगवान नै जी देवणौ कोयनी !!

उकील रै माथै ऊपर सौ घड़ा पाणी ढुळग्यौ ! हाकम गरम होय'र कयौ– उकील साब बौत चोखौ मामलौ लाया ! करज देवण वाळौ ई आपरै गवा नै कूड़ौ वतावै है !!

आज तौ पैलड़ी वार हूं थांनै माफ करूं हूं। आगै सूं फेर इसौ दावौ पेस कियौ तौ थांनै...............

उकील, वीचमैं ई माफी मांग'र नस नीचौ करर' सिरकग्यौ। अर दावौ खारज हुयग्यौ।

सिध्धूजी मारा़ज

(२)

म्हांरै सिध्धुजी माराज री औस्था ढळ चूकी ही, पण, हा करारी तातवाळा, मन-मौजी अर हसी-खुसी रा जी। भोळापण तौ गुसायां मै जिलम सू ई होवै है। लैर मै आवै तौ बेटौ दे देवै नहीं जरां बेटी ई खोस लेवै।

सिध्धूजी खुद आछौ गावता हा अर संगीत सास्तर रा पूरा जाणकार हा। कैवत है– 'गुसांया रा गूदड़ा ई गावै है।' मरजी आ ई तौ ऊभा-ऊभा ई गाणौ सुणाय दियौ नही जची तौ मैफल वाळां री बेनती ई नामजूर करदी।

पइसै रा तौ आप बैरी हा। हाथ मै आवणौ जोयीजतौ ही पछै तौ बैरौं पग-हाथ तोड़ नांखता अथवा वैनै समूळौ ई मीठैत्राळै री दुकान रै गल्लै मै कैद हुय जावण नै मजबूर कर देवता।

तौ टूकै मैं, माराज मस्त-मौला अर फक्कडराम हा।

एक बीजी कैवत है– 'गुसाया रै कडायलिया खड़कै ई है।' मीठौ खाया बिना अै तिरपत को हुवै नी। घर मै, सीरौ, लाडू, पूडा ओण अरोग'र ई अै लोग हलवाया ऊपर दया क'र बांरी हाट रौ तरमाल चावै किणी भाव मिळौ, ओधार-घाट अरोग ई लेवै है। ऊपर सू, गाडावाळा सू फळ-फूळ भळै ले लेवै है। टूकं मै, इयांरी दाड दिन भर खुल्ली ई रैवै है। तरमाल खावै जद ई तौ इया रै गळा सू मीठा-मधरा सुर निकळै है।

तौ सिध्धूजी माराज इण औस्था तांई सुख-मौज सूं ई रया। दुख'र चिंता रौ नाव ई वे को जाणता हा नी। मसकरा हद्द दरजै रा हा। वांरौ हिरदौ रस अर उछाव सूं भरियौ रैवतौ हौ। वांनै 'बूढा-जवान' कैवणौ वाजब होसी।

खाली टाबर ई नहीं पण जवान, आधा बूढ़ा अर बूढ-जवान सै सागै-सागै 'दिल्ला' रमिया करता। लकड़ी रा आधै गज, गज अर डौढ़ गज रा टुकड़ सगळां खनै रैवता। जमीं माथै एक लीख खांचदी जावती। सगळै बै सूं आधा ऊभ जांवता। एक जणौ आपरौ टुकड़ौ जमी माथै मेलतौ। बीजौ तक'र वैरै माथै आप वाळै टुकड़ै री इसी करारी चोट मारतौ जिकै सूं वौ लीख रै पार निकळ जांवतौ। इयां करणियौ जीतियौ समझीझ तौ। म्हांरा सिध्धूजी पैला तौ मन लगाय'र खेल देखता रैंवता। पछै मुचमुची चढ़ती जणै कई रै खानी सू आप रमण लागता। सगळै बांरौ कायदौ राखता हा।

भोळा रै भोळप री लाभ, उठायां बिना लोग थोड़ै ई रैवै है ? म्हांरै माराज मै बिरखा रौ सवदौ करण री लत ही। सवदै-बाज, बानै आय घेरता। कैवता– आज तौ बिरखा आवण रा ढ़ंग दीखै है, आज बिरखा न्यार-बिन्यार आसी ईज। आप १) २)बाय दौ। भाव ई आज चोखा है। एक रुपियै रा पचीस रुपिया घर बैठै मिळ जासी। फेर आप तौ सिध्ध हौ। आप बासौ जणै जरूर बिरखा आसी ईज। म्हे तौ आपरै फायदै री बात कैवा हा। इया तौ आप, आपरी मरजी सूं नित पइसा बावौ ई हौ ?

सिध्धूजी पोमीज'र साचैई आपनै सिध्ध समझरा लागता। फट्ट ई दो रुपिया बाय देवता। लाभ तौ होवतौ कै नही, पण, सवदे-बाजानै तौ जरूर ई लाभ हुय जांवतौ।

गुसायण्या मै ई बिरखा रौ सवदौ करण री पूरी लत ही। वे ई, फजूल, बिना सोचियै-समझियै, रुपियौ-दोय रुपिया बाई देवती। इया करण री, बारी आदत पड़गी ही। अर पोमाय'र ठग ले जावण री सवदैबाजा रौ सभाव बरणग्यौ हौ।

खावरण-पीवरण री हरणै जिसी विकट समस्या सिध्धूजी रै आगै का ही नी। कई राज सू मिळ जावतौ, कंई भगत-लोगा सू भेट रा आय जावतौ।

जरणै ई तौ, बारौ काम फगत खावणौ, गावणौ अर मस्त रैंवणौ ई हौ। आपरी इत्ती ऊबर मै वे कदैई मादा पड़िया हुवै इसी याद को आवैनी।

पण, इरण बार, वे दुरभाग सू मादा पडग्या। बुखार बानै इसा काठा कपड लिया कै छोडण री नाव ई नही लेवै। घणी ई घरेलू दवाया लीवी। डोरा मितराया। सै निरफळ गया।

जरणै एक-दौ सैणां वैदा नै बुलावणा पडिया।

एक वैद आया अर बोलिया— माराज, आपनै खारी दवाई लेंवरणी पड़सी— बरावर कई दिना ताई चिरायतै री उकाळी, मीठै-चूठै री परेज राखरणी पडसी। भूख लागै तौ ग़वां री दळियौ नीबू निचोय'र ले लिया, परण थोड़ी मातरा मै।

सिद्धूजी मूडौ ढकियां सुणता रया। वांरी तौ भीठौ खावण री बाण ही। वांनै खारी दवा भला काकर दाय आंवती ? फेर बाई बराबर केई दिनां ताई ? वे सुण'र मून साधग्या। रजाई सू मूडौ ई को काढियौ नी। वैदजी थोड़ी ताळ ठेरिया। फेर रजाई रै माय हाथ घाल'र माराज री नाड़ देखी। नाड़ री चाल खाथी ही। वैदजी– 'ठीक है फेर आसूं' कैय'र गया परा।

अबै बीजा अणभवी वैद आया। वे गुसांईजी री आदत सू वाकब हा। बोलिया– ताव तौ हणै ही घणौ है।

घरवाळा कयौ– हणै-हणै फलाणा वैद आया हा। चिरायतै रै काढौ देवण री कैयग्या है।

वैदजी हंस'र बोलिया– वैद नै रोगी री आदतां ऊपर ध्यान देवणौ जोयीजै। गुसाईजी नै काढ़ै रै नांव सू ई ताव चढ जावै। इया सू इसी खारी दवाई काकर लिरीजै !

माराज, अबकळी बार रजाई मांय सू मूडौ काढियौ। कयौ– बैनै क्या ज्ञान है ? अणसमझ छोरौ है, बण बैठौ वैद ! जिठै आछा रूंख नही हुवै उठै इरडियौ ई रूंख मानीजै। वैरै बाप-दादा ई, कदैई, वैदकी कीवी ही ! आयौ है वैद वण'र ! कैवै है– चिरायतै रौ काढौ लेवणौ पड़ैला ! बौ ई फेर केई दिना ताई ! भूख लागै जणै गऊं रौ दळियौ खावण नै बतायौ !

हूं तौ इसी दवा सू मर जाऊंला ! काढौ भूल-चूक'र ई म्हारै सामनै मती धरिया ! आछौ तौ हौऊंला कै नही, पण मर जरूर जाऊला ! इण सू म्हारी ताव उतरसी तौ क्या

उल्टौ बध भलाई जावौ !!

फेर नाक मै सळ घाल'र बोलिया— अरे राम-राम, काढ़ौ ! थू–थू–थू ! नाव सुणन सू ई उळटी आवै है !!

माराज री फालतू बाता सू घरवाळा रौ ध्यान रोगी सू बीजी जागा हटग्यौ ।

माराज फेर मूडौ ढ़क लियौ । अर लागा जोर-जोर सूं खसूं-खसू करण ।

वैदजी बोलिया— आपनै मीठी-मीठी अर स्वाद दवा देसू ! खावण नै बीदाम अर दाळ रौ सीरौ दरासूं ! थोडौ-थोडौ, भूख लागण सूं, अर थोडौ ठैर'र !

घरवाळा, इयै नै खाली मजाक समझी । सुणी-अणसुणी करली ।

माराज चिघ'र गळौ फाडियौ— अरे ! सगळे कठै मरिया ! याकी सुणौ रे-कोई तो याकी सुणौ रे ! काढै री बात नै तौ सगळां सुणी ! अबै क्या सगळै बोळा हुयग्या ! अरे याकी सुणौ ! कोई तौ याकी सुणौ रे !!

फेर झट बैठा हुयग्या । हरख अर किरतग्यता सू वैदजी रै मूडै सामौ जोवण लागा !

बीजै दिन सू दवा चालू हुई ।

अर सिध्धूजी माराज, इण दवा व अनुपान सू पाछा घोड़ै दायी हुयग्या ।

किसोरजी

(३)

किसोरजी तौ किसोरजी ई हा– 'यथा नाम तथा गुण !' सगळी बाता मै 'किसोर'-नवादू ! पढ़िया-लिखिया ठीक-ठाक हा अर संगीत मै परबीण हा । सगीत अर गुसाई तौ पर्याय बण चुका !

घरवाळां आपनै गिस्त मैं फसावण री सोची । पोटाय'र किणी तरै राजी कीया । फूटरी घराणै-ठिकाणै री सुसील किन्या जोयी ।

सुभ मूरत मै ब्यांव हुयग्यौ । अबै किसोरजी दुपग्गे सूं चौपग्गा हुयग्या !

थोड़ा'क दिन घर मैं टिकिया । फेर बाई सदा मतवाळी चाल । मरजी होवै तो घर मै आवणौ, मरजी हुवै तौ जीमणौ जूठणौ । जची तौ दो दिन घर मैं ई को आयानी । संगळीवाळां मै राता काटी । उठैई खाय-पीयर पडरचा ।

भांग भवानी रा ई आप पूरा उपासक हा । तीन बेळां दिन मैं छणती !

दिन भंगेड़ियां मै कटता अर रातां कटती संगीत मंडळिया मै !

जचती तौ समै-कुसमै घर मै आय धमकता अर हाजर मिळतौ जिकै सूं ई चाबौ भूकौ कर'र दूकान जाय जचता । विना रबड़ी-मिठाई खायां इयां नै कांकर चैन पड़ती !

हाथ रा हा कारीगर। चित्तरकारी जाणता हा। कविता ई करता हा।

पण हा पूरा मनमौजी अर फक्कड़। कठैई सूं भेट मिळती तौ मुसकल सूं एक दिन वांरै खनै टिकती।

कमाई-कजाई कौडी री ई का हीनी। रईसी ही वांरै गाडां री!

कपडा-लत्ता बौरुपियै दाई पैरता! कदैई लाटस्याव दायी तौ कदैई मंगतूराम दायी! तौ घरवाळां री वानै, गिस्त मै फसावण री चाल पार को पडी नी। इया री तौ वा'ई रफ्तार बेढगी जो पहले थी सो अब भी है।' जणै, लाया, वडी कोसस कर'र इयानै एक संगीत री टूसन दरवाई। आप महीनै मैं दस दिन ई मुसकल सू उठै पूगता। पण जमता-जणै इसा जमता– इसौ मन लगाय'र सीखांवता कै लारली सारी कसर एक ई दिन मैं काढ देंवता। कई दिनां ताई धाको धकतौ रयौ। घरवाळा नै ई कइ पइसा मिलता रया।

पण अै भला टिकणवाळा अर निभणवाळा थोड़ा ई हा!

एक दिन विदयारथी नै आवण मै थोडी देर हुयी। अै तौ मिस ढूंढता ई हा– 'ऊंघतां नै बिछाणा लाधग्या।' बोलिया– हू लाटसाब नै ई को उडीकू नी तू भाया किसी गिणती मै है! म्हारौ आज-हणै ई हैंसाब करवाय दे। म्हे तौ लै, अै चाल्या।

अबै जाबक सुततर-सागी घोड़ा सीगी मैदान। खावौ, गावौ मौज माणौ।

जणै पाडोस्यां, घरवाळा रै हाथ-पग जोड़ण सूं, इयां नै, कस्टम्स विभाग मै एक जागा दरवाय दी ।

उठै ई, मौज आंवती तौ जावता । अफसर घणोई भलौ अर गुसायां मैं भगती राखणियौ हौ ।

वा दिना मै रुजगार घणौ थोड़ौ हौ । पण जित्तौ ई मिलतौ उण सू रोट्यां रौ फोड़ौ तौ मिट ई जावतौ हौ, कारण चीजां-बस्तां रा भाव सस्ता हा ।

पण इयारी तिणखा रौ आधौ भाग तौ मीठैवाळै री दुकान रै गल्लै मैं अचूक पूग जावतौ । तौई लाई घरवाळा; आधै मैं ई सबर कर लेवता ।

तीन महीना वीतग्या । किसोरजी रौ मन उफतण लागग्यौ । पींजरै मैं बंध कियोड़ै पंखेरू दाई छटपटावण लागौ ! सुतंतरता मै अडचण पड़गी । लाई, कद भंगेडियां रै अखाडां मै पूगै अर कद बांरै वीच मै बैठ'र गुटकै– गुणगुणावै !

अबै, अै, अठै सू भाज छूटण री जुगती जोवण लागा । इंछा हुवै जिठै मारग निकळ ई आवै है ।

आप घणा गैर-हाजर रैवण लागा । काम मोकळौ चढ़ग्यौ ।

अफसर गरज की–नोरा काढ़िया अर चढ़ियोड़ै काम नै पूरौ कर देवण रो कयौ ।

भांग री तरंग मैं, किसोरजी, एक दिन इसा जमिया– इसा डटिया जिकौ काम रै ढ़िग ˝ नै घटां मैं साफ कर दियौ ।

अफसर मगर थाप'र कयौ– इयां काम करण लागौ तौ बेगो 'चौं पद पाय सकौ हौ । पण थे तौ, काम पर जी ई

को लगाओ नी ? गैर-हाजरचा री तो वात ई मत पूछो ?

किसोर माराज बोलिया— इया काम करा तौ मर को जावा नी ! म्हानै पद-वद री चायना कोयनी ! म्हारी आपरी 'गुसाई पद' सगळां सू ऊंचौ है !

अफसर हस'र कयौ— चोखो माराज ! रोज टैमसर आय तौ जाया करौ ?

किसोरजी बोलिया— क्या कोई कैद है ? म्हे तौ सुछंद पंछी हा ! तौई काम तौ आपरौ करई देवा हा ?

बे दिन पछै, भळै लवी नागा घालदी । काम भळै घणौ चढग्यौ । जणै, एक दिन दफ्तर मे ई भाग छाणी । थोडी-थोडी सगळा साथिया नै परसादी वाटी । ठूगार कर'र जचिया काम माथै जिकौ समापत कर'र ई उठिया !

पण आज रग-ढग बिगडियोडा हा ! मन ई मन खीज रया हा के किठै आय फसिया !!

काम तौ कियौ, पण, बेगार माफक । महकमा 'कस्टम्स' री जागा 'क स ट म स' लिख दियौ !

अफसर रै, कागदा पर दसकत करती वेळा आ वात निजर आई । आज, बे ई, थोड़ा खिजिया ! चपरासी नै कैयौ- किसोरजी नै तौ बुलाओ ।

पण वे तौ कदोकला नव-दो-इग्यारै हुय चुका हा !

दूजै दिन अफसर पूछियौ— माराज ! औ 'कसटमस' क्या लिख मारियौ ? थे ठोठ तो हौई कोयनी ? लिखणौ तौ सुध्ध चायीजै नी ?"

किसोरजी रै मन री बात बणगी– भाज छूटण रौ सैंज उपाव बणग्यौ । बोलिया– म्हा सू तौ इयां ई लिखीजसी ।

'क्यों भलां, सुणू तौ ?'

'कैय दियौ नी, इया ई लिखीजसी ।'

'क्यों पण ? थे ठोठ तौ हौ ई कोयनी ?

'थोड़ी देर खातर इयां ई समझलौ ।'

'समझ कांकर ला । हूं जाणूं हूं कै थे भणियोड़ा हौ ।

'तौ, छेकड़ थे चावौ क्या हौ ?'

'ओईज कै सुध्ध लिखिया करौ । सिरकार पइसा का देवैनी क्या ?

'मोकळा देवै है ! पल्ला भारी कर देवै है !'

'तौई, कमती तौ का देवै नी ?'

'देवै तौ १५) रुपट्टी ई है'क ?'

'तौ इणसू क्या हुयौ ?'

'हुयौ ओईज कै घी घालै जित्तौई स्वाद आवै ।'

'क्या मुतळब ?'

'मुतळब औ, कै, म्हां पढाई ऊपर मोकळौ खरच कियौ है । इण वास्ता तिणखा रै हैसाब सू ई इणरौ उपयोग लियौ जावै है ।

'बडा अजब मिनख हौ ! तिणखा रै हैसाब सूं उपयोग !

इयै रौ तातपरज ?

'तातपरज औ कै १५) रुपया में तौ 'क स ट म स' ई लिखियौ जावेला। ५०) ७५) देंवता तौ सुध्ध 'कस्टम्स' लिख देंवता !

'तौ ?'

'तौ, काल सूं म्हे म्हारै अर थे थांरै ! 'वियां सगाई चाकरी राजीपै री काम।'

अच्छा, 'जै रामजी री' कैय'र किसोर माराज उठै सूं चल धरिया। भळे दफतर री मूडौ क्यां नीज नै देखता हा !

६८– र यस ब

रायसाब रै बडेरां रै राज में बडौ पग हौ। बडौ श्रौधौ हौ। बडौ ई रुतबौ हौ। बडौ ठाठ-बाठ हौ। अर बडौ ई हौ समाज मैं माण-काण।

घरणौ धन हौ, मोटी हवेली ही !

समै रै फेर सूं सा माया बिलायगी ! बडौ ढूंढौ, जूनी जस अर थोथी ठसक रैयगी !

धन बडेरां सागै ई पापै-पुन्नै लागग्यौ हौ।

रायसाब रै घरवाळा चतर इसा हा कै मत पूछौ बात ! साचेली बिना आटै रोटी करता हा ! पाणी ऊपर थर अरणावता हा !

ऊपर सूं इसौ मंडाण मांड राखियौ हौ कै कंई बात री ओछ को दीखती ही नी !

एक-दो भाग फूटोड़ा नोकर-चाकर, घर में अबार तांई हा ! अैई लाई मालकां रै सागै-सागै भूख-तिस काढता हा !

बडेरा तळाव, कूवा, बावड़्यां अर मोटा मिदर बणाय गिया हा। मिंदरा मैं सोनै-चांदी, काठ-पत्थर री मूरत्यां पधरायग्या हा। पूजारी रौ नेग बांधग्या हा। पण अबै ओ कियां निभतौ ?

रायसाब लाई परवार रैं पेट भरण री चिंता मैं ई चूर रैंवता ! बांरी साळ-संभाळ करण री ना तौ टैम ही र ना ही हीमत।

लिखमी विना रा मंडाण काकर चलै ? ऊपरली तडक-
भडक किती ई क्यो नही देखावौ, तळ री घाटी तौ
पिरगट हुया विना काकर ई रेवै कोयनी !

भूवाजी नै, घणी ई, पडदै मै लुकाय'र राखता पण
लोका नै ठा पड़ ई जावती कै माय नै भूवाजी वैठा है !—

एक दिन इसी वीती कै सगळा नै इग्यारस करण री
नौवत आयगी !

रायसाव री अकल गुम ! चिता मै चूर घर रै आगै
ऊभा ई हा कै आपरै मिदर रै पूजारी नै गूणियौ भरियौ आटी
लिया आवतौ देखियौ रायसाव विगड'र वोलिया– तू
म्हारै घर रौ पूजारी होय'र आटौ मागतौ काकर फिरै है !

पूजारी बोलियौ– रायसाव आप नेग वध ····· ····

नेग री पछै सोच सा कैय'र नोकर नै हुकम दियौ–
खोसलौ इयौ रौ गूणियौ ! सरम को आवैनी ! मागतै नै !!

नोकर खोस गूणियौ'र वडग्यौ हवेली मै । रोट्यां वणन
लागगी । रायसाब ई माय गया परा । पूजारी विलखौ मूडौ
कियां ऊभौ देखतौ रयौ !

जणै एक भले आदमी पूजारी नै कयौ– मूरख ! कूवै
मै पड़ण दे आटै नै ! हाथ जोड'र गूणियौ तौ पाछौ मांगला ।
हणै आटै नै रोवै है पछै आटै अर गूणियै दोना नै रोवणौ
पड़ैला !

पूजारी डरतौ-डरतौ माय गयौ ! हाथ जोडिया !
कयौ-कसूर माफ करौ ! गूणियौ तौ वखसावौ ? जणै रायसाव
ढळ'र कयौ- लेजा गूणियौ, आगै सूं मागै मती, जा ।

पछै रायसाब सोचण लागा- मिंदर में मूरत्यां ई सोनै चांदीरी मोकळी है। जाय'र निगै करां कंई ढ़ब ढूकैतौ ?

तौ बीजै दिन बे, बीजै जूनै मिंदर मैं गया ! उठै रौ पूजारी रायसाब सू घाट को हौनी। बड़ी आव भगत करी। रायसाब दरसणा रै मिस मांय बड़ै तौ मूरत्यां कै म्हांरे नैड़ा ई मती आवौं !

रायसाब लाल-पीळा होय'र पूछियौ— सोनै-चांदी बाळी मूरत्या किठै गयी ?

पूजारी कयौ— मूरत्यां थानै-मुकानै पधारगी होवैला। रायसाब पूछियौ— क्या मुतलब ?

'मुतलब क्या ? भूखां मरत्यां भागगी।

'मूरत्यां ई कोई भाग सकै है, मनै चकमौ देवै है !'

'चकमौ किठै देऊं हूं सा। हूं तौ साफ कैवूं हूं कै मूरत्यां आप आपरां नै हुयगी।

'तनै पूजारी भख मारण नै राखियौ हो ?'

खावण नै तौ मनै ई जोयीजै'क नही ?'

'तौ सू मनै कैतौं ?'

'आपनै एक बार नही लाख बार अर री, आप कान ई नही ढ़ेरिया ?'

'जणै ?'

'जणै क्या ? मूरत्यां-देवत्तांवां री साथ मिंदर सूं भूखां

मरतौ उठग्यौ ?'

'काकर !'

'जाकर मिनखां री उठै है।'

'हूं थारौ मुतलब को समभियौ नी ? लाव, सोने-चादी वाळी मूरत्या ?'

पूजारी एक-दो मूरत्यां लाय देखाई। 'रायसाव कयौ—बाकी री किठे ? पूजारी वोलियौ—

सनै सनै उठ जायसी सै देवा री साथ,
रैसी देवी काठरी, बावौ भैरू नाथ !

रायसाब, पूजारी रै सामौ जोंवताई रैयग्या ! अर निसासा नाख'र बोलां-बोला घर रौ मारग लियौ !!

६६– इक्कैवा गै

बीकानेर सू कोलायत, कोई ३० मील आधी है। इण नै 'कपिल-तीरथ' कैवै है। वरस मै एक बार अठै मेळौ भरीजै है। मेळै मै एक लाख सू घणौ मानखौ ढूकै है। कैवै है अठैई श्री कपिल मुनी तपस्या कीवी ही। अठै एक विसाल तळाव है, जिणरा घाट पक्का बंधियोड़ा है। मेळैरै मौकै अठै मोकळी चैल-पैल रैवै है। मोकळी दुकान्या लागै है अर मोकळोई माल बिकै है।

तौ, हूं अर भाई छोटूलाल, अठै, म्हांरा पाप धोवणनै पूगा। घूमिया-फिरिया अर किया साधू-संतां रा दरसण।

सत्संग करी, अर करी पवित्तर सरोवर मै सिनान। श्री कपिल मुनी रा दरसण किया।

औ मेळौ, सियाळै मैं लागै है अर कौलायत मै, हाथ खिरै जिसी ठंड पड़ै है !

दो दिन तांई म्हां मेळै मैं दरसण-परसण री लाभ लियौ।

तीजै दिन, सिंझ्यानै ज्यौ ई, म्हे, पाछा जावण लागा तौ इत्ती भीड़– इत्ती भीड़ कै डब्बा मैं पग राखण नैई जागा नहीं।

माल रा डब्बा, जातरयां रै बैठण खातर जोड़णा पड़िया। भाड़ै री लोरयां घणी चाल रयी ही। पण तौई भीड़ री तौ अंत न पार।

भीड नै देख'र भै लागतौ हौ कै बीकानेर री ठेसरा पूगां कोई इक्कौ-तागौ मिळसी'क नहीं ?

म्हारा भाई छोटूलाल, पूरा मस्त मौला हा। खावण-पीवण ऊपर टिकता तौ छक्का छोडाय देवता ! अर बाता करण लागता तौ समत मिती लगावण रौ नाव ई को लेवता नी !

भेडा-बकरया दाई भरीजियोड़ा, राम-राम करता म्हे बीकानेर री ठेसण पूगा ! प्लेटफारम सू बार आया ! जरौ जी मै जी आयौ !!

मैं सवारी जोवण सारू निजर दौडाई। देखियौ लोग मूंडे मागियौ भाडौ देय'र सवारचा लेय'र उड रैया है।

इसै अवखै मौकै माथै ई म्हारा छोटू भाई, उठै ऊभोडै किणी भलै माणस सू बाता मै इसा अळूजिया कै मत पूछौ बात, नाव छोटू सरीर हौ मोटू अर बाताई मोटी ! अर मोटै समै ताई !

दोयै बतक्कड एक बीजै सू गूथीजग्या ! तरै तरै रै विसयां ऊपर, तरै तरै रै ढंग सू, चरचावा एकरसी सरू हुई, तौ, समाप्ति खानी कोई एक पग ई देवणौ चावै नही, जाणै, संसार री अटपटी समस्याओ नै सुळझावण री जिम्मैवारी, इणी दोया बात महारथिया रै मजबूत खाधा माथै होवै ! ठड मै, इयां 'मोटा' नै छोड'र किसौ सूरवो हौ जिकौ अक्यारथ उठै ऊभौ-ऊभौ आपरै पगा नै कस्ट देवतौ ! कैवण रौ मुतलव औ, कै, ठेसण ऊपर कोई को रैयौनी अर बैत ई सवारयां नै लेय'र न्यारी-न्यारी दिसावा मै चम्पत हुयग्या।

कैबत है– 'जे जांऊं गुजरात तौ करम छावणी साथरी साथ।' एक खूणै मैं, एक माडौ-मुड़दौ इक्कौ, मुडदै ठिगणै टट्टू री पीठ ऊपर मेलियोडौ ऊभौ हौ, जिकौ, आपरी ऊंबर रै दिना नै ओछा कर रैयौ हौ। खनैई इक्कैवान ऊभौ हौ, जिकै नै एक निजर सूं देखण सूं मालम पडती ही कै औई इक्कैरै अतकाळ तांई इयै संसार सूं कूच कर जासी। गिरिया सूं ऊंचौ-ऊंचौ पजामौ, पगै उभराणौ, फाटौ मेलौ गुंढ्यां बायरी बंडौ, छाती खुल्ली जिण माथै सपेती चमकै, माथै ऊपर तुरकी टोपी जिणरी नळी ऊंची उठियोड़ी पण छुरंगौ नदारद; ऊंवर होसी ६० सूं सात आठ साल ऊंची। पैरावै सूं, औ कोई पाकिस्तानिया रौ नातै-गिन्नै वाळौ लखाईजतौ हौ। बूढ़ौ तौ हौ; पण हौ कडकवाळौ।

भगवान री दया सूं, म्हारी घड़ी-घडी री कैवासुणी सूं जद, इयां, जीव-जोधावां री ध्यान भंग हुयौ, तौ, उण बेळा खासी रात हुयगी ही। अंधारै, आपरै सरीर नै घणौ पसार दियौ हौ।

मैं, इक्कैवान नै हेलौ पाड़ियौ। बौ, म्हारी खानी खाधौ-खाधौ आयौ। फौजी सिलाम की, मालम पड़ी बौ फौज री नौकरी कर चुकौ है।

मैं पूछियौ- ले चालसी भाई? बोल क्या भाड़ौ लेसी?

"बाबू साब थे बडा आदमी हौ। क्यों गरीब री मसकरी करौ हौ?"

"मसकरी कांयरी! म्हानै, साचैई सवारी री चायना है।'

'आ आप लोगां रै लायक सवारी कायनी।'

'क्यों क्या हुयौ ?'

'होवण नै कई को हुयौनी अर रेवण नै कंई रैयौ ई कोयनी !'

'अरे भाई, अळूजौ सुळ जावैनी ? ठंड रै मारियां मर रैया हा !'

'बात आ है कै औ खाली दीखतरी ईज इक्कौ हैं ।'

'जणांई तौ म्हां भाड़ौ पूछियौ है ? इक्कौ तौ इक्कौ ई दीखसी मोटर गाडी थोडै ई दीखसी !'

'नही साव मनै भरोसौ को पड़नी । थे, म्हे गरीब सू आळ कर रैया हौ ?'

'भला माणस, आळ को करानी । बतावैनी बेगौ, भाड़ौ ?'

'तो आप साचैई, आळ तौ को करौनी'क ?'

'जाबक नही ।'

'जणै मरजी मैं आवै सो दे दिया चाळणौ किठै सी है ?'
व्यासां रै चौक मै मनै, उतार'र इयां माता बावूसानै, मूधडा रै चौक मै पूगाय दैणा है ।'

'है तौ घणौ आघौ ।'

'जणै ई तौ, इक्कौ लेरया हा ।'

'चौखौ, बिराजौ ।'

'अरे भाड़ौ तौ ठैरायलै ?'

'क्या ठैराऊं ? थे खुसी-खुसी घरे पूगजासौ, जणै, हूं, भाड़ौ आयौ समझ लूला ।'

'भाई ! क्यौ अडबी रा लेखा घालै है ? म्हे, आठाना देसां । राजी है'क ?'

'राजी।'

भाड़ौ ठैराय'र, म्हे, इक्कै ऊपर जाय जमिया। जमिया तौ क्या, जाय अड़िया। चालू इक्का रै पड़छै, औ, छोटौ-रमतियै जिसौ लागतौ हौ! भाई छोटू रै बैठतै ई इक्करा ईंजर-पींजर चड़-चू-चड़-चू करण लागा! हूंई दोरो-सोरौ पसवाड़ै बैठग्यौ।

इक्कैवान, म्हारै बैठतांई, फट्ट देणी सी नीचै कूद पड़ियौ। टट्टू री रास नै कपड़'र आगै-आगै चालण लागौ।

म्हां मुळक'र एक बीजै रै सामौ जोयौ!

मैं पूछियौ-भला माणस! इक्कौ इण तरै टोरियौ जावै है? तू आगै बैठ जा अर घोड़ै नै खाथौ टोर।

इक्कैवाळौ बोलियौ-हजूर! घोड़ौ तीन जणां रौ भार को झाल सकैनी! है तौ लाई छोटौ सौ टट्टू इज कै!!

मैं कैयौ-चौखौ भाई! कंई तरै टोरेतौ सही। पूछियौ-म्हां बिस्तरौ तौ लारै राख दियौ है'क?

'हां बाबू! था थारै हाथां सूं ईज राखियौ है।'

'जरा ठैरतौ। अधारियैरी किवाड़ी ढक दूं।'

'किवाडी है किठै!

जणै, निगै राखै, बिस्तरौ पड़ नही जावै?

'हूं कांकर निगै राखूंला, बाबूसाब! हूं तौ आगै-आगै टुररयौ हूं!'

'ठीक भाई, भागरी बात! थोड़ौ टोरतौ खाथौ।'

'बाबू घोड़ौ मांदौ है, हौळै-हौळै ई चालसी।'

फेर, म्हां एक बीजै रै सामी जोयौ अर हंसिया ! ऊँ नैं कोटगेट भांयकर चालणौ हौ । अठै बजार लागै है । भीड़-भाड़ मोकळी रैवै है ।

म्हारी इण अनोखी सवारी नैं देखर ममकरा कद चूकण वाळा हा, बेई फेर सैंधामैंधा !

एक– नव दिना मैं अढाई कोस री चाल सूं थे कदास दो-तीन दिना मे तौ घरे पूगई जावौला !

बीजौ– अरे भाई ! औ इक्की है कन रमतियौ ! रंग है भायला ! खूब छाट-छूट'र इक्कौ लाया इणनैं अजबघर मैं ई क्यों भेजाय दौनी !!

चौथौ– जीवताई रौ सौखीना ! एक घट्टी भळै मेल लौ ! मण-डौढ मण आटौ परौ पीसीज जासी !!

पांचवौ– लाई अबोल जिनावर री तौ दया देखौ ! था दोया जित्तौ भार, इकै-घोडै दोया मैं ई कोयनी ! घोड़ौ लाई काकर चाल कपडै !

छठौ– धन-धन है थानैं जोवतराईरौ ! अै-है-है, क्या जी सौरौं करायौ है !

सातवौ– दयालु, थोडा सा ठैरौ कोयनी ? हू राई-लूण ले आऊं । कठै ई चाख नही लाग जावै !

भीड़ हा-हा-हा-ही-ही-ही करै अर छोरा ताळ्या पीटै !

अबै करा तौ क्या करा ! म्हारैई मनां मै, खुसी, हया अर झैंप री तिरबेणी पूरै बेग सूं बैरयौ ही !!

इत्तैई एक राम रौ पूरौ इसौ मिळियौ, जिकौ, म्हारै इक्कै रै आडौ ऊभ'र लेवण लागौ कैमरै सूं फोटू ।

म्हामै वीतती जिकी म्हे ई जाणता हा ! सरम रै मारिया मर रया हा !!

राम राम करतां जद इयां चंडूळां सू पिडौ छूटौ तौ जी में जी आयौ ।

पण 'हनौज दिल्ली दूरस्त ।' हाल तौ रुपये मै बारांना मारग तै करणौ बाकी हौ ।

टट्टूराम आपरी टपटपी चाल मैं सुधार करणी ना जाण तौ हौ अर ना चावतौ हौ !

घणी लम्बी टेम सूं, म्हे, घर रै नैड़ा पूगा । अठै, दो रस्ता फटता हा- एक व्यासा रै चौक खानी अर बीजौ सतनारायणजी रै मिन्दर आगकर होयर मूंधडा खानी !

छोटू भाई उफत'र मनै कैयौ-हूं तौ बिस्तरौ लेयर चालू हूं मूधड़ा खानी । थे इणनै व्यासां रै चौक मै ले जावौ ।

वे नीचै उतरिया अर बिस्तरौ सम्भाळै तौ आगै बिस्तरौ कैवै म्हारै नैड़ाई मती आवौ !

छोटू भाई इक्कैवाळै नै घसकायौ म्हारौ बिस्तरौ किठै ?

इक्कैवाळै उथळौ दियौ-हजूर ! मनै क्या ठा ? हूं तौ आगै-आगै चाल रैयौ हौ ?

म्हे एक बीजै रै सामौ जोंवताई रैयग्या ! म्हांरै मनां रै भावां रौ अणभौ, वेई कर सकै है, जिका मैं इसी बीती हुवै ।

म्हे, दोय जणा, उठै ई उतरग्या। इक्कैवाळै नै ठीक ठिकाणै ले जावण रै लोभ नै जावक छोड'र, म्हा, वैनै, उठई पइसा देय'र लारो छोडायो।

अवै, म्हे, बिस्तरै री खोज मैं पाछा टुरिया। भाग सूँ बीस ही पावडा गया होसा कै दोय भला माणस मिळिया। बतायौ कै एक बिस्तरी किणीरी पड्यौ है। मुकन्दमाराज उणनै आपरी दूकान मैं सभाळ'र राखियौ है। काल, वे, पतौ लगासी कै कैरो है।

आधै नै क्या जोयी— जैसा दोय आख्या। म्हे, उठै ई पूगा। पतौ पडियौ कै, बिस्तरी सेठ देवकिसन दम्माणी मुकन्दमाराजरी दूकान सूं आ कंय'र लेय ग्या है, कै कोई पूछण आवै तो बानै म्हारी हवेली भेज देवै।

रात घणी हुयगी ही। म्हा, बिस्तरै नै ठावी ठौड़ पड़ियौ जाण'र चिता सू लारो छोडायो।

---
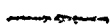
७ – *'कसा' रोग

घणा वरसा री बात है। म्हांरा गुरुपुरोयतजी राजाजी रै घणै मरजीदाना मै हा। बांरै खनै ई बैठता अर बांरौ भी थोई काम करता।

जोखम–जिम्मैवारी रौ काम पुरोयतजी नै भोळायीज तौ। पुरोयतजी दाना, सैणा, सामखोर, धरमात्मा अर हैंसाब-किताब मैं टवा नावासिधौ हा।

सगळां सू निसकपट बौवार राखता। बातां ई बातां मै रोंवता नै हसाय देवता! हंसता न मुळकता अर इसी हौळै सी सिरकांवता जिकौ सुणनियां रौ हंसतै-हंसतै पेट दूखण लाग ंवतौ!

टळता कोहानी बडां-बडां सूं। बेई,चाव सूं पुरोयतजी नै काम जांवतां नै, दस-पाच मिन्ट तौ रोक ई लेंवता!

कई दिनां सूं आपरी तबियत ई गिचर-पिचर रैवण सूं, आप कंई कसै उतरग्या!

एक दिन राजाजीरै ध्यान मैं आ बात आयी। पूछियौ– पुरोयतजी! कियां सरीर सूं माड़ा लागौ हौ? सरीर तौ थां रौ, मनै घणौ थकियोड़ौ दीखै है? बात क्या है?

'बात कई कायनी अन्नदाता! धणियां री मैरबान……

---

* कासा

'आ म्हारी मैरबानगी दीखै है नी, कै थे दिन-दिन थकता जावौ हौ ! बतावौ क्योंनी क्या तकलीफ है ?

'अनदाता री किरपा सूं.....

थे इयां बतावौ कोयनी । कय'र अनदाता बडै डागदर रै नाव जरूरी हुकम लिखियौ कै पुरोयतजी री सागोपांग जाच कर'र रपोट देवै ।

डाक्टर हुकम पाय'र खाथौ-खाथौ पुरोयतजी खनै आयौ पूछियौ-क्या पुरोयतजी ! कैसा ताबियत हय ?

'चौत आछी !'

'हजूर साहब आपको बेमार बोलता है । जाचने को बोलता हय ।'

'तो जांचलौ साब ।'

'अन्दर कमरे मे चलना है, यहा नयी ।'

दोनू जणा कमरै मै गया । डागदर पुरोयतजी नै ओघाडा कर'र खूब चोखी तरै सूं जाच करी । फेफडा देखिया, लीवर-तिल्ली देखी । थरमा-मीटर लगायौ । सास गिणिया । अर जीब देखी । कंई खोट-खबाड़ दीखी कोयनी ।

जणै पुरोयतजी ने कैयौ- हमारे को कोई गड़बड़ नयी लगता । तुम बोलो, क्या तकलीफ हय ?'

'चीत बडौ रोग है ।'

'हैं ! बौत बडा ! कैसा ? नयी देखता ।'

'हम तौ देखता साब ?'

'तौं बोलौ न, बावा ? हम उमदा दवा देगा ।'

'रोग आपरै समझ में को आवेनी ?'

'हम नयी समजेगा ? कैसा बोलता है, प्रोत बाबा ?'

हम विलायत पास है । हम बड़ा मैनत किया ।

'रोग बिलायती कोयनी । हिंदुस्तानी है ।'

'हो-हो ! जोक[1] करता है प्रोयतजी ?'

'बोलो, बाबा ! कैसा रोग हय ?'

' 'कांसा रोग' है ?'

' 'कसा रोग', हम नयी सुना !'

'बी महारोग है ।'

'हैं ! क्या सिमटम[2] है ?'

'सुस्ती, बेचैनी, उदासी अर कमजोरी ।'

'तुमारा हाजमा ठीक है, दिल ठीक है, फिर कैसा रोग ! 'कसा रोग—कसा रोग', ये कौन नया रोग !! हम नयी सुना ?

'इवैरी पेटैंट दवा है ।'

'पेटैन्ट !'

१- जोक (Joke)=हंसी, ।

२- सिमटम (अंग्रेजी शब्द)=लक्षण ।

'ओर हम नयी जानता !!'

'नही ?'

'किधर मिलता है ?'

'राजाजी के पास ।'

'हमको हजूर कभी नयी बोला ?'

'छिपाय'र सेफ में राखै है ।'

प्रोयतजी सू, डागदर लाई घणी ई मगजमारी कीवी पण कई आथ-न-साथ ।

जद डागदरसाब हैरान होय'र ऊचबै भरीज'र सीधौ राजाजी खनै पूगौ । बानै सगळी बाता कैयी । कयौ– प्रोयत, बडा[२] स्ट्रेंज आदमी है ।

राजाजी प्रोयतजी नै बुलवाया । पूछियौ– था डागदर-साब नै काई अळूजाळ मै नाख दिया ? लाई परदेसी पछी सू ई मसकरी करण मै को चूकौ नी ?

'नही अनदाता, मै तौ साची-साची कैयी ।'

'वे कैवै है– था 'कसा रोग' बतायौ ?'

'हा अनदाता ?'

' 'कसा रोग' काई ?'

' 'कांसा रोग' ।'

'इणरी पेटैन्ट दवा किठै मिळै ?'

२- स्ट्रेंज (Strange)=अद्भुत

'आपरी तिजोरी मैं ।'

राजाजी खूब हंसिया ! फरमायौ– प्रोयतजी ! डागदर नैं आछौ मूरख वणायौ ! साचैंई, इणरी रोग री दवा, बै लाई खनें कायनी !!

बीजे ई दिन अनदाता हुकम बगसायौ कै पुरोयतजी नै एक हजार रुपिया इनाम मैं दे दिया जावैं, वौत बैगा ।

इण तरै प्रोयतजी रै 'कसा रोग' (कासा रोग) रौ खरौ अर ठूकतौ इलाज हुयौ अर बै सरीर मैं घिरण लागग्या ।

७१- बरताव

मसकरा, मसकराई हुवे है। आप खुसी रेवै'र वीजा नेई खुसी करै। बे मनूपी नै तौ नेडी ई को भिडण देवैनी। हरदम खुसी रैवरण सू सरीर अर मन ऊपर ई आछौ परभाव पडे।

थासू-म्हासू पाडै-पाडोसी सूं, मिळण-भेटणिया सू, सगळां सू मीठा बणिया रेवै आपरै मसकरै सभाव रै कारण बारै तौ कोई हाथ खरच नै जोयीजै ई। लोक नही मिळै तौ घरवाळाई सही। अठै ताई कै बेटा सू ई मसकरी करण मै को चूकै नी! मजाक इसी निरदोस करै कै कैवरणियौ-सुणनियौ, दोनू राजी हुवै। आपरौ अर बीजै री, दोना रौ, खूद वधावै।

सैरणा रौ मत है कै हजार दवा री एक दवा आ है कै मिनख हंसतौ रैवै, हसावतौ रैवै। इया करण सू सरीर अर मन रौ चोखो विकास होवै। हाजमा आछौ रेवै। पछै दवाई तौ औईज काम करै है, के बीजौ?

तौ म्हारा गोपालरामजी इसाई मसकरा हा। मसकरी जाणियै-अणजाणियै सू बेवताई कर लेवता।

एक बार म्हे वासू मिळरण नै गया, घणा दिन मिळया नै हुयग्या हा। आप म्हानै कई सुस्त लागा।

मैं पूछियौ-पुरोयनजी, आप'र सुस्त! आ बात तौ भाठै सूं भागण जिसी है!

आप कैयौ- आज कई इसी ई बात है। जी सोरौ कोयनी!

मैं कैयौ- थे तौ बीजा रौ ई जीसोरौ कराय दौ जिकौ खुदरी तौ बात ई क्या?

जणै हसियै–मुळकियै बिना बोलिया– बात आ है कै एक तौ जीमियै बिना जी सोरौ कोरैवैनी । दूसरौ टाट मै टकां बिना जी सोरौ को रैवैनी । तीसरौ चाय पीया बिना जी सोरौ को रैवैनी ।

मै कंयौ– जणै ऊंधौ गिणौ-चाय नै लंबर एक समझौ । कैयौ आई सोच रयौ हौ कै कोई पधारे । चाय साथियां रै सागै बिना आछी को लागै नी । पण ………… ..

'पण क्या ?'

'पण आ कै म्हांरा कंवरसाब घणा भणियोड़ा अर पत्रकार है । बीजां सूं घणौ सिस्टाचार बरतै है ।'

'इयां तौ वाजबी ई है ।'

'तौ थानै वाजबी रौ नमूनौ देखावां ?'

म्हानै चुप बठा देख'र आप हेलौ पाड़ियौ– अरे बेटा ! चाय-वाय पासौ कै कांकर ?

'हुकम हाजर करूं हूं सा ।'

'आज हाजरी च्यार जणां री भरणी है– च्यार कप समझियो'क ?'

'हुकम, च्यार लौ । अबार लायौ ।'

उडीक ई उडीक मैं पंदरै मिनट पूरा हुयग्या । जणै, भळै हेलौ पाडियौ– चाय त्यार हुयगी होवैला, बेटा !

उथळौ आयौ– हां सा । हुकम । लायौ ई ।'

भळै दस-पंदरै मिट बीतग्या । म्हे बांरी बातां मैं रस लेय रया हा अर हंस रैया हा । इत्तै ई मै आप कैयौ– क्यों मैं कूड़ी तौ का कैयी नी– घणी सिस्टाचार वाळी बात ? चाय-

वाय तौ आसी जणै आसी पण 'हुकम हाजर करूं सा' मैं तौ कसर का पडै नी।

तीजौ हेलौ पाड़तै-पाडतै पत्रकार साव चाय री किस्ती ले आया।

म्हे'र आप दोनू हसिया! पत्रकार लजखाणौ पड़'र बोलियौ– कई क मोडौ तौ ..

आप बीच ई मैं हंस'र कैयौ– 'हुकम हाजर करूं सा' मैं तौ फरक को पडियौनी'क। चाय तौ लायण आपरी चाल सू ई आवै! आपा रै ऊतावळ किया क्या बात बणै!!

पत्रकार कैयौ– मोडौ तौ हुयग्यौ, गलती हुई। अर चला गया।

चाय पीय'र निवटिया ई हा कै एक पंदरे-सोळै वरसां रै छोरै-छोरै नही सामी, कैयौ– बाबा! कोई छोटा-मोटा सतौ कू वरतण तौ दे रे?

औ छोरौ कोळी भगतिया रौ हौ। अै लोक– बडा-छोटा, दिनूगै ई, सैर मैं उछर जावै अर छाटै 'हम-तम'। देसी गवा अर पूरबी चाल। जाणै लाई हणै ई दिल्ली, आगरै सूं आया हुवै। इसै मागीवाड़ै मैं ई अै तौ बीजां री छाती माथै मूग दळै। टकौ लागै न पइसौ, अै आपरौ पूरौ पेट भर'र, आटै-रोट्या सू झोळी घरै भर'र ले जावै।

आप छोरै नै कैयौ– ठैर, संता नै छोटौ-मोटौ कांकर दा, पाप को लागैनी? थानै, संता, बडौ जूर बरतण देसू जिकौ थे ई क्या याद राखसौ! पण थोडौ-सौ ठैरणौ पड़सी। कपड़ा पैरू जित्तीई देरी है। पछै आपा सगळै सागैई टुरसा।

'अरे बाबा ! हम मे मसकरी मती करो ।'

'अरे संत, ठट्ठा मरग्या क्या जिको मसकरी करा ।'

'क्या कया बाबा ?'

ठैर चालाई हा । थारौ सवाल तौ पूरौ करणौ ई पड़सी । तौ म्हे सगळै सागै ई टुरिया । संत ई सागै ।

घेरूलालजी रै कूवै खनै जसोळाई तळाई है । जाबक भागोड़ी, अर कूड़ै-करकट सू भरियोडी । बैरै, एक खूणै मैं, एक बडौ जूर तळौ छंटियोडौ कडाव । उधौ मारियोड़ौ हौ । कोई बैरौ धणी हौ न धोरी ।

आप हंसियः ना मुळकिया अर संत नै कैयौ–संत बाबा ! उठा लेजा औ बडौ जूर बरतण । जा मै तनै दियौ । बडी चीज रौ बडौ पुन । औ, थारै, सौ बरतण रौ काम सारसी ।

'अरे बाबा मेरे से हसी .....

'रांडरा, आ हंसी है ! कूड़ थोड़ै ई कैवू हूं ! उठा लेजा हणै रौ हणै ।'

'अरे बाबा ....

'रो बाबै नै ! नही ले जावै तौ भागजा । तै छोटौ बरतण मागियौ, हूं वडौ जूर दे रयौ हूं तौ ई लेवै कोयनी । कोरी, राड रौ 'हम-तम', छांटै है ।

छोरौ तौ बापडौ सरमा मरतौ तेतौ एका देयग्यौ अर म्हे सगळै टी-टी हंसता घरै आया !!

७२– मिरतु-टैक्स

'हरियौ अर दडियो आपरै नांव सू ओळखीजता हा। भोर मै, जद, आ जोडी भाग री आराधना मे, बगेची खानी छिटकती तौ सैना सू आगळी उठाय'र देखणिया हौळे-हौळै कैवता– 'राम मिळायो जोडो एक काणो एक खोडौ', 'बाई बत्तीसी तौ बीरौ छत्तीसौ', 'एक राम सू मिळियोडौ तौ बीजौ सूरज रै बारकर फिरयोडौ'। दोये हा एक बीजै रा सिर-खावणा– एक बीजै रै माथै वाधण जोगा। दोना मे कोई किणी सू घाट को हौ नी। दोनू ई, पूरा चट, चलाक, लफगा अर निठोडा हा; खावण नै चोखौ चायीजतौ कमावता फूटी कौडी ई को हा नी।

हरियै रै दादै खनै कईक पुडिया ही, अर, घर मै औ एक ई, कुळ रौ चानणौ-पोतौ हौ !

दडियौ ननाणै रैवतौ हौ। नानै-मामै रै लाड रै कारण कोई बैनै कई कैवतौ को हौनी। मा-बाप बायरौ हौ। इयैरै जिलम रै पाच महीना छेडै बाप सरग सिधारग्यौ हौ। मा नै, इयै, सात साल री टाबर औस्था मै ई परलोक भेजदी ही। हा इत्ती जरूर ही कै ननाणै वाळा आसूधा हा अर इयै नै बठै दोनू टैम खावण-पीवण री पूरी छूट ही।

दोनू आपरै पाळणा-पोसणिया री छातया माथै मूग दळता हा। चोखौ खावता, चोखौ पैरता अर दिन-भर पड़िया छुड़िया खुचरता फिरता।

नसौ तौ, इणा नै, चढियौ ई रैवतौ हौ। भोर नै कागाबासी छाणता, दुपारै टोकी री जात अर सिज्य गागडदा। मिठाई री दुकानवाळा सू ओधार– घाट माल उडावता अर दाम मडा देवता पाळणिया रै माथै। दुकान वाळा इयांरी गुंडाई सू भै खावता। अर कई आ सोच'र कै घरवाळा नै तगादौ करण सू पइसा तौ पल्लै पड़जासी, इयारा घमीड़ सैवता हा।

भोर मैं कागावासी छणती अर रंग जमता। भाग-भवानी री अस्तूती अर फळ पाठ होवता–

१- सिला-लोढी करै सिनान रिध्धी सिध्धी देवै भगवान।

२- पी रे पी नहीं निकळ जासी जी भळै कूण कैवै ला पी।

३- जिण नही पी भाग री कळी उण छोरै सू छोरी भली।

४- (धनवाना नै सुणाय'र)
मार कूचा कदै न आवै ऊंचा।

५- लाल बही छप्पन रै पानै
सेठजी रोवै छानै-छानै।

६- चिडी ई पीवै तौ झपट मारै बाज नै।

७- भाग पीवण मै यह नफा
अखिया लाल अर दिल सफा।

८- भांग कैवै सो बावळौ
विजिया कैवै सो सूर
इण रौ नाव कमळावती
राखै नैण मदपूर।

९- आवौ सता पीवौ प्याला
पापी पाखंडी रा मू काळा ।
१०- तू थारे नै पाल, म्हानै तौ पिया ई सरै ।
११- आव हरी-भरी गुण करी
भेज छप्पन किरोड री चौथाई, सकर बावा ।
१२- प्याला पीवौ प्रेम सू
दुनिया सू री दूर
घर रा जाणौ मरगयौ
आप नसै मै चूर।
१३- कागावासी घणी हुलासी
दुपारै फेर पिया करौ
जे सुख चावौ जीव रौ
सिज्या नै भळै पिया करौ ।

फेर मंडळी सागे ई निमटण नै जावता । हाथ, लोटौ मांजता बेळा सगळै आप-आपरी तरगा एक बीजै नै सुणावता । पछै सिनान-सपाडा कर'र, मादेवजी ऊपर लोटौ पाणी ढाळ चनण समरपण कर'र गैरी गुलाबी आख्या सू तरी लेवता घरै पूगता । जित्तै ताई १०-१०॥ री टैम हुय जावती । फेर डट'र जीमता अर लगावता सुख सू लेट ।

दुपारै सू सिज्या ताई बगेची मै रैवता दोय वार भळै छणती । पछै जीमिया अर सूया ।

जद कोई भली चार्वाणयौ इणा नै कमावण-खावण री सीख देवतौ तौ अै फट ई उथळौ दे देवता— कुणै कमावण नै जावा । टैम ई तौ का लाधै नी ?

कोई पूछ तौ– इयां कित्ताक दिन चालसी ? छेकड़ तौ हाथ-पग हिलावणा पड़सी ? छोटी-मोटी काई नोकरी ई लाग जावौ ?

उथळौ देवता– नोकरी करां करां ? अर फेर नोकरी है ई तो खोटी । नोकरी सू टका थोडे ई जुडै है ? इरिणया-गिरिणया रुपया मिळै ? जद ई सायर कयग्या है– नोकरी न करी अर 'नोकरी न कीजे यार घास खोद खाइये, और खोदै आस-पास तौ आप दूर जाइये ।'

जी दोरौ करणिया, लाई बोला रै जांवता !

वरसा ताई, इणा री काम इणी तरै सुख-सुतंतरता सू चलतौ रयौ ।

छेकड, दड़िया माराज री नानौ अर हरिया माराज री दादी परलोक री मारग लियौ । अबै पैला जिसी जुगत का रयीनी । घोड़ै रै दाणै मैं जद कांकरौ आवै है तद बैरी आख्यां खुलै है ।

दड़िया माराज रै मामै तंग आय'र इयै नै घर सू घत्ता बताय दिया ।

हरिया माराज, दादी री बंचियोडी थोडी पूंजी नै थोड़ै समै में ई, थोड़ी-थोडी ठूगार मै ई पूरी करदी ।

अबै दोनू ई बणग्या– ठन ठन पाळ-मदनगोपाळ ।

एक दिन दोनू भायला भांग री तरंग मै घंटा तांई आगै क्या करणौ जोयीजै इण बात नै सोचता रया । निकमा बैठां सूं हाड हराम होयग्या हा । पण भूख तौ कई री सगी कायनी ? वा तौ दोनू टैम लागै ई ?

जद घणी सोच-विचार करण रे बाद ई कोई उपाव का सूजियौ नी तौ दौये एक बीजे रै मूडै मामां जोवण लागा।

इत्तै ई दडिया माराज नै एक ग्रटकळ उपजी। वौ बोलियो– भायला! जैपुर हालो। वडौ सैर है, नौ वडो ई पोल लाधसी। ग्रापा ई धस जासा। इया करा कै रेलबाईवाळा रा जवाई वण र चाला। जाणा हा, टिगस, पैला तौ कोई साळौ मागै ई कौयनी, जे कोइ मागसी तौ तिकडमवाजी सू बैनै उल्लू बणाय'र पार हुय जासा। ग्रापा इत्ती ई को कर सका नी क्या!

हरिया माराज वेरै मगरा मै थापी दी ग्रर कयौ– ग्रौ तौ ग्रापारै डावै हाथ रौ खेल है!

दडियौ वोलियौ– काल ई टुर वयीर हुवा। ग्रापा रै क्या लदनौ-पदनौ है?

हरियै कयौ– चालसा तौ परा, पण, उठै करस्या क्या? उठै कूण ग्रापारौ है? परायौ धरतो है। कई सू जाणचीण ई कायनी जिकौ उठै जाय उतरा?

दडियौ थोडी ताळ ताई विचार मै पडग्यौ। फेर वै री ग्राख्या चमक उठी ग्रर बौ वोलियौ– लै, वधिया उपाव ई सूभग्यौ है! ग्रबै तौ पूगण री देरी है पछै तौ पौवारै है!

हरियै पूछियौ– कई बताव तौ खरी?

दडियै कैयौ– देख, तनै याद है नी कै म्हारा नानाजी सास खाच'र ध्यान मै वैठा करता हा? हू ई बा री नकल किया करतौ हौ। हू ई सास खाचणौ जाणू हू। तौ ग्रापा पाधराई बजार पूगसा। हिन्दुवा मै दया-मया रौ तौ घाटौ

कोई नी। हूं सांस खांच'र पड़ जासू। तू रोवण-कूकण लागे। लोग बाग भेळा हुय जाय जणै तू सगळां नै सुणाय-सुणाय'र कैये– लाई रौ दाग करनौ है। पांच-सात बामण नै ई जीमावणा है। थे हिन्दु हौ, दयावाळा हौ, धरमात्मा हौ! थारै रैवतै थकां इयै बामण री लास नै मुनसपाळटी या पोलस वाळां नहीं छुवै। म्हारै खनै फूटी कौडी ई कायनी। हूं लाचार हू। खनै होंवतौ तौ हूं आपनै क्यौ बेनती करतौ।

इया करण सू दुकानदार लोग चिदौ कर'र चोखी रकम तनै सौंप देसी। जणै तू थोडी दूर 'रामनाम सत है– सत ज्यू मुगत है' कैवतौ अर रोवतौ म्हारी सीडी नै ले चालै। पछै मसाणां मै पूग'र काढ़ लियै। इण तरै १००) १५०) सौ रुपया लेय'र आपां चल धरसां। अै खाय खूटासा पछै बीजी अटकळ सोचसां।

हरियै रै दड़ियै री बात हाडो हाड बैठगी।

अबै क्या हौ– 'शुभस्य शीघ्रम्।' बीजै ई दिन लौ दोयै बयीर हुयग्या, रेलवाई वाळां रा जंवाई बण'र।

जद कोई टिगस चैक करणनै आवतौ तौ अै दोनू डब्बै रै जातरियां नै हाथ-पग जोड'र, आपनै गरीब-दुखी बताय'र पायखानै मै लुक जावता। अर टिगस-चैकर रै गयां पछै बारै निकळ आवता। खिड़की मांय सू, कागलै दाई सावचेत रैय'र रेलवाई रै बाबूवारी कारवाई देखता रैवता।

छेकड़ अे भाग सू जैपुर रै बजार में [illegible] ।

दड़ियौ हस'र बोलियौ— अठै [illegible] [illegible] [illegible] बणजासी । 'सूळी' नरग में हुवै है तौ अठै '[illegible]' [illegible] । 'चौपट' बजार है । किठैई छोटी-छोटी गळियां [illegible] [illegible] है तौ अठै 'गळतौ' है । किठैई एकाध जागा '[illegible]' हुवै है [illegible] अठै जिठै देखौ उठै 'पोळ' ई 'पोळ' दीसै है ।

दोये भायला हसिया अर बवता गया ।

इत्तै ई में, अचाणचक सासा खाय'र दड़ियौ, [illegible] [illegible] दूकान रै आगै धडण दैणीसी जाय पड़ियौ । लोगां री भीड़ लागगी ।

हरियौ— बोकाडा पसार'र कैवण लागौ— अरे ! म्हारै साथी रै क्या हुयग्यौ ! अठै परदेस धरती में म्हारौ कुण बेली है ! (माथौ पीट'र) हाय ! भगवान, मनै गरीब नै [illegible] किसौ दुख दियौ ! लाई बामण सरीर है । किठैई [illegible] दुरगती नही हुवै । अरे अबै हू कैने हेलौ पाडू रे । अठै कुण म्हारौ आपरौ बैठौ है । म्हारै खनै तौ पाई-छदाम ई कायनी । इयैरी लास री काकर सुधारौ करूं । क्या करूं ? किठै जाऊं ? हाय रे, भायला ! तै कुवेळा मै, अणसेंधी जागा, आछौ दगौ दियौ, बीरा ! अरे मनै ई सागै ले चाल रे ! हाय ! म्हारौ हीयौ फूटरचौ है रे ! अरे ! कोई तौ दया विचारौ रे ! हाय ! भायला—हाय ! भायला ! अरे थारा हसा किठै उड़ग्या रे !

रोवा-कूकौ सुण'र खनै-खनै री दुकानांवाळा भेळा हुयग्या। हरियै नै पूछण लागा– क्या हुयौ भाई ? एकाएक कांकर मरग्यौ ?

हरियौ– क्या बताऊं भाई ? म्हे तौ आजई आया हा। एकाएक औ धड़ण देणी सी जाग्र पड़ियौ अर पड़तै ई हंसा उड़ग्या।

एक– क्या मिरगी आंवती ही ?

बीजौ– हाटफैल हुयग्यौ होवैला ?

तीजौ– मरण मैं किसा गाडा जूतै है ?

चौथौ– भगवान री माया लखणी मैं को आवैनी ?

पांचवौ– लाई जवान छोरौ है, दुनियां में क्या देखियौ है ?

छठौ– भगवान मंगळ ई करै है।

सातवौ– औ मगळ है कन अमंगळ ?

आठवौ– अरे भाई क्यों भौड करौ हौ ? भगवान क्या करै इयै री ऊंबर ई इत्ती ही। जणै अमंगळ कायरौ ?

सातवौ– आ थारी समझ थां तांई ई राखौ।

नवौ– जावण दौ नी यार, फजूल री दातापीसी। बणै तौ, कंई मदत ई करौनी ?

दसवौं– पैंला थे तौ श्रीगणेस करौ ?

नवौ– तौ लै भाई, रो मत । ग्रे ५) रुपिया किरिया-करम सारु देऊ हू ।

इग्यारवौं– इयैं सू क्या होसी ? दुकान वाळा नैं चिदौं कर'र १००) १५०) भेळा कर देवणा जोयीजै ।

सगळै दूकानवाळा भेळा हुया । सला-सूत कर'र चिदौं माडियौ । वात री वात मैं १५०) भेळा हुयग्या ।

वाम ग्राया । मीडी वाधीजी । तपेली मैं घी मंगायौ । कफण मंगायौ । समसाण लेजावण री त्यारी हुई । भीड माय सू तीन जणा खाविया वणग्या ।

'राम-राम सत है– सत ज्यू मुगत है' बोलता-बोलता सगळै मसाणा खानी टुरिया ।

दूकानदारा माय सू दोय जणा डौढ-सैणा । वांनै कई वैम पडग्यो । पिरगट करें तो जनता री विरोध सैवै ग्रर 'पापी' वजै ।

वै ई, भेद जागान सारू, न्यारै मैं टुरग्या ।

सगळै समसाण पूगा । काठ मगायौ ।

मुरदै नै काठ माथै नाखियौ । उठैई नहवायौ, गोपी-चनण रा द्वादस तिलक किया । लापौ लगा ई रया हा कै पोलिस रै सिपाई वरज'र कयौ– नहीं, ठैरौ । ग्रफसर साब री मनायी है ।

सगळै रा सगळै घबरायग्या ! आ किसी अण होणी बाधा !

इत्तै मैं, कोट, पेंतलून, टोप अर नकटाई लगायां, हाथ मैं छड़ी लियां अफसर आई ऊभा ।

पूछियौ– कैरौ मुड़दौ है ?

हरियौ– म्हारौ है साब ! म्हारौ भायलौ हौ ।'

अफसर– तूं के जातियौ है भाई ?

हरियौ– बामण ।

अफसर– मरणवाळौ ?

हरियौ– औ ई बामण सरीर है ।

अफसर– इण खनै क्या हौ, बता तौ ?

हरियौ– नौनारायण री देह ।

अफसर– थारै खनै ?

हरियौ– म्हारी काया ।

अफसर– जणै, काठ-कफण रौ जुगाड कांकर हुयौ ?

हरियौ– हजूर ! बजारवाळां चिंदौ कियौ है ।

अफसर– कित्ता'क रुपिया भेळा हुयग्या ?

हरियौ– किरिया-करम जुगता ।

अफसर– रुपिया कित्ता ?

न्यारै आवणियां मांय सूं एक– रुपिया होवण नै पड़िया है । दाह सैंसकार चिंदै सूं परौ य जासी ।

अफसर– तू कूण है ? मुड़दै री नाती-गोती है ?

मिनख– नही सा ! हू तौ अठै री ई हूं। हिदू जाण'र न्यारै मैं सामल हुयग्यौ।

अफसर– जणै तू क्यौ बीच मैं बोलै है ? जाणै है, गिरफ्तार कर लियौ जावैलौ !

आदमी– अच्छा बाबा, माफ करौ ?

अफसर– हां तौ भाई, कित्ता रुपिया भेळा हुया ?

सगळै चुप। अफसर गरम होय'र कयो– सब को गिरफ्तार करलो।

डौढसैणौ– क्यो, क्या कसूर कियौ है ?

अफसर– कानून छाटै है ! जाणै कोयनी अठै मिरतु-टैक्स देवणौ पड़ैला ?

डौढ़सैणौ– औ तौ परदेसी है अर खनै ई कई कोयनी। म्हा लोगा चिदौ कर'र दाह सैसकार रौ बंदोबस्त कियौ है।

अफसर– (पग पीट'र) चुप रहो ! बतावौ चन्दे से कित्ता रुपिया भेळा हुया ?

डौढसैणौ– अै ई कोई डौढ़ेक सौ रै आसरै।

अफसर– लावौ, धरौ सामनै। पेला राज रौ टैक्स वसूल होसी।

हरियौ– कित्तौ ?

अफसर– १००) १२५) रुपिया !

सुणतै ई हरियौ– भू-भू रोवण लागौ। बोलियौ– अरे दाह संसकार ई को होवण देवैनी। रुपिया चिदै रा है, म्हारा अर मरणियै रा तौ कोयनी।

अफसर साब गरम होय'र कयौ– बाता घणी आवै है तनै, छोरा! मनै जाणै है'क, हणै ननाणै पूगाय दूला ?

हरियौ रोवतौ बोलियौ– हाय रे भायला थारी दुरगती, अरे मनै ई सार्ग ले चाल रे! अरे औ किसौ टैक्स रे। अरे! क्या हूं तनै अठै ई छोड जाऊला रे! अरे! कैरै भरोसै छोडूं रे! अरे तू मरियौईज क्यौ रे!

इयां जोर सू रोंवतौ अर माथौ पीटतौ वौ मुडदै खनै गयौ। कैवण लागौ– सुणलै, मै थारै वास्ता क्या को कियौनी चिदौ कराय'र थारौ दाह संसकार करण आयौ। अरे औ निरदयी अफसर तनै बाळण ई को देवैनी! अरे! थारी आतमा तौ सुणै ई है। हाय! तू अठै क्यों मरियौ रे !!

इत्तै मै ई तौ, खफण सू फक्क दैणीसी मूडौ काढ'र मुड़दौ ऊंडी आवाज मै बोलियौ– 'तौ हूं अठै मरूं ई कोयनी– हूं अठै मरूं ई कोयनी' हूं अठै मरूं ई कोयनी।

अफसर छड़ी छोड'र थूक मुठ्या मै जी लेय'र नाठौ !

लारला ई वै जाय। केवता गया— भूत हुयग्यो, भूत हुयग्यो ! खाय जासी रे !! डीढसैणी ई डर रे मारियो इसा नाठीया— इसा नाठीया जाणै सिसियै रै सिर सू सीग।

हरियै, चक्क सू, भायलै रा वंधन काटिया अर दोयेजणा अणजाणा दिसा मैं, रुपया लेय'र नव दो इग्यारै व्हुयया।